हिन्दी दैनिक
प्रत्यूष नवबिहार
जोहार
रांची संस्करण
www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com
रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित
रांची ● मंगलवार ● 06.08.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 18 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

विवादों में घिरे कारा मंत्री अखिल गिरि ने दिया इस्तीफा

कोलकाता : वन विभाग की एक महिला अधिकारी के प्रति अपमानजनक टिप्पणी करने के मामले में राज्य के कारा मंत्री अखिल गिरि ने आखिरकार अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है। सोमवार को उन्होंने अपना इस्तीफा राज्य के मुख्य सचिव को व्हाट्सएप के जरिए भेजा। विवाद बढ़ने के बाद तृणमूल कांग्रेस ने अखिल गिरि से मंत्री पद से इस्तीफा देने को कहा था। अखिल ने कहा था कि वे सोमवार को विधानसभा में इस्तीफा देंगे। सोमवार सुबह कांथी से कोलकाता आकर विधानसभा भवन में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को इस्तीफा पत्र सौंपने की उनकी योजना थी लेकिन राज्य प्रशासन की तरफ से उन्हें निर्देश दिया गया कि वे अपना इस्तीफा मुख्य सचिव को व्हाट्सएप पर भेजें। अखिल ने वैसा ही किया, जिससे यह साफ हो गया कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी उनके साथ आमने-सामने मिलना भी नहीं चाहतीं। सोमवार सुबह एमएलए हॉस्टल से निकलते समय अखिल गिरि अपनी गाड़ी का रुख मोड़ कर वापस लौट आए। वहीं से उन्होंने इस्तीफे की तस्वीर खींच कर राज्य के मुख्य सचिव के कार्यालय में भेज दी। इस्तीफा भेजने के बाद अखिल ने कहा कि वे विधानसभा जाएंगे लेकिन मुख्यमंत्री से मुलाकात नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि वे वन विभाग के खिलाफ अपनी शिकायतें लिखित रूप में मुख्यमंत्री को बाद में बताएंगे। अखिल ने यह भी कहा कि वे 2026 तक विधायक हैं और अपने क्षेत्र रामनगर में विधायक के रूप में काम करेंगे।

कल प्रोजेक्ट भवन में होगी झारखंड कैबिनेट की बैठक

रांची : झारखंड कैबिनेट की बैठक 7 अगस्त को प्रोजेक्ट भवन में होगी। इस बाबत मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग (समन्वय) द्वारा सूचना दी गयी है। कहा गया है कि मंत्रिपरिषद् की बैठक, बुधवार को अपराह्न 4:00 बजे से झारखंड मंत्रालय, प्रोजेक्ट भवन स्थित मंत्रिपरिषद कक्ष में होगी।

बांग्लादेश में तख्तापलट, इस्तीफे के बाद पीएम हसीना देश छोड़ कर भागीं, सेना ने संभाली कमान

एजेंसी

ढाका : बांग्लादेश में हिंसक प्रदर्शनों के बीच प्रधानमंत्री शेख हसीना ने इस्तीफा दे दिया और वो देश छोड़कर भाग गई हैं। इसे हसीना सरकार का तख्तापलट माना जा रहा है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने स्थानीय सूत्रों के हवाले से बताया कि बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना को सोमवार को एक सैन्य हेलीकॉप्टर से भारत लाया गया, क्योंकि सरकार विरोधी आंदोलन के बीच हजारों प्रदर्शनकारियों ने उनके इस्तीफे की मांग की थी। दूसरी तरफ बांग्लादेशी दैनिक प्रथम आलो की रिपोर्ट के मुताबिक, पीएम के जाने के बाद अब अंतरिम सरकार कार्यभार संभालेगी।

मीडिया में आयी कई खबरों में यह दावा किया गया है सेना प्रमुख वकार उज जमां ने कहा कि शेख हसीना ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है और अंतरिम सरकार शासन की बागडोर संभालेगी। बांग्लादेश के सेना प्रमुख ने कहा है कि उन्होंने राजनीतिक दलों के नेताओं से बात की है और उन्हें बताया कि सेना कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी संभालेगी। हालांकि, उनके देश से बाहर जाने के बारे में फिलहाल कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गयी है। शेख हसीना के इस्तीफे के बाद देश की कमान सेना ने संभाल ली है। बांग्लादेश के सेना प्रमुख जनरल वकार-उज-जमां ने सोमवार को यहां यह घोषणा की। हसीना के देश छोड़कर चले जाने की खबरों के बीच उन्होंने टेलीविजन पर दिए गए अपने संबोधन में कहा, मैं (देश की) सारी जिम्मेदारी ले रहा हूं। कृपया सहयोग करें। ऐसी अपुष्ट खबरें है कि वह (हसीना) भारत के किसी शहर के लिये रवाना हो गई हैं। इस बीच देश भर में कर्फ्यू लागू कर दिया गया है।

सेना प्रमुख ने कहा कि उन्होंने राजनीतिक नेताओं से मुलाकात की और उन्हें बताया कि सेना कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी संभालेगी। देश भर में विरोध प्रदर्शनों के बीच जनरल ने कहा कि उन्होंने सेना और पुलिस दोनों से गोली न चलाने को कहा है। पिछले दो दिनों में शेख हसीना सरकार के खिलाफ हुए विरोध प्रदर्शनों में 100 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। देश में विवादास्पद आरक्षण प्रणाली को लेकर उग्र प्रदर्शन हो रहे हैं, जिसके तहत 1971 के मुक्ति संग्राम में लड़ने वालों के परिवारों के लिए 30 प्रतिशत नौकरियां आरक्षित हैं। जमां ने प्रदर्शनकारियों से संयम बरतने और हिंसा बंद करने का आग्रह किया।

खबर के अनुसार, हसीना एक हेलीकॉप्टर से त्रिपुरा की राजधानी अगरतला के लिए रवाना हुई हैं। 'एसोसिएटेड प्रेस' ने बताया कि हसीना ने इस्तीफा दे दिया है, लेकिन कोई अन्य जानकारियां नहीं दी। बहरहाल, विदेश मंत्रालय या अगरतला में स्थानीय अधिकारियों ने इस खबर की पुष्टि करने से इनकार कर दिया है। त्रिपुरा के गृह सचिव पी. के. चक्रवर्ती ने बताया, हमारे पास ऐसी कोई सूचना नहीं है। बांग्लादेश में घटनाक्रम के मद्देनजर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने भारत-बांग्लादेश सीमा के 4,096 किलोमीटर क्षेत्र में सभी यूनिट को हाई अलर्ट किया।

अधिकारियों ने बताया कि बीएसएफ के महानिदेशक (कार्यवाहक) दलजीत सिंह चौधरी और वरिष्ठ अधिकारी भारत-बांग्लादेश सीमा सुरक्षा की समीक्षा के लिए कोलकाता पहुंचे हैं। निजी टेलीविजन समाचार चैनल 'जमुना' ने बताया कि हसीना को एक विवादित आरक्षण व्यवस्था को लेकर उनकी सरकार के खिलाफ व्यापक प्रदर्शनों के बाद प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए विवश होना पड़ा।

बांग्लादेश में भारी हिंसा के बीच एयरलाइन कंपनी 'इंडिगो और एयर इंडिया ने रद की उड़ाने

नयी दिल्ली : बांग्लादेश में हुई भारी हिंसा और शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद देश की सबसे बड़ी एयरलाइन कंपनी 'इंडिगो और एयर इंडिया ने सारी फलाइट रद करने की घोषणा कर दी है। एक्स पर एक पोस्ट में, एयर इंडिया ने कहा, बांग्लादेश में उभरती स्थिति को देखते हुए, हमने ढाका से आने-जाने वाली अपनी उड़ानों के निर्धारित संचालन को तत्काल प्रभाव से रद कर दिया है। एयरलाइन ने आगे कहा कि वे लगातार स्थिति की निगरानी कर रहे हैं और ढाका से आने-जाने के लिए कन्फर्म बुकिंग वाले यात्रियों को सहायता प्रदान कर रहे हैं, साथ ही उन्हें पुनर्निर्धारण और रद्दीकरण शुल्क पर एक बार छूट दी जा रही है। एयर इंडिया ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, हमारे मेहमानों और चालक दल की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। अधिक जानकारी के लिए, कृपया हमारे 24/7 संपर्क केंद्र पर 011-69329333 / 011-69329999 पर कॉल करें।

बांग्लादेश के हालात को लेकर सीएम ममता ने बंगालवासियों को किया सतर्क

कोलकाता : बांग्लादेश में हिंसक स्थिति को देखते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बंगालवासियों को सतर्क किया है। उन्होंने सभी से सावधान रहने को कहा है। सोमवार को राज्य कैबिनेट की बैठक में उन्होंने नेताओं और मंत्रियों को इसे लेकर मीडिया में कोई बयान नहीं देने की चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि सोशस मीढिया पर इसे लेकर कुछ भी पोस्ट न करें, जो कहना है भारत सरकार कहेगी। बांग्लादेश में आरक्षण को लेकर पिछले कई दिनों से हो रहे आंदोलन के कारण हालात बदतर हो गए और आखिरकार सोमवार को प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़ना पड़ा है। उनके देश छोड़ने के बाद बांग्लादेश सेना प्रमुख जनरल वकार-उज-जमां ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर आंदोलनकारियों से शांत रहने की अपील की।

बीएसएफ ने भारत-बांग्लादेश सीमा पर बढ़ायी चौकसी

गुवाहाटी : बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के इस्तीफे के बाद बांग्लादेश में उत्पन्न स्थिति के मद्देनजर बीएसएफ ने भारत-बांग्लादेश सीमा पर हाई अलर्ट जारी कर चौकसी बढ़ा दी है। बीएसएफ के महानिदेशक दलजीत चौधारी भी कोलकाता पहुंच चुके हैं। बीएसएफ सूत्रों ने सोमवार को बताया कि बांग्लादेश में कानून-व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए भारत-बांग्लादेश सीमा पर हाई अलर्ट जारी किया गया। स्थिति पर करीब से नजर रखने के लिए बीएसएफ के महानिदेशक भी कोलकाता पहुंच गए।

प्रदर्शनकारियों ने ढाका में शेख मुजीबुर रहमान की प्रतिमा तोड़ी

ढाका : शेख हसीना के बांग्लादेश के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने और देश छोड़कर भागने की खबर के बाद छात्रों के नेतृत्व में बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों ने प्रधानमंत्री के आधिकारिक आवास 'गणबंधन' पर धावा बोल दिया। प्रदर्शनकारियों ने ढाका में बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति और शेख हसीना के पिता शेक्ष मुजीबुर रहमान की प्रतिमा को भी तोड़ दिया। स्थानीय मीडिया के अनुसार, ढाका की सड़कों पर करीब चार लाख प्रदर्शनकारी हैं। इससे पहले राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में बांग्लादेश के सेना प्रमुख जनरल वाकर-उज-जमान ने घोषणा की कि शेख हसीना ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है और देश को चलाने के लिए जल्द ही अंतरिम सरकार का गठन किया जाएगा।

सीएम ने मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की समस्याओं के समाधान का दिया निर्देश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना (जेएमएमएसवाई) की शुरूआत पर एक्स हैंडल पर पोस्ट कर झारखंड की बहनों को बहुत-बहुत बधाई दी है। उन्होंने कहा कि योजना का लाभ लेने में बहनों को आ रही शुरूआती परेशानी के बारे में उन्हें जानकारी मिली है। योजना को लेकर आ रही तकनीकी समस्याओं के त्वरित निवारण के लिए उन्होंने निर्देश दिया है तथा इस मामले को लेकर वरीय पदाधिकारियों की भी बैठक हुई है। योजना को लेकर दिख रहे उत्साह को लेकर उन्होंने पूरे राज्य में प्रज्ञा केंद्रों की संख्या बढ़ाने का भी निर्देश दिया है। सोरेन ने कहा है कि सभी बहनों को यह बताना चाहता हूं कि यह हमेशा चलने वाली योजना है। योजना का लाभ लेने के लिए कोई समय सीमा नहीं है।

विशेष कैम्प के आयोजन के बाद भी जरूरतमंद बहनें कभी भी अपने नजदीकी प्रज्ञा केंद्र में जाकर इस योजना का लाभ ले सकेंगी। योजना से लोगों को आसानी से लाभ मिले, इसलिए 10 अगस्त तक विशेष कैम्प का आयोजन किया जा रहा है, जिसे और पांच दिन बढ़ाने का निर्देश दिया है।

अब दिल्ली में भी मिलेगा झारक्राफ्ट में बना झारखंडी उत्पाद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अब दिल्ली में भी झारखंड के उत्पाद मिलेंगे। राज्य के उद्योग मंत्री सत्यानंद भोक्ता ने सोमवार को दिल्ली में झारखंड सरकार के उपक्रम के अंतर्गत आने वाले झारखंड सिल्क, टेक्सटाइल एंड हैंडलूम डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (झारक्राफ्ट) एक्सक्लूसिव शो रूम का उद्घाटन किया। झारक्राफ्ट का अपने उत्पादों के लिए देश-विदेश में नाम है। जिसके सिल्क को काफी सराहा जाता है। अपने उत्पादों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए आज झारक्राफ्ट ने दिल्ली के जनपथ पर स्थित कॉटेज इंडस्ट्री के परिसर में अपना एक्लूसिव शो रूम खोला है।

देश ही नहीं बल्कि विदेशी मेहमानों को भी मिलेगा झारखंड का उत्पाद : मंत्री

इस अवसर पर सत्यानंद भोक्ता ने कहा कि झारक्राफ्ट उत्कृष्ट उत्पादों के उत्पादन, बिक्री के साथ-साथ बहुत से कारीगरों को रोजगार भी मुहैया करता है। सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज का परिसर विख्यात परिसर है। यहां न सिर्फ देश से बल्कि विदेश से भी ग्राहक आते हैं। हमें आशा है कि हमारे इस प्रयास से झारक्राफ्ट को नए आयाम मिलेंगे। दिल्ली में पहली बार है कि सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज के परिसर में किसी अन्य ब्रांड को स्थान मिला है, जो झारखंड के लिए उपलब्धि है।

राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह बड़ा कदम : प्रवीण टोप्पो

इस अवसर पर सचिव उद्योग विभाग प्रवीण टोप्पो ने कहा कि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हस्तकरघा एवं वस्त्र उद्योग की वृद्धि को सुनिश्चित करने के लक्ष्य से झारक्राफ्ट ने ये नया कदम उठाया है। झारक्राफ्ट मेक इन इंडिया की अवधारणा के साथ हस्तकरघा एवं वस्त्र उद्योग में गुणवत्ता और नवीनता की ओर अग्रसर है।

मुख्यमंत्री ने झारखंड राज्य सजा पुनरीक्षण पर्षद की 31वीं बैठक में रिहा होने वाले कैदियों को मुख्यधारा से जोड़ने का दिया निर्देश

रिहा किये गये विभिन्न जेलों में आजीवन सजा काट रहे 39 कैदी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड के विभिन्न जेलों में आजीवन सजा काट रहे 39 कैदी रिहा होंगे। यह निर्णय सोमवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में हुई झारखंड राज्य सजा पुनरीक्षण पर्षद की 31वीं बैठक लिया गया। बैठक में राज्य के विभिन्न कारागारों में आजीवन सजा काट रहे 74 कैदियों के रिहाई से संबंधित समीक्षा की गई। बैठक में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्य सजा पुनरीक्षण पर्षद की अनुशंसा के आलोक में राज्य के विभिन्न कारागारों में आजीवन सजा काट रहे 74 कैदियों के कारामुक्ति के लिए अधिकारियों के साथ गहन विचार-विमर्श एवं समीक्षा के उपरान्त 39 कैदियों को रिहा किए जाने के निर्णय पर अपनी स्वीकृति दी गयी।

समीक्षा के क्रम में न्यायालयों, संबंधित जिलों के पुलिस अधीक्षक, जेल अधीक्षक और प्रोबेशन पदाधिकारी के मंतव्य पर बिंदुवार विचार-विमर्श करने के पश्चात 39 कैदियों को रिहा करने पर सहमति बनी। बैठक में मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, प्रधान सचिव-सह-विधि परामर्शी विधि (न्याय) विभाग नलिन कुमार, प्रधान सचिव गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग वंदना दादेल, न्यायायिक आयुक्त, रांची दिवाकर पांडेय, महानिदेशक एवं पुलिस महानिरीक्षक झारखंड अनुराग गुप्ता, कारा महानिरीक्षक झारखंड सुदर्शन प्रसाद मंडल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

रिहा हुए कैदियों के फैमिली बैकग्राउंड का वेरीफिकेशन अवश्य करें

बैठक में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि झारखंड राज्य सजा पुनरीक्षण पर्षद द्वारा अनुशंसा के आलोक में राज्य के विभिन्न कारागारों में आजीवन सजा काटकर रिहा हुए कैदियों का फैमिली बैकग्राउंड, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का वेरीफिकेशन अवश्य करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि रिहा हुए कैदियों के जीवनयापन के लिए आय सृजन के लिए विशेष कार्य योजना बनाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि रिहा हुए कैदियों को स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम से जोड़ें। रोजगार से जोड़ने के लिए उन्हें डेयरी फार्म, मुर्गी फार्म, पशुपालन आदि योजनाओं का लाभ दिलाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि कारागार से रिहा होने के बाद इन कैदियों को जीवनयापन में सामाजिक रूप से कोई समस्या उत्पन्न न हो तथा आर्थिक तंगी का सामना नही करना पड़े, इसके लिए एक बेहतर प्लान तैयार कर इन्हें स्वरोजगार से जोड़ें। मुख्यमंत्री ने कहा कि रिहा होने वाले वैसे कैदी, जिनकी उम्र अधिक हो चुकी है, उनकी पारिवारिक स्थिति की जानकारी भी लें। मुख्यमंत्री ने कहा कि रिहा हुए कैदियों को समाज के मुख्यधारा से जोड़ना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी भी है।

बिहार में कांवड़ तीर्थयात्रियों का डीजे बिजली के तार से टकराया, नौ की मौत

एजेंसी

पटना/वैशाली : बिहार में वैशाली जिले के पहलेजा घाट स्थित गंगा नदी से जल लेकर आ रहे 9 कांवड़ियों की करंट के संपर्क में आने से मौत हो गई। घटना रविवार देर शाम औद्योगिक थाना क्षेत्र के सुल्तानपुर गांव में हुई है, जहां हाई-वोल्टेज तार की चपेट में आने से 8 कांवड़ियों की मौके पर मौत हो गई, जबकि एक की मौत इलाज के दौरान हो गई है। पांच लोग गंभीर रूप से झुलस गए हैं।

पुलिस के मुताबिक कांवड़ियों का जत्था पहलेजा घाट से गंगाजल भरने और बाबा हरिहरनाथ का जलाभिषेक करने के लिए निकला था। बताया जाता है कि कांवरियों का जुलूस गांव से करीब 500 मीटर दूर बढ़ा होगा कि हादसा हो गया। एक ट्रॉली पर डीजे और साउंड सिस्टम सेट किया हुआ था, जो 11 हजार वोल्ट के तार के संपर्क में आ गया। इससे पूरी ट्रॉली में 11 हजार वोल्ट का करंट फैल गया और इसकी चपेट में कांवड़िये आ गए। करंट लगने से 8 कांवड़ियों की मौत हो गई वहीं पांच झुलस कर गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। उनका इलाज कराया जा रहा है। बताया जा रहा है कि उनकी स्थिति भी गंभीर बनी हुई है। हादसे में मृतक कांवड़िया जेठुई गांव के रहने वाले हैं।

एक नजर

पुलिस ने भारी संख्या में मवेशी को किया जब्त

मेदिनीनगर (पलामू): चैनपुर थाना की पुलिस ने भारी संख्या में अवैध मवेशी को जप्त किया है। इस संबंध में चैनपुर थाना प्रभारी ने बताया कि 4 अगस्त को समय करीब 12.00 बजे चैनपुर थाना को गुप्त सूचना प्राप्त हुआ कि कुछ पशु तस्करों द्वारा किन्नी पहाड़ के बगल से गुजरने वाले कच्चे रास्ता से भारी संख्या में गौवंशीय पशुओं का वध कर मांस बिक्री करने के उदेश्य से पैदल तस्करी किया जा रहा है। इसकी सूचना वरीय पदाधिकारियों को देते हुए निदेर्शानुसार टीम गठन कर प्राप्त सूचना के आलोक में सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु किन्नी पहाड़ के पास पहुंचे जहाँ पुलिस टीम को आते देख कर सभी पशु तस्कर पशुओं को छोड़ कर भाग गये। तत्पश्चात कुल 94 गौवंशीय पशुओं को बरामद कर विधिव जप्त करते हुये सुरक्षार्थ थाना परिसर में रखा गया है। इस संबंध में 11 (ग्यारह) नामजद एवं अन्य अज्ञात गौवंशीय पशु तस्करों के विरूद्ध चैनपुर थाना काण्ड संख्या 166/2024, दिनांक 04.08.2024 दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।

मिशन समृद्धि ने मनाया सावन का हरियाली महोत्सव

मेदिनीनगर (पलामू): सावन का महीना हरियाली और रिमझिम फुहारों के साथ महादेव और माता पार्वती के अर्चना का महीना है। प्रकृति पूर्णत: हरियाली से भरी रहती है और किसान प्रसन्न रहता है भारतवर्ष में महिलाओं के बीच हरी चूड़ियां और पारंपरिक तरीके से हरि साड़ियों को धारण करने की भी परंपरा रही है।इसी परंपरा को जाग्रत रखने का सफल प्रयास करती मेदिनीनगर की स्वयंसेवी संस्था मिशन समृद्धि ने विभिन्न समाज सेवी संस्थाओं एवं प्रतिष्ठित महिलाओं के संग मनाया सावन का हरियाली महोत्सव।
कार्यक्रम में मेदिनीनगर की प्रथम महापौर अरुणा शंकर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति रही। मिशन समृद्धि की अध्यक्षा शीला श्रीवास्तव ने अरुणा शंकर और अधिवक्ता वीणा मिश्रा को सॉल एवं बुके देकर सम्मानित किया साथ ही साथ बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी हरियाली महोत्सव का आयोजन किया गया है और ऐसे में मिशन का एक साझा प्रयास होता है कि सभी संस्थाओं और समाज की महिलाओं को जोड़कर खुशियों का त्यौहार मनाया जाए।
मौके पर सोशल और मोटिवेशनल ट्रस्ट की झारखंड अध्यक्ष ममता झा ने अपनी ओर से प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया।

स्वच्छ एवं त्रुटिरहित मतदाता सूची का निर्माण सभी की प्राथमिकता : आयुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू): प्रमंडलीय आयुक्त-सह-मतदाता सूची प्रेक्षक बाल किशुन मुंडा गढ़वा पहुंचे। उन्होंने गढ़वा समाहरणालय सभागार में जिले के 80-गढ़वा, 81-भवनाथपुर के निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी एवं विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर द्वितीय मतदाता सूची संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम संबंधी कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने पुनरीक्षण कार्यक्रम संबंधी गतिविधियों एवं अबतक किये गये कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। साथ ही मतदाता सूची के अद्यतनीकरण, घर-घर सत्यापन, पुराने लेमिनेटेड/ब्लैक एंड ह्वाइट मतदाता पहचान पत्र के नवीनीकरण, मतदाता पहचान पत्रों के वितरण, मतदान केन्द्रों पर आवश्यक न्यूनतम सुविधाएं सुनिश्चित कराने आदि बिन्दुओं की समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निदेश दिये। उन्होंने पुनरीक्षण संबंधी कार्यों में गति लाने एवं इससे संबंधित लंबित कार्यों को पूर्ण करने का निदेश दिया। उन्होंने कहा कि निर्वाचन संबंधी कार्यों के निष्पादन में निर्वाचन आयोग के गाइडलाइन का शत प्रतिशत अनुपालन आवश्यक है। उन्होंने विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य में सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में कोई भी मतदाता अपने मताधिकार से वंचित नहीं रहे, इसके लिए अभी से सामूहिक प्रयास आवश्यक है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ एवं त्रुटिरहित मतदाता सूची का निर्माण सभी की प्राथमिकता है। स्वच्छ मतदाता सूची से ही मतदान प्रतिशत में वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची में पंजीकृत होने से वंचित न रहे, इसके लिए सभी पदाधिकारी टीम भावना से कार्य करें। उन्होंने इस कार्य में स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रेस एवं मीडियाकर्मियों तथा जागरूक आम नागरिकों से भी सहयोग की अपील की। उन्होंने मतदाता पंजीकरण के लिए प्राप्त आवेदनों तथा मतदाताओं के एपसेंट, सिफ्टेड एवं डेथ से संबंधित प्राप्त आवेदनों के आंकड़ों की विस्तृत समीक्षा करते हुए आवेदनों का शीघ्र निष्पादन का निदेश दिया। वहीं 18 वर्ष पूर्ण हुए नागरिकों का नाम मतदाता सूची में जोड़ने संबंधी कार्रवाई सुनिश्चित कराने का निदेश दिया। साथ ही मतदाता सूची में मतदाताओं के नाम का गलत विलोपन एवं एक ही परिवार के लोगों का अलग-अलग मतदान केन्द्रों के मतदाता सूची में नाम नहीं रहने देने तथा मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में रिपीटेशन रहने की दिशा में विशेष ध्यान देते हुए त्रुटिरहीत मतदाता सूची का निर्माण के दिशा में सक्रियता से कार्य करने का निदेश दिया। बैठक में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने भी सुझाव दिया। बैठक उपरांत प्रमंडलीय आयुक्त-सह-मतदाता सूची प्रेक्षक श्री बाल किशुन मुंडा गढ़वा के मतदान केंद्र संख्या 117 के वार्ड नंबर-9 के दीपुआ मुहल्ला पहुंचकर बीएलओ से मिले और उनसे पुनरीक्षण कार्य की जानकारी ली। साथ ही घर-घर भ्रमण कर कार्य का सत्यापन किया। घरों पर बीएलओ द्वारा चिपकाए गये स्टीकर का भी अवलोकन किया। साथ ही मतदाताओं से बात कर मतदाता सूची में उनका नाम जुड़ने संबंधी जानकारी प्राप्त की। साथ में गढ़वा उपायुक्त श्री शेखर जमुआर, उप विकास आयुक्त, उप निर्वाचन पदाधिकारी आदि पदाधिकारीगण शामिल थे।

भाजपा जेता टोनी जैन ने किसानों के साथ मनाया अपना जन्मदिन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता व प्रदेश कोषाध्यक्ष किसान मोर्चा टोनी जैन ने अपना जन्मदिन वृद्धा आश्रम की वृद्ध तथा कटकमसांडी रेवर ग्राम के ग्रामीण किसानों के साथ केक काटकर मनाया। सर्वप्रथम आज सुबह महावीर स्थान चौक हनुमान मंदिर में पूजा अर्चना कर अपने लिए तथा हजारीबाग की जनता के लिए श्री राम प्रभु से हनुमान जी से आशीर्वाद मांगा। और श्रद्धालुओं के बीच हनुमान चालीसा तथा लड्डू का वितरण किया।
उसके बाद वृद्ध आश्रम में जाकर अपने परिवार से दूर रहकर जिंदगी व्यतीत कर रहे ऐसे वृद्ध माता, बुजुर्गों के बीच केक काटकर अपने हाथों से खिलाया और उनका आशीर्वाद लिया। तथा फल का वितरण किया फिर कटकमसांडी के रेवर पंचायत मैं ग्रामीण माता बहनों तथा किसानों के बीच केक काटकर अपना जन्मदिन मनाया तथा वहां के बुजुर्गों से आशीर्वाद प्राप्त किया। अपने जन्मदिन की उपलक्ष्य में ग्रामीण महिलाओं के बीच साड़ी का वितरण किया तथा किसान भाइयों के साथ खेत में जाकर हल चलाया और और रोपाई भी की।आज के सारे कार्यक्रम में ग्रामीण काफी उत्साह के साथ टोनी जैन को आशीर्वाद दे रहे थे/ टोनी जी ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि आज ग्रामीण परिवेश में अपना जन्मदिन मना कर तथा किसानों के साथ समय व्यतीत कर अपने आप मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं मैं आज इन ग्रामीण भाई बहनों का आज कर्जदार हो गया हूं, जिन्होंने इतनी अच्छी तरीका से हमारे जन्मदिन को मनवाया और हमें आशीर्वाद प्रदान की /कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता कैलाशपति ओझा, सहयोगी सोनू गुप्ता,शेखर गुप्ता, किशोर गुप्ता साहित्य सैकड़ो की संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

हजारीबाग के अथर्व बख्शी और अविर्भव ने सुपरस्टार सिंगर 3 का प्रतिष्ठित खिताब जीता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सोनी एंटरटेनमेंट टीवी के होमग्रोन किड्स सिंगिंग रियलिटी शो, सुपरस्टार सिंगर 3 का शानदार समापन हो गया है। जिसमें संगीत के नए हुनर जो बनेंगे कल के धरोहर की खोज की गई। फ्यूचर का फिनाले नामक सितारों में झारखंड के अथर्व बख्शी और केरल के अविर्भव एस को विजेता घोषित किया गया, और उन्होंने सुपरस्टार सिंगर 3 की प्रतिष्ठित ट्रॉफी अपने नाम कर ली। ट्रॉफी के साथ, अथर्व और अविर्भव को 10-10 लाख रुपये का चेक दिया गया, जबकि पूरे सीजन में दर्शकों का दिल जीतने वाले 7 फाइनलिस्टों को 1-1 लाख रुपये का चेक दिया गया। ऑडिशन से ही झारखंड के हजारीबाग निवासी 12 वर्षीय अथर्व बख्शी ने अपनी मधुर आवाज से हर बार सभी को मंत्रमुग्ध किया है। नेहा कक्कड़ ने उनकी भावनात्मक गहराई और वोकल के कौशल के लिए उनकी तुलना प्रसिद्ध अरिजीत सिंह से की थी या बॉलीवुड अभिनेता विक्की कौशल जिन्होंने अथर्व के परफॉर्मेंस की भरपूर तारीफ की थी और कहा था कि म्यूज़िक इंडस्ट्री को उनके जैसे बेहतरीन गायक को पाकर गर्व होगा। इस लिटिल वंडर के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि अथर्व के पिता, जो कभी नहीं चाहते थे कि उनका बेटा संगीत की दुनिया में कदम रखे, अब अपने बेटे को यह प्रतिष्ठित ट्रॉफी उठाते देखकर गर्व से भर गए हैं।

खेलो विधानसभा फुटबॉल टुर्नामेंट की हुई शुरूआत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता के सौजन्य से 'खेलो विधानसभा हजारीबाग' फुटबॉल टुनामेंट कटकमदाग एवं कटकमसांडी प्रखण्ड में दिन सोमवार को शुरूआत हुई। कटकमदाग प्रखण्ड के ढेंगुरा स्थित फुटबॉल मैदान एवं कटकमसांडी प्रखण्ड स्थित कटकमसांडी फुटबॉल मैदान में टुनामेंट आयोजित किया गया है। कटकमसांडी प्रखण्ड में शुरूआती पहला मुकाबला कंचनपुर पंचायत बनाम आराभुषाई पंचायत के बीच मुकाबला खेला गया। जिसमें आराभुषाई पंचायत की टीम विजयी हुई। दुसरा मुकाबला डाटो खुर्द बनाम लुपूंग पंचायत के बीच मुकाबला खेला गया। जिसमें लुपूंग पंचायत की टीम विजयी हुई। तीसरा मुकाबला रोमी पंचायत बनाम खुटरा पंचायत के बीच मुकाबला खेला गया। जिसमें खुटरा पंचायत की टीम विजयी हुई। कटकमदाग प्रखण्ड में शुरूआती पहला मुकाबला पसई पंचायत बनाम मसरातु पंचायत के बीच मुकाबला खेला गया। दुसरा मैच सलगावां पंचायत बनाम कटकमदाग पंचायत के बीच मुकाबला खेला गया। तीसरा मैच नवादा पंचायत बनाम अद्रा पंचायत के बीच मुकाबला खेला गया। चौथा मुकाबला सुलताना पंचायत बनाम कुसुंभा पंचायत के बीच मुकाबला खेला गया। मौके पर भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने कहा कि कटकमदाग एवं कटकमसांडी प्रखण्ड में खेलो विधानसभा हजारीबाग फुटबॉल टुनामेंट का शुरूआत किया गया है।

श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान ने तीसरे जत्थे को देवघर के लिए किया रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग के वार्ड नंबर 24 स्थित कूद गांव से श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के द्वारा आज 110 कावरियों के तीसरे जत्थे को बाबानगरी देवघर के लिए रवाना किया गया । श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के द्वारा सावन के पहले दिन से ही कावरियों के लिए निःशुल्क सेवाएं दी जा रही है तथा हर सप्ताह 2 बस निःशुल्क बाबा नगरी भेजी जा रही है जो सुल्तानगंज से जल उठवा कर बाबा नगरी में दर्शन करवा कर फिर बासुकीनाथ का दर्शन करवा कर सकुशल वापस हजारीबाग ले कर आती है । आज श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के केंद्रीय अध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने खुद उपस्थित हो कर कावरियों को कावर यात्रा का कीट प्रदान कर देवघर के लिए रवाना किया । इस दौरान संजय सिंह ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा की उनकी सेवाएं इससे पहले बाहर के राज्यों में 17 सालों से चल रही थी परंतु झारखंड में श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान ने अपनी सेवाओं की शुरूआत हजारीबाग जिलें से किया है तथा यह सेवा लगातार पूरे सावन जारी रहेगी । उन्होंने बताया की हजारीबाग में श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के द्वारा कावरियां विश्राम गृह भी संचालित हो रहा है । आज वार्ड नंबर 24 के कूद ग्राम के लोग इस सेवा को पाकर काफी खुश दिखे तथा संजय सिंह को बहुत बहुत आशीर्वाद प्रदान किया । वही इस दौरान श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान के केंद्रीय अध्यक्ष ने गांव के वृद्ध और धर्मप्रेमी लोगों को अंगवस्त्र और रामचरित मानस को पुस्तक दे कर सम्मानित भी किया।

माय भारत पोर्टल पर युवाओं को पंजीयन करने के लिए किया गया जागरूक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हुसैनाबाद (पलामू): ए के सिंह कॉलेज जपला में राष्ट्रीय सेवा योजना के नेतृत्व में माय भारत पोर्टल जागरूकता कार्यक्रम 2024 विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह विचार गोष्ठी महाविद्यालय के ए सी एस डॉक्टर शिवकुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम पदाधिकारी सह पलामू जिला के नोडल पदाधिकारी प्रोफेसर राजेश कुमार सिंह ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए माय भारत पोर्टल के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि माय भारत पोर्टल युवाओं के लिए एक ऐसा डिजिटल पोर्टल है जो प्रत्येक युवाओं के कौशल विकास को और उनके करियर से संबंधित सभी प्रकार की जानकारियां केंद्र सरकार के द्वारा दी जाती है। इस पोर्टल पर प्रत्येक एन एस एस के वालंटियर और विद्यार्थी एक युवा के रूप में माय भारत पोर्टल से जुड़े और अपना पंजीयन कराए ताकि सरकार के द्वारा युवाओं के प्रति सभी प्रकार की जानकारियां उन्हें समय से मिल सके। प्रोफेसर राहुल कुमार सिंह ने उपस्थित स्वयंसेवकों और अन्य विद्यार्थियों को माय भारत पोर्टल पर जाकर एक युवा के रूप में पंजीयन करने के लिए प्रेरित किया और व्यावहारिक रूप से बताया। उपस्थित विद्यार्थियों को एक युवा के रूप में पंजीयन करने के लिए शुभम प्रकाश ,किरण कुमारी और आलोक कुमार ने विशेष रूप से सहयोग किया।

प्राकृतिक आपदाएं और हमारा जीवन विषय पर परिचर्चा का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू): वैश्विक स्तर पर प्राकृतिक आपदाओं की घटनाओं और पलामू के जल संकट को देखते हुए घटनाओं को देखते हुए इप्टा द्वारा संचालित संस्कृतिक पाठशाला की 50 वीं कड़ी में प्राकृतिक आपदाएं और हमारा जीवन विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा की अध्यक्षता एवं संचालन ज्ञान विज्ञान समिति के प्रांतीय अध्यक्ष शिव शंकर प्रसाद ने की। परिचर्चा के प्रारंभ में प्रेम प्रकाश ने विषय प्रवेश करते हुए कहा कि प्राकृतिक आपदाएं जन जीवन के स्वास्थ्य, शिक्षा, संपत्ति के साथ भौगोलिक संरचनाओं को भी प्रभावित करती है। प्राकृतिक आपदा भौगोलिक परिघटनाओं का एक चक्र होता है। परंतु इस चक्र में गड़बड़ी आ जाने के कारण लगातार प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएं घटित हो रही है। संपूर्णता में देखें तो यह प्राकृतिक आपदा प्राकृतिक ना होकर मानवीय प्राकृतिक आपदा है। विशेष रूप से कहा जाए तो प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएं पूंजीवादी सोच का परिणाम है।
गोविंद प्रसाद ने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं के बाद भी विज्ञान ने हमारे जीवन को संवारने में काफी मदद किया है। परंतु दूसरी तरफ मानव को केंद्र में न रखकर विकास के लिए पूंजीवादी अवधारणा के तहत विकसित विकास की नीतियां प्राकृतिक आपदाओं को जन्म दे रही है। अनुभव मिश्रा ने कहा प्राकृतिक आपदाओं को कम करना चाहते हैं तो पेड़ लगाना होगा और प्रकृति के साथ छेड़छाड़ पर रोक लगाना होगा। घनश्याम कुमार ने कहा प्राकृतिक आपदाओं की घटनाओं में कमी लाने के लिए प्राकृतिक दोहन पर रोक लगाना होगा और प्रकृति की सुरक्षा करनी होगी। इप्टा के कार्यकारी अध्यक्ष सुरेश सिंह ने कहा प्राकृतिक आपदाओं की मार सबसे पहले किसानों के साथ पूरे जीव जगत पर पड़ता है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण कृषि चक्र में भी परिवर्तन हुआ है।

संक्षिप्त खबरें

हिंदू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल के विभाग अध्यक्ष के नेतृत्व में बूढ़ा अमरनाथ जाने के लिए निकला जत्था

हजारीबाग : बड़ा अखाड़ा के प्रांगण से अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल के कार्यकर्ता अमरनाथ चट्टानी एवं वैष्णो देवी के यात्रा के लिए जथा के रूप में विभागीय मंत्री दीपक शंकर के नेतृत्व में रवाना हुए हजारीबाग बड़ा अखाड़ा में बूढ़ा अमरनाथ जाने वाले दीपक शंकर, सुनील केसरी, पंकज सिन्हा, विजय पांडे, अशोक कुमार सिंह, सुनील कुमार, संतोष कुमार, अमित कुमार, राजेश कुमार, विकास कुमार, धनंजय पांडे, कार्यकर्ता एवं अधिकारी पूजा अर्चना किया उसके बाद हजारीबाग नगर भ्रमण करते हुए बुढ़वा महादेव पहुंचे पूजा अर्चना की एवं बस से कोडरमा रवाना हुए कोडरमा से 7:30 बजे के ट्रेन से यात्रा करेंगे, यह यात्रा 10 दिनों की है प्रभात कुमार प्रधान, डा0 शिवदयाल सिंह, डॉ बी के सिंह, महंत विजयानंद दास, प्रभात कुमार उर्फ पम्मु, विजय सिंह, प्रदीप प्रसाद, मुन्ना सिंह, हर्ष अजमेर, चंदन राठौर, भैया अभिमन्यु प्रसाद, शेफाली गुप्ता, सोनम सिन्हा, भैया संदीप, आनंद देव, नमन ठाकुर, अंजली कुमारी का सराहनीय योगदान रहा।

बसों में मिलने वाले टिकटों पर हो नाम और वाहन नंबर, आंदोलन चलाएगी एबीजीपी

हजारीबाग : आगामी 31 अगस्त तक अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत का सदस्यता अभियान चलाया जाएंगा । अभियान के दौरान ग्राहक पंचायत के सक्रिय सदस्य, चिकित्सक, शिक्षाविद, अधिवक्ता, पर्यावरणविद से लेकर प्रशासनिक पदाधिकारी व सामाजिक पसंगठन से जुड़े लोग, आम सदस्य को भी इसका सदस्य बनाएंगी। यह निर्णय परिसदन सभागार में आयोजित अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत की बै बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष अधिवक्ता गौरव सहाय ने की। बैठक में विशेष अतिथि के रुप से प्रांतीय उपाध्यक्ष मनोज गुप्ता उपस्थित थे। जिला अध्यक्ष श्री सहाय ने पुष्प गुच्छ देकर प्रांत उपाध्यक्ष का स्वागत किया। बैठक का संचालन सचिव बबलू कुमार ने की। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। सदस्यों से आग्रह किया गया है कि जिन्होंने भी सदस्यता ग्रहण की है या जिनके माध्यम से दूसरे सम्मानित व्यक्ति अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत के सदस्य बने हैं। उनकी सूची उनके नाम, मोबाइल नंबर और उनके पते के साथ भेजना सुनिश्चित करेंगे। ताकि उसे अग्रतर सूचनार्थ भेजा जा सके। साथ ही सबों ने यह भी निर्णय लिया कि अधिक-से-अधिक सदस्य को इससे जोड़ा जा सके। ग्राहकों की समस्याओं का समाधान के लिए नि: शुल्क परामर्श केंद्र खोलने पर भी चर्चा की गई। तय किया गया कि ग्राहकों की समस्याओं को सुनकर उसके त्वरित निष्पादन हेतु नियमानुकूल अग्रतर कार्रवाई हेतु तत्पर रहेंगे। बैठक में परिवहन उप सचिव संतोष गर्ग को सौंपे गए एक पत्र पर चर्चा की गई। बताया गया कि सभी तरह के वाहनों में यात्रियों बिना नाम औश्र वाहन के नंबर का टिकट दिया जाता है। यह मोटर अधिनियम का सीधा उल्लघन है। बैठक में तय किया गया कि इस बाबत मंगलवार को क्षेत्रिय वाहन उप सचिव संतोष कुमार गर्ग से मिलकर इस दिशा में कार्रवाई की मांग करेंगे। बताया गया कि वाहनों मालिकों द्वारा दिए गए टिकट के आधार पर दुर्घटना होने की स्थिति में किसी प्रकार की सहायता प्राप्त होती नहीं और ना हीं प्राप्त की जा सकती है। कारण टिकट में कहीं भी वाहन और उसका पंजीयन नंबर ना होना होता है। तय किया गया कि अगर इस दिशा में कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन किया जाएंगा।

साथ जगहों के लिए पूर्व में ही भेजा गया है लिफ्ट इरीगेशन का प्रस्ताव : विधायक

चौपारण : बीते दिनों मानगढ़ पंचायत के लेढिया नदी पर लिफ्ट इरीगेशन को लेकर स्थानीय सांसद मनीष जयसवाल ने झारखंड सरकार के सिंचाई मंत्री को पत्र लिखा गया है। जिस पर बरही विधायक के मीडिया प्रभारी मनोज कुमार यादव ने कटाक्ष करते हुए कहा कि सांसद मनीष जयसवाल का यह अच्छी पहल है, पर बतादें कि उक्क्त योजना का बरही विधायक सह निवेदन समिति के सभापति उमाशंकर अकेला के प्रयास से पूर्व में ही विभागीय प्रस्ताव की स्वीकृति मिल चुकी है। उन्होंने बताया कि तत्कालीन मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन के कार्यालय के द्वारा चौपारण के ग्राम पंचायत छतरपुरा, चयकला, बेला, लोहण्डी,मानगढ़,कोयली एवं ढूठी के कृषकों को सिंचाई सुविधा हेतु लिफ्ट एरिगेशन हेतु आवश्यक कार्रवाई के लिए दिनांक 30 जून को ही 2024 को जल संसाधन विभाग को पत्राचार किया गया है। जिसपर मुख्यमंत्री झारखंड सरकार के आप्त सचिव ने सचिव जल संसाधन विभाग को पत्र लिखकर आवश्यक कार्रवाई का निर्देश दिया था।

हजारीबाग में बनने वाले राम मंदिर के भूमि पूजन की तिथि में हुआ संशोधन

हजारीबाग : भाजपा नेता नीरज कुमार गुप्ता ने सोमवार को प्रेस वार्ता कर यह जानकारी दिए की हजारीबाग में बनने वाले राम मंदिर के भूमि पूजन के तिथि में संशोधन किया गया है उन्होंने कहा की मुख्य रूप से मेरे द्वारा राम मंदिर बनाने का जो संकल्प लिया था जिसकी भूमि पूजन एक माह के भीतर मुझे करना था उसमें संसोधन किया गया है मेरे गुरू एव पण्डित के द्वारा शुभ दिन देखा गया तो पता चला कि शुभ मुहूर्त इस वर्ष नहीं है इस लिए भूमि पुजन अगले वर्ष 2025 में 14 जनवरी के बाद का है इस लिए दिए भूमि पूजन तो एक माह के भीतर नहीं हो सकता पर लेकिन मंदिर कार्य हेतु चिहित स्थान पर चारदीवारी का कार्य इस माह करवा कर राम भक्तों द्वारा जो समान समाग्री मिलेगी उसे सम्प्रहित करने का कार्य चलता रहेगा। मेरे द्वारा जो पौधा रोपण कार्य पिछले 45 दिनों से चल रहा है उसका समापन दिनांक 19अगस्त को होगा जिसमें मेरा प्रयास रहेगा कि लगभग 5000 पौधा का छायाप्रति दिखाने का एंव सावन के अवसर पर गाँधी मैदान में समय दोपहर 3 से लेकर संध्या 6 बजे तक शिव भक्तों के लिए भक्ती जागरण का कार्यक्रम तय किया गया है आप सभी हजारीबाग वासी आमंत्रित है।

एक नजर

मुख्यमंत्री ने डाल्टनगंज रेलवे स्टेशन का नाम बदलने पर दी सहमति

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने पलामू जिला के अंतर्गत डाल्टनगंज रेलवे स्टेशन का नाम परिवर्तित कर मेदिनीनगर रेलवे स्टेशन किए जाने के प्रस्ताव पर सैद्धांतिक सहमति प्रदान कर दी है, ताकि इसे अग्रतर कार्रवाई के लिए गृह मंत्रालय, केंद्र सरकार को प्रेषित किया जा सके।

विधानसभा थाना क्षेत्र से एक व्यक्ति का शव बरामद

रांची : विधानसभा थाना क्षेत्र के नयासराय रिंग रोड के पास से सोमवार की सुबह एक व्यक्ति शव बरामद हुआ है। उसके बारे में बताया जा रहा है कि वह पुंदाग ओपी क्षेत्र स्थित अपने घर आश्रम में इलाज कराने आया था। इसी दौरान सोमवार को झाड़ी से उसका शव मिला। उसकी मौत कैसे हुई अब तक इसके पीछे की सही वजह सामने नहीं आ पायी है। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज भेज दिया। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि सुबह स्थानीय लोगों ने एक शव देखा, जिसके बाद इसकी सूचना पुलिस को दी।

हाई कोर्ट ने अधिवक्ता गोपाल हत्याकांड का लिया स्वतः संज्ञान

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने रांची सिविल कोर्ट के अधिवक्ता गोपाल कृष्ण की दिनदहाड़े हुई हत्या पर स्वतः संज्ञान लिया है। हाई कोर्ट के निर्देश पर सोमवार को राज्य के डीजीपी, रांची एसएसपी व एसआईटी के नेतृत्वकर्ता कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए अदालत के समक्ष उपस्थित हुए। सभी अधिकारियों ने इस मामले में अब तक हुई कार्रवाई की जानकारी कोर्ट को दी। अधिकारियों ने अदालत को बताया कि एसआईटी गठन कर इस केस की जांच की जा रही है और अधिवक्ता के हत्यारों की गिरफ्तारी कर ली गई है। अधिवक्ता के परिवार को सुरक्षा भी दी जाएगी। साथ ही विक्टिम कंपनसेशन योजना के तहत अधिवक्ता के परिवार को आर्थिक सहायता भी पहुंचाई जाएगी। डीजीपी की जानकारी से संतुष्ट होकर अदालत ने मामले की सुनवाई के लिए तीन सप्ताह बाद की तिथि निर्धारित की है।

विनोद सिंह ने अग्रिम जमानत अर्जी वापस लेने के लिए दायर की याचिका

रांची : लैंड स्कैम केस के आरोपित और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के सहयोगी आर्किटेक्ट विनोद सिंह ने सोमवार को अपनी अग्रिम जमानत याचिका वापस लेने के लिए याचिका दायर की है। विनोद सिंह ने अपने अधिवक्ता के माध्यम से रांची प्रीवेन्शन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) की विशेष कोर्ट में याचिका दाखिल कर अपनी अग्रिम जमानत अर्जी वापस मांगी है। ईडी ने हेमंत सोरेन से जुड़े लैंड स्कैम केस में प्रॉसिक्यूशन कम्प्लेन (पीसी) दायर की है, जिसमें विनोद सिंह को भी अभियुक्त बनाया गया है। ईडी की प्रॉसिक्यूशन कम्प्लेन (पीसी) पर कोर्ट ने संज्ञान भी ले लिया है। इस केस के प्रमुख आरोपित मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन हाई कोर्ट से जमानत मिलने के बाद जेल से बाहर हैं और बड़गाईं अंचल का हल्का कर्मचारी भानु प्रताप फिलहाल बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में न्यायिक हिरासत में बंद है।

राज्य में मादक पदार्थों की बिक्री पर हो कठोर कार्रवाई : हाई कोर्ट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने राज्य के डीजीपी से मौखिक कहा कि झारखंड में अफीम, चरस, गांजा जैसे मादक पदार्थों की बिक्री हर हाल में रोकने के लिए कठोर कार्रवाई करें। कोर्ट ने कहा कि पुलिस और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) आपसी सहयोग से झारखंड में अफीम की खेती को नष्ट करने के लिए कार्रवाई करे। खूंटी सहित राज्य के कई जिलों में जंगलों में अफीम की खेती होती है। सैटेलाइट मैपिंग के माध्यम से पुलिस और एनसीबी को-ऑर्डिनेशन से इसका पता लगाकर इन्हें नष्ट करने की दिशा में कार्रवाई करें।

खूंटी में अफीम के फसलों को नष्ट करने एवं झारखंड में अफीम, चरस, गांजा आदि ड्रग्स के कारोबार में लगातार वृद्धि पर हाई कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया है। इस पर सोमवार को सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान डीजीपी एवं रांची एसएसपी कोर्ट में सशरीर उपस्थित थे। कोर्ट ने डीजीपी को निर्देश दिया कि अफीम, चरस, गांजा सहित अवैध शराब पर नियंत्रण के लिए पुलिस स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) बनाए। कोर्ट ने रांची एसएसपी से भी मौखिक कहा कि रांची शहर में स्कूल एवं मंदिरों के निकट किसी भी स्थिति में शराब की बिक्री नहीं होनी चाहिए। मंदिरों के निकट बार एवं रेस्टोरेंट खोला जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। कोर्ट ने कहा कि उत्पाद विभाग के साथ-साथ पुलिस की भी यह जिम्मेवारी है कि रांची शहर में अवैध ढंग से शराब की बिक्री ना हो।

कोर्ट ने मौखिक कहा कि यह रांची है ना कि मुंबई या गोवा है, यहां के बार एवं रेस्टोरेंट को नियंत्रित ढंग से काम करना होगा ताकि सामाजिक दायित्व का समुचित निर्वहन हो सके। देर रात तक बार एवं रेस्टोरेंट खुला रहने से अप्रिय घटना होने की ज्यादा संभावना रहती है, पुलिस की पीसीआर वैन रात में शराबियों एवं आपराधिक तत्वों पर नजर रखें. मामले की अगली सुनवाई 19 अगस्त को होगी।

संक्षिप्त खबरें

राज्यपाल ने केन्द्रीय मंत्री अमित शाह से की शिष्टाचार भेंट

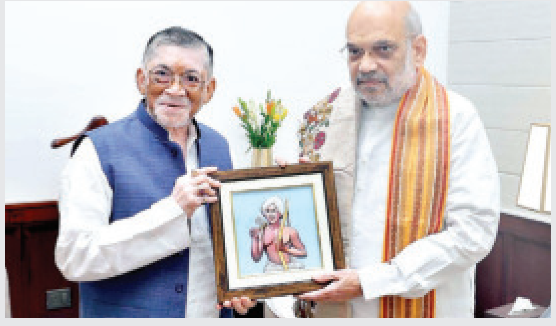

रांची : राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने सोमवार को केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह से नई दिल्ली में शिष्टाचार भेंट की।

हाई कोर्ट में जेएसएससी ने कहा- वेबसाइट पर जारी किया जाएगा शिक्षक नियुक्ति परीक्षा का मेरिट लिस्ट और कट ऑफ मार्क्स

रांची : झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) वर्ष 2016 में हाईस्कूल शिक्षक नियुक्ति विज्ञापन का राज्य स्तरीय मेरिट लिस्ट जारी करेगा। झारखंड हाई कोर्ट में सोमवार को यह जानकारी जेएसएससी की ओर से दी है। झारखंड हाई कोर्ट में जेएसएससीकी ओर से यह बताया गया कि राज्य स्तरीय मेरिट लिस्ट अपनी वेबसाइट पर 10 दिन में अपलोड कर देगा। साथ ही कमीशन कट ऑफ मार्क्स भी वेबसाइट पर जारी करेगा। हाई कोर्ट के जस्टिस दीपक रौशन की कोर्ट में इस मामले की सुनवाई हुई। जेएसएससी की ओर से अधिवक्ता संजॉय पिपरवाल और प्रिंस कुमार ने बहस की। कोर्ट ने जेएसएससी को निर्देश दिया है कि वह सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आलोक में राज्य स्तरीय मेरिट लिस्ट जारी करे। अब हाई कोर्ट में इस मामले की अगली सुनवाई पांच सितंबर को होगी। उल्लेखनीय है कि झारखंड हाई कोर्ट ने पूर्व में जेएसएससी को वर्ष 2016 के हाईस्कूल शिक्षक नियुक्ति विज्ञापन के आलोक में राज्य स्तरीय मेरिट जारी करने का निर्देश दिया था। मामले में मीना कुमारी समेत सात अभ्यर्थियों ने हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की है।

हाई कोर्ट ने पांच पूर्व मंत्रियों की आय से अधिक संपत्ति मामले में राज्य सरकार और एसीबी से मांगा जवाब

रांची : झारखंड हाई कोर्ट में सोशल एक्टिविस्ट पंकज कुमार यादव द्वारा रघुवर सरकार के पांच पूर्व मंत्रियों की आय से अधिक सम्पति मामले की जांच को लेकर दायर जनहित याचिका पर सोमवार को सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान अदालत ने राज्य सरकार और एसीबी को चार सप्ताह में एफिडेविट के माध्यम से जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। एसीबी को इस मामले में अब तक हुई कार्रवाई के बिंदु पर जवाब दाखिल करना है। हाई कोर्ट के जस्टिस रंगोन मुखोपाध्याय और जस्टिस प्रदीप कुमार श्रीवास्तव की बेंच में इस जनहित याचिका पर सुनवाई हुई। वर्ष 2020 में याचिकाकर्ता पंकज यादव ने याचिका दायर कर पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी, नीरा यादव, नीलकंठ सिंह मुंडा, लुईस मरांडी और रणधीर सिंह के खिलाफ आय से अधिक सम्पति होने का आरोप लगाते हुए एसीबी से जांच की मांग की थी। जुलाई 2023 में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कैबिनेट से पांचों पूर्व मंत्रियों के खिलाफ एसीबी जांच की स्वीकृति दी थी। इसके बाद एसीबी ने पूर्व मंत्रियों के खिलाफ जांच कर पंकज यादव की शिकायत को सत्य पाया था। एसीबी ने इस मामले में पीई दर्ज कर पूर्व मंत्रियों को और शिकायतकर्ता को नोटिस भी भेजा था।

तीसरी सोमवारी पर श्याम मंदिर में उमड़ा भक्तों का सैलाब, सीआईडी एसपी ने की पूजा

रांची : हर हर महादेव बाबा भोलेनाथ की जय जयकारों से हरमू रोड का श्री श्याम मंदिर गूंज रहा था। पवित्र श्रावण मास के तीसरे सोमवार के अवसर पर प्रात 5:30 मंगला आरती बाल भोग के बाद मंदिर में विराजमान श्री शिव परिवार की पूजा अर्चना तथा जलाभिषेक के लिए भक्तों का सैलाब उमर पड़ा। श्रावण अमावस्या के बाद का पहला सोमवार होने के करण भक्तजन भगवान शिव की आराधना में लीन रहे। गंगाजल दूध दही से भक्तजन कतार में लगकर स्फटिक के शिवलिंग का अभिषेक कर रहे थे। यह सिलसिला निरंतर 7 घंटे तक चलता रहा। श्री श्याम मित्र मंडल के प्रथम महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने बताया कि दोपहर 12:30 बजे के पूर्व मंदिर में विराजमान सभी देवी देवताओं को भोग अर्पित कर शंख आरती की गई। आज का पहला रुद्राभिषेक कुसुम पुनिया भारतीय पुलिस प्रशासनिक सेवा की CID SP द्वारा किया गया। द्वितीय रूद्राभिषेक दोपहर 3:00 बजे से स्फटिक के महादेव का विशेष महारुद्राभिषेक अनुष्ठान प्रारंभ किया गया। यजमानश्री के रूप में पवन रीना केडिया, दीपक, सरोज, राजीव, नीतू केडिया एवं श्रेयश वर्तिका केडिया ने भक्ति के सागर में गोता लगाकर रुद्री पाठ के साथ रुद्राभिषेक अनुष्ठान किया। मंदिर के आचार्य के सानिध्य में आरती के साथ कार्यक्रम का विराम किया गया। फिर श्री शिव परिवार का नयनाभिराम मनोहारी श्रृंगार करके केसरिया पेडा का भोग लगाया गया। श्री शिव जी की महाआरती की गई। भक्तों के बीच में प्रसाद फल पेड़ा का वितरण किया गया। इस अवसर पर श्री श्याम मित्र मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी प्रथम महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया अनिल नारनौली कुसुम पुनिया राजीव केडिया प्रकाश मोदी सहित बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे।

हाई कोर्ट ने डीवीसी में नियुक्ति प्रक्रिया पर लगायी रोक

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने दामोदर वैली कॉरपोरेशन (डीवीसी), कोलकाता द्वारा एग्जीक्यूटिव ट्रेनी एवं मेडिकल ऑफिसर-असिस्टेंट मैनेजर पद के लिए निकल गए विज्ञापन के आलोक में नियुक्ति प्रक्रिया पर अगले आदेश तक रोक लगा दी है। कोर्ट ने मामले में केंद्र सरकार को तीन सप्ताह में पूरक शपथ पर दाखिल करने के लिए अंतिम मौका दिया है। अगली सुनवाई तीन सप्ताह बाद होगी, तब तक नियुक्ति प्रक्रिया पर रोक रहेगी। मामले को लेकर भूपेंद्र सिंह की ओर से हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की गई है। डीवीसी, कोलकाता ने एग्जीक्यूटिव ट्रेनिंग (फाइनेंस) के सात पदों और मेडिकल ऑफिसर-असिस्टेंट मैनेजर (हेल्थ सर्विसेज) के 21 पदों लिए 18 जुलाई को विज्ञापन निकाला था। सात अगस्त तक फॉर्म भरने की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है।

आंदोलनकारी देवेन्द्र नाथ महतो को मिली जमानत, कहा-

आखिरी सांस तक बुलंद करते रहेंगे झारखंडियों की आवाज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची लोक सभा क्षेत्र के पूर्व प्रत्याशी देवेन्द्र नाथ महतो और भोला महतो को सोमवार को ज्यूडिशियल कमिशनर रांची के न्यायालय से जमानत मिल गयी। दोनों ने सिल्ली थाने में दर्ज केस संख्या 45/2023 के आलोक में अग्रिम जमानत के लिए सब डिविजनल ज्यूडिशियल कमिशनर रूपम स्मृति टोपनो के न्यायालय में सशरीर उपस्थित होकर समर्पण किया और न्यायालय ने उनकी जमानत मंजूर करते हुए बेल दे दी।

उनपर थाने में एफआईआर खतियान आधारित नियोजन नीति लागू करने की मांग को लेकर 10 और 11 जून 2023 को बुलाये गये झारखंड बंद के दौरान हुआ था। जमानत मिलने पर देवेंद्र नाथ महतो ने कोर्ट परिसर पर प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंडियों की आवाज को दबाने के राजनीतिक रूप से शक्तिशाली लोग फर्जी एफआईआर करते हैं तो कभी उन्हें साजिश के तहत जेल भेजते हैं। उन्होंने कहा कि वे आखिरी सांस तक लोकतांत्रिक तरीके से झारखंडियों की आवाज को बुलंद करते रहेंगे।

सब इंस्पेक्टर हत्याकांड : तीसरे दिन भी हुई जांच, घटनास्थल पर पहुंचे जोनल आईजी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : जिला के कांके थाना क्षेत्र के संग्रामपुर रिंग रोड के समीप स्थित एक होटल के पास शुक्रवार देर रात स्पेशल ब्रांच के दरोगा सब इंस्पेक्टर की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस घटना के तीसरे दिन भी पुलिस को घटना ने शामिल आरोपियों के बारे में कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई है। वहीं दूसरी तरफ रांची जोनल आईजी अखिलेश झा सोमवार की शाम घटनास्थल पर पहुंचे। उसके बाद आईजी जिस होटल में रात में पार्टी हुआ था, उस होटल के मालिक से पूरे मामले में पूछताछ की। मौके पर मौजूद अधिकारियों को आईजी ने कई बिंदुओं पर जांच करने का आदेश दिया है। पूरे मामले में आईजी ने कहा कि जल्द रांची पुलिस हत्याकांड का खुलासा करेगी। कुछ सुराग एसआईटी को मिला है, जिस पर काम चल रहा है।

अनुपम कच्छप हत्या मामले में पुलिस ने जांच तेज कर दी है। जांच के दौरान पुलिस ने अनुपम के परिवार के लोगों से जानकारी ली। परिवार के लोगों ने विवाद के कुछ बिंदुओं पर पुलिस को जानकारी दी है। इसके आधार पर पुलिस की टीम सत्यापन कर रही है कि कहीं पारिवारिक विवाद की वजह से हत्या तो नहीं हुई। इसके अलावा पुलिस की टीम अनुपम के दोस्तों का मोबाइल नंबर लिया है, ताकि तकनीकी शाखा के सहयोग से सीडीआर निकाल कर यह पता लगाया जा सके कि हत्याकांड के पीछे किसी अपने का हाथ तो नहीं। पुलिस हत्याकांड की गुत्थी सुलझाने के लिए जमीन विवाद के बिंदुओं पर भी जांच कर रही है। अनुपम का विभागीय काम की वजह से किसी से दुश्मनी तो नहीं थी, इस बिंदु पर भी पुलिस जांच कर रही है।

हेमंत सरकार की नयी योजना केवल वसूली के लिए : बाबूलाल मरांडी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने सोमवार को हेमंत सरकार पर निशाना साधा। मरांडी ने कहा कि राज्य सरकार का जन कल्याण से कोई लेना देना नहीं। योजना का दिखावा केवल लूटने के लिए हो रहा है। बचे चंद महीनों में भी यह दलाल बिचौलियों के लिए लूट का रास्ता खोल रही।

उन्होंने कहा कि झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के शुभारंभ के पहले दिन ही फॉर्म के नाम पर वसूली का शुभारंभ कर दिया गया है। हेमंत सरकार की चरणबद्ध योजना के तहत अभी फॉर्म के नाम पर, फिर पंजीकरण के नाम पर, फिर सूची में नाम डालने के नाम पर और अंत में खाते में पैसे भेजने के नाम पर वसूली के सारे चरण पूरे किया जाएंगे।

इसके तो हजारों उदाहरण पहले ही हिम्मतवाली सरकार ने पेश कर दिए हैं लेकिन फिर से एक बार एक नया वसूली का उदाहरण एक नई योजना के साथ पेश किया जा रहा है। इन सारी घटनाओं से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि हेमंत सरकार में योजनाओं को लाने का उद्देश जनकल्याण नहीं, बल्कि वसूली करने और कराने का है।

विज्ञापन निकालने के विरोध में चौकीदारों ने शुरू किया जेल भरो अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अपनी तीन सूत्री मांगों को लेकर झारखंड राज्य दफादार - चौकीदार पंचायत राज्य कमेटी के लोगों ने सोमवार से जेल भरो आंदोलन शुरू किया। झारखंड के विभिन्न जिलों में सरकार ने चौकीदारों के रिक्त पदों को भरने के लिए विज्ञापन निकाला है। उसे रद्द कराने की मांग को लेकर सैकड़ों चौकीदार और दफादार 20 जुलाई से राजभवनन के समक्ष अनिश्चितकालीन धरना दे रहे थे। लेकिन सीएम से वार्ता नहीं होने के कारण सोमवार को राजभवन से पैदल मार्च करते हुए राजभवन की ओर आगे बढ़ रहे थे। वहां मौजूद पुलिस ने सभी को रोक दिया। अध्यक्ष दयाल सिंह ने कहा चार अगस्त तक सरकार से वातार्लाप कराने का निर्णय लिया गया था। लेकिन रविवार को सीएम से वातार्लाप नहीं हुआ। जबतक सीएम से वातार्लाप नहीं होता और विज्ञापन रद्द नहीं किया जाता, तबतक आंदोलन चलता रहेगा।

सरयू राय के जदयू में शामिल होने से एनडीए में फंसेगा पेंच, झारखंड की राजनीति पर पड़ेगा गहरा प्रभाव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड की राजनीति के चाणक्य से कहे जाने वाले सरयू राय ने झारखंड विधानसभा चुनाव के ठीक पहले पॉलिटिकल मास्टर स्ट्रोक लगा दिया है। जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय जदयू में शामिल हो गए हैं। झारखंड में जदयू को एक नेता मिल गया है। चुनाव से पहले उनके इस कदम ने राज्य की राजनीति में कई तरह की चर्चा शुरू कर दी है। आने वाले दिनों में इसके कई तरह परिणाम देखने को मिल सकते हैं। उनके इस पॉलिटिकल स्टैंड से झारखंड के राजनीतिक समीकरण को लेकर चचाओं का बाजार गर्म हो गया है। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि जदयू में सरयू राय के शामिल होने से जमशेदपुर पूर्वी सीट से उनका दोबारा चुनाव लड़ना पक्का माना जा रहा है। क्योंकि, लंबे समय से जमशेदपुर पूर्वी सीट पर काबिज रहे रघुवर दास अब ओडिशा के राज्यपाल बन चुके हैं। ऊपर से केंद्र में मोदी सरकार बनाने में जदयू ने अहम रोल अदा किया है। लिहाजा, सरयू राय की जदयू में वापसी से झारखंड में एनडीए फोल्डर का दायरा बढ़ना तय है।

सरयू राय और रघुवर दास के बीच का मतभेद जगजाहिर है। ऐसे में अमित शाह के खास कहे जाने वाले रघुवर दास अपनी राजनीतिक जमीन शिफ्ट होने देना नहीं चाहेंगे लेकिन यह भी स्पष्ट है कि भाजपा के पास जमशेदपुर पूर्वी सीट के लिए कोई बड़ा चेहरा फिलहाल नहीं है। दोनों पार्टियों के वरिष्ठ नेताओं के स्तर पर सारे समीकरण सेट हो चुके हैं। क्योंकि, यहां एक तरफ बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हैं तो दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। ऐसे में किसी तीसरे नेता की दखलअंदाजी का कोई सवाल ही नहीं उठता। जानकारों का मानना है कि राजनीतिक बदलाव का असर मांडू और छतरपुर सीट पर भी देखने को मिल सकता है।

दरअसल, जदयू के झारखंड अध्यक्ष खीरु महतो मांडू के विधायक रहे हैं। वर्ष 2019 में भाजपा की टिकट पर जेपी पटेल यहां से विधायक बने थे लेकिन वर्तमान लोकसभा चुनाव के वक्त कांग्रेस में शामिल होकर हजारीबाग से चुनाव लड़े थे। इसलिए खीरु महतो की कोशिश है कि उनके पुत्र दुष्यंत को वहां से टिकट मिले। वैसे आजसू का भी इस सीट पर दावा है। तीसरी सीट छतरपुर को लेकर है। वहां से पूर्व में विधायक रहीं सुधा चौधरी झारखंड में मंत्री रह चुकी हैं।

सरयू राय की अपनी पार्टी भारतीय जन मोर्चा (भाजमो) के जदयू में मर्जर की तो यह समझना जरूरी है कि सरयू राय इस पार्टी के संरक्षक हैं। इस प्रक्रिया को पूरा करना पार्टी के अध्यक्ष का काम है। एक और खास बात है कि 2019 में रघुवर दास के मुख्यमंत्री रहते हुए सरयू राय ने अपनी जमशेदपुर पश्चिम सीट के बजाय जमशेदपुर पूर्वी सीट से चुनाव लड़कर उन्हें मात दे दी थी। आज भी इस बात की चर्चा होती है कि 2019 के चुनाव में सरयू राय के स्टैंड की वजह से भाजपा खासकर रघुवर दास के खिलाफ एक नैरेटिव सेट हो गया था, जिसका खामियाजा भाजपा को चुनाव में भुगतना पड़ा था।

इस बार कुरमी वोटों की होगी खूब घेराबंदी

इस बार झारखंड के चुनाव में कुरमी वोटों को लेकर जबरदस्त घेराबंदी होगी। नीतीश कुमार की पार्टी भी कुरमी वोटों पर डोरा डालेगी तो आजसू भी वही काम करेगा। फिर जयराम महतो की पार्टी भी उसी राह पर चलेगी। मतलब सबकी नजर 2024 के विधानसभा चुनाव में कुरमी वोटों पर रहेगा। वर्ष 2019 में तो भाजपा झारखंड में विधानसभा का चुनाव अकेले लड़ी थी। आजसू के साथ भी उसका गठबंधन नहीं था। जदयू के साथ भी नहीं था। वैसे, सरयू राय ने जदयू में शामिल होकर भाजपा के लिए परेशानी ही पैदा की है।

एक नजर

6 घंटे में पुलिस ने किया 105 वांछित अपराधियों को गिरफ्तार

धनबाद : एसएसपी हृदीप पी जनार्दन के निर्देश पर बीती मध्य रात्रि से सुबह 6:00 बजे तक पुलिस ने सभी थाना में कार्रवाई करते हुए 105 वांछित अपराधियों को गिरफ्तार किया है। ये अपराधी मुकदमे में वांटेड थे तथा ट्रायल के दौरान कोर्ट में उपस्थित नहीं हो रहे थे। आयोजित पत्रकार वार्ता में एसएसपी ने कहा कि ऑर्गेनाइज्ड क्राईम पर लगाम लगाने और जनता के जान माल की सुरक्षा के लिए पुलिस ने एक विशेष अभियान चलाया है। जिसके तहत 105 अपराधियों को गिरफ्तार किया है। उन्होंने कहा कि पुलिस ने साइबर क्रिमिनल्स को रोकने के लिए भी अभियान छेड़ा है। अभियान के तहत बीते 6 महीने में 30 से अधिक साइबर क्रिमिनल्स को विभिन्न कंपनी के 22 सिम कार्ड और 90 मोबाइल फोन के साथ गिरफ्तार किया है। वहीं बीते दो माह में अपहरण की 4 घटना का 12 से 24 घंटे के अंदर उद्भेदन कर अपराधियों को सलाखों के पीछे भेजा है। इसके अलावा दो बड़ी डकैती और बाइक चोरी की घटना, अवैध शराब के विरुद्ध भी पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। चेन स्नेचर गिरोह के बारे में एसएसपी ने बताया कि गैंग को चिन्हित कर लिया गया है। अगल-बगल के जिलों से भी चेन स्नेचर गिरोह का लिस्ट मंगा लिया है। शीघ्र यह गिरोह पुलिस की गिरफ्त में होगा।

बोकारो ओल्ड जेवेरियन एलुमनी ट्रस्ट ने स्कूल प्रबंधन को दिया पंखा

बोकारो: बोकारो ओल्ड जेवेरियन एलुमनी ट्रस्ट की ओर सोमवार को कॉपरेटिव कॉलोनी स्थित मध्य विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सुविधा के लिए स्कूल प्रबंधन को पंखा उपलब्ध कराया। ट्रस्ट के व्यवस्थापक अरविंद चोपड़ा ने कहा कि मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा के सहारे विद्यार्थी जीवन पथ पर आगे बढ़ेंगे। इसलिए विद्यार्थियों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करना चाहिए। कहा कि कुछ सरकारी विद्यालयों में सुविधा व संसाधन का अभाव है। इसलिए संस्था की ओर से विद्यालय में अध्ययनरत बच्चों को बेहतर सुविधा व संसाधन उपलब्ध कराने की दिशा में सकारात्मक काम किया जा रहा है। संस्था के कोषाध्यक्ष कुमार अमरदीप ने कहा कि इस विद्यालय में पंखा नहीं रहने से गर्मी के दिनों में विद्यार्थियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए विद्यालय प्रबंधन को पंखा उपलब्ध कराया गया। ताकि विद्यार्थियों को गर्मी से राहत मिल सके। विद्यार्थी बेहतर माहौल में पढ़ाई कर सकें। मौके पर ट्रस्ट के प्रबंधक महेश गुप्ता, पीयूष गोसरिया, महेश शर्मा, तेज बहादुर सिंह, प्रधानाध्यापक अलका कुमारी, मनोज कुमार के अलावा शिक्षिका-शिक्षकाएं उपस्थित थे।

कन्हैया नाट्यशाला में अमेरिका, ब्राजील एवं रूस से आए कृष्ण भक्तों ने किया पूजा अर्चना

तालझारी: सोमवार को अमेरिका, ब्राजील एवं रूस से पांच कृष्ण भक्त विश्व प्रसिद्ध कन्हाई नाट्यशाला इस्कान मंदिर पहुंचे। यहां भगवान श्रीकृष्ण की पूजा की। इसके साथ सात कृष्ण भक्त पश्चिम बंगाल मायापुर से पहुंचे थे। जहां टीम की अगुआई कर रहे परमाद्वैत महाराज एवं साधु महाराज ब्रह्मचारी ने बताया कि कन्हैया स्थान स्थित इस्कान मंदिर पूरे विश्व में विख्यात है। यहां आने के लिए सभी कृष्णभक्त लालायित रहते हैं। भगवान की लीला स्थली दर्शन का सौभाग्य सभी को नहीं मिलता है।

महिला समिति बोकारो का 60वां स्थापना दिवस समारोह का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : महिला समिति, बोकारो का साठवां स्थापना दिवस समारोह मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के मुख्य प्रेक्षागृह में मनाया गया. समारोह का आयोजन समिति की अध्यक्षा श्रीमती अनिता तिवारी के नेतृत्व में हुआ. इस अवसर पर बीएसएल के निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में संयंत्र के अधिशासी निदेशक एवं मुख्य महाप्रबंधकगण, डीआईजी दिग्विजय कुमार सिंह, महिला समिति बोकारो की उपाध्यक्षगण एवं महिला समिति के अन्य सदस्य उपस्थित थे। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि बीएसएल के निदेशक प्रभारी श्री बी के तिवारी तथा अधिशासी निदेशकगणों दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। समारोह में महिला समिति के सुरभि और स्वावलंबन केंद्र के लगभग 32 वर्कर्स तथा समिति द्वारा संचालित दो विद्यालय बालमंदिर व सौरभ शिशु मंदिर के 19 छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां पेश कीं. सांस्कृतिक कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति गणेश आवाहन रही. गढ़वाली नृत्य, विवाह महोत्सव, समूह गान,झारखंड नृत्य,आजादी की पुकार आदि प्रस्तुतियों ने सबका मन मोह लिया. कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा महिला समिति गीत जिसे समिति की उप सचिव ऋचा प्रियदर्शिनी द्वारा कलमबद्ध किया गया तथा श्री प्रसेनजीत ने धुन बनाया जिसके लिए उन्हें निदेशक प्रभारी तथा अध्यक्ष, महिला समिति द्वारा सम्मानित भी किया गया। इस गीत को समिति की सदस्याओं ने स्वरबद्ध किया। महिला समिति की अध्यक्षा अनिता तिवारी ने अपने उद्बोधन में समिति की प्रमुख गतिविधियों से सभी को अवगत कराया तथा बीएसएल द्वारा मिले सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। मुख्य अतिथि श्री बीरेंद्र कुमार तिवारी ने अपने संबोधन में नगर की कल्याणकारी संस्था महिला समिति के कार्यकलापों की सराहना करते हुए कहा कि सामाजिक उत्थान के कार्यों में वह संस्था बेहतरीन कार्य कर रही है। उन्होंने महिला समिति के योगदान को प्रेरणादायक बताते हुए उन्हें भविष्य में भी सामाजिक उत्थान के कार्यों को जारी रखने का संदेश दिया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन सांस्कृतिक सचिव श्रीमती श्वेता कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन समिति की सचिव बंदना झा ने किया। कार्यक्रम की सफलता में समिति की उपाध्यक्षगण निशा श्रीवास्तव, मोनिका रंगानी, इति रथ, प्रीति शरण, कोषाध्यक्ष रीता रानी, स्वावलंबन प्रभारी कुमुद कुमारी, सुरभि प्रभारी अभिरुचि प्रिया, पुष्पा भारतीय, अनीशा झा, प्रीति, आशा, जया, समिता ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

तीसरी सोमवारी में भोलेनाथ का जलाभिषेक करने उमड़े श्रद्धालु

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : कहा जाता है कि देवों के देव महादेव को जलधारा अति प्रिय है, इसलिए सावन के महीने में शिव भक्त अपनी मनोकामना की पूर्ति करने हेतु भोलेनाथ का जलाभिषेक कर उनको प्रसन्न करते हैं। सावन महीने का आज तीसरा सोमवार है। इस मौके पर नावागढ़ और आसपास के क्षेत्रों में नावागढ़ मोड़ शिवालय, डी भी सी बाँसजोड़ा स्थित शिव मन्दिर, नावागढ़ बस्ती स्थित बाबा हुटेश्वर नाथ शिव मन्दिर, मधुबन ओ पी स्थित शिवालय, फुलारी टांड हटिया एवं बाजार स्थित शिव मन्दिर, खरखरी शिव मन्दिर, महेशपुर शिव मन्दिर आदि मंदिरों में सुबह से ही भक्तों की भीड़ देखी गई। शिव भक्त जलाभिषेक एवं पुजन दोपहर तक किए। इस वर्ष का श्रावन मास का शुभारम्भ शुभ प्रीति और सर्वार्थ सिद्धि योग से शुरू हुआ है जो सोमवार के दिन से शुरू और सोमवार के दिन ही समापन हो रहा है। जिसमें कुल 5 सोमवारी हो रहा है यह एक दुर्लभ संयोग ही है जो इस बार सावन में 72 साल बाद आया है।

सांसद ढुलू महतो के पहल से मजदूरों में हर्ष का माहौल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : धनबाद सांसद श्री ढुलू महतो ने बोकारो स्टील प्लांट के इस्पात कर्मियों , ठेका मजदूरों, पूर्व कर्मचारियों, विस्थापितों और नगरवासियों के समस्याओं से पत्र के द्वारा स्टील मिनिस्टर एच डी कुमारस्वामी को अवगत कराया तथा मामलों का समाधान के लिए स्टील मिनिस्टर से क्षेत्र दौरा करने का अपील किया है। सांसद के अपील पर इस्पात मंत्री ने सकारात्मक सहयोग का आश्वासन दिया है । इससे मजदूर, विस्थापित , नगरवासी में हर्ष का माहौल है । सांसद ढुलू महतो ने बोकारो विधानसभा के लोगों के बीएसएल से सरोकार के मामले को पेज में स्टील मिनिस्टर को सौपा है। जिसमे प्रमुख है, इस्पात कर्मियों का 39 महीना का वेज रिवीजन का एरियर, ठेका मजदूरों का पूरा वेतन की गारंटी, ठेका मजदूरों के निधन पर उनके आश्रित को नौकरी, टेंडर बदलने पर मजदूर नहीं बदलना, सभी टाइप क्वार्टर की लिजिंग , लीज लाइसेंस के भाड़ा एक समान करना, सम्पूर्ण अधिग्रहित जमीन पर उद्योग लगाना या खाली जमीन रैयतों को वापस करना, विस्थापित का आरक्षण बहाल करना, अप्रेंटिस की ज्वाइनिंग, हवाई अड्डा चालू करना, फुटबाल मैदान को विश्व स्तरीय बनाना, पुनर्वास क्षेत्रों के विस्थापितों को निशुल्क बिजली पानी , बंद पड़े भवनों का उपयोग , नगरवासियों के बच्चों को भी बीएसएल द्वारा संचालित डीएवी स्कूल में नामांकन , मान्यता प्राप्त यूनियन का चुनाव , बीस किलोमीटर तक क्षेत्र के विकास में योगदान, नगर वासियों को उचित दर पर पानी बिजली इत्यादि मामले शामिल है। उक्त जानकारी जनता मजदूर सभा के महासचिव साधु शरण गोप ने दिया। कहा सांसद ढुलू महतो ने चुनाव जीतने के साथ ही समस्याओं को गंभीरता से लेकर लोगों में विश्वास जगा दिया है कि सांसद के कार्यकाल में सकारात्मक काम होंगे।

पुलिस की अब तक की सबसे बड़ी कारवाई पुलिस ने जब्त किया 17000 सीएफटी बालू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

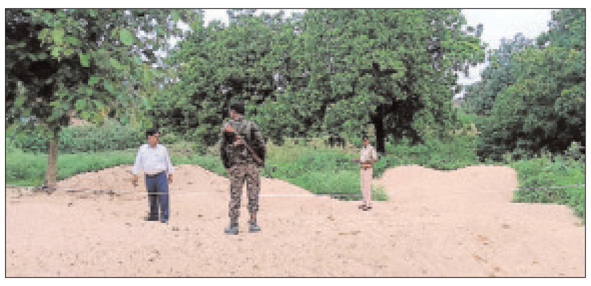

धनबाद : धुरकी पुलिस अवैध बालू उत्खनन एवं परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध लगातार छापामारी कर रही।इस संदर्भ में धुरकी पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर रविवार को अवैध बालू के विरुद्ध छापामारी अभियान चलाया जिसमें जिला खनन पदाधिकारी, नंद देव बैठा के संयुक्त छापामारी के क्रम में दो अलग अलग जगहों पर छापामारी हुई जिसमें ग्राम रक्सी अंर्तगत संतोष जायसवाल के द्वारा किये गये करीब 10000 सीएफटी अवैध बालू भंडारण को जब्त कर उनके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की है वहीं थाना क्षेत्र के पारासपानी कला पश्चिमी टोला में ठिकेदार गोंड के घर के सामने सगमा निवासी नंदकिशोर मेहता, पिता स्वर्गीय छठु मेहता के द्वारा किये गये करीब 7500 सीएफटी अवैध बालू भंडारण को जब्त कर उनके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गयी है.इस की जानकारी देते हुए थाना प्रभारी उपेन्द्र कुमार ने कहा कि पुलिस अधीक्षक, गढ़वा के निर्देशानुसार थाना क्षेत्र में अवैध बालू के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है. जिसमें जिला खनन पदाधिकारी भी शामिल होते हैं जिनके संयुक्त छापामारी में रविवार को अलग अलग जगहों से करीब 17000 सीएफटी बालू को जप्त करते हुए दो लोगों 1. संतोष जायसवाल, पिता राधेश्याम जायसवाल, ग्राम रक्सी एवम 2. सगमा निवासी नंदकिशोर मेहता, पिता स्वर्गीय छठु मेहता के द्वारा अवैध रूप से चोरी कर भंडारण किए बालू को जब्त कर लिखित आवेदन के आधार पर धुरकी थाना कांड संख्या 112/24 दर्ज की गयी है. थाना प्रभारी ने कहा कि गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी की थाना क्षेत्र में अलग अलग जगहों पर कनहर नदी से रात्रि में बालू चोरी कर छुपा कर रखा गया है. जिसकी सूचना जिला खनन पदाधिकारी को देते हुए छापामारी अभियान चलाया गया आगे उन्होंने बताया कि थाना क्षेत्र में अवैध बालू के कारोबार किसी भी हाल में चलने नही दिया जायेगा. यह छापामारी आगे भी जारी रहेगी. विदित हो कि अवैध बालू के विरुद्ध धुरकी पुलिस की अब तक की यह सबसे बड़ी कारवाई है. इस तरह की कारवाई से थाना क्षेत्र में बालू का अवैध काम करने वाले माफियाओं मे ? हड़कंप मचा हुआ है. उल्लेखनीय है कि उपेन्द्र कुमार जब से धुरकी थाना में योगदान दिए हैं तब से बालू माफिया एवं अपराधियों मे काफी हड़कंप मचा है, धुरकी पुलिस इनके नेतृत्व में विगत 5 महीनों में करीब 15 ट्रैक्टर, सहित दर्जनों बालू कारोबारियों के विरुद्ध कारवाई की है. इस छापामारी दल मे सब इंस्पेक्टर सुनील कुमार, बीकू कुमार रजक, एएसआई शैलेंद्र कुमार सहित दलबल के जवान शामिल थे।

निदेशक प्रभारी ने ब्लास्ट फर्नेस विभाग में सुरक्षा पहलुओं का लिया जायजा

बोकारो : बीएसएल के निदेशक प्रभारी श्री बी के तिवारी ने आज दिनाँक 05 अगस्त को संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस विभाग में सेफ्टी वॉक कर सुरक्षा पहलुओं का जायजा लिया. इस दौरान उनके साथ अधिशासी निदेशक राजन प्रसाद, मुख्य महाप्रबंधक एल दास, मुख्य महाप्रबंधक बी के सरतापे, मुख्य महा प्रबंधक एम पी सिंह सहित ब्लास्ट फर्नेस के वरीय अधिकारी उपस्थित थे। निदेशक प्रभारी तिवारी ने सेफ्टी वॉक के दौरान ब्लास्ट फर्नेस विभाग के कर्मियों से सुरक्षा पहलुओं पर चर्चा की, साथ ही उन्हें पीपीई के इस्तेमाल और सुरक्षा नियमों के अनुपालन का निर्देश दिया. निदेशक प्रभारी ने शॉप फ्लोर में बेहतर हाउस कीपिंग पर भी बल दिया तथा सुरक्षा पहलुओं को और पुख्ता बनाने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

डीपीएस के विद्यार्थियों का विभिन्न ओलंपियाडों में शानदार प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : दिल्ली पब्लिक स्कूल बोकारो के छात्र-छात्राओं ने सत्र 2023-24 के लिए सिल्वर जोन और साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन की ओर से आयोजित विभिन्न ओलंपियाडों में शानदार प्रदर्शन करते हुए उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। सीनियर व प्राइमरी, दोनों इकाइयों को मिलाकर कुल तीन विद्यार्थियों को ओलंपियाड रैंक 1 तथा 14 को जोनल रैंक 1 मिली, जबकि 14 विद्यार्थियों ने स्टेट रैंक 1 के साथ राज्य में अव्वल होने का गौरव प्राप्त किया। विद्यालय की सीनियर इकाई में सेकेंड लेवल में आदित्य मिश्रा, कुमार अनमोल और शिवम ओझा ने एनओएस में ओलंपियाड रैंक 1 पाई। आदित्य मिश्रा ने आईओईएल में ओलंपियाड रैंक- 3 और अमोघ आनंद झा ने स्टेम इनोवेशन ओलंपियाड में ओलंपियाड रैंक 3 पाई। अखिल भारतीय हिन्दी ओलंपियाड में सात्विक रूपम द्विवेदी और आयुषी श्री ने स्टेट रैंक 1 लाकर एक्सीलेंस स्वर्ण पदक व प्रमाण-पत्र जीते। आराध्या सिंह, शिप्रा हेम्ब्रम एवं आरिवा एंजेल ने स्टेट रैंक 2, अक्षोक आनंद, शिखा श्रेया एवं अमोघ आनंद झा ने स्टेट रैंक 3 पाई। वहीं, इंटरनेशनल रीजनिंग एंड एप्टीट्यूड टेस्ट ओलंपियाड में रक्षित राज ने जोनल रैंक 1 एवं ओलंपियाड रैंक 2 और कुणाल आनंद ने जोनल रैंक 3 पाकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आदित्य राज, आयुषी श्री, वंशिका सिंह एवं कुमार अनमोल को रैंक 2, सरित चक्रवर्ती, अशोक आनंद, जय सात्विक मदिरेड्डी एवं श्रेयांशु घोष को स्टेट रैंक 3 मिली। इधर, साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन के आईसीओ में हर्षिता ने जोनल रैंक 1, बरुणी अग्रवाल ने रैंक 2, आदित्य मिश्रा ने एनएसओ और आईएसएसओ में रैंक 1, आईईओ में आराध्या मिश्रा ने जोनल रैंक 1 के साथ गोल्ड मेडल, राशि मान्या ने रैंक 2, हर्षल गुप्ता एवं अंकिता साक्षी ने रैंक 3, रयान सिंह ने आईएमओ में जोनल रैंक 1 व एनएसओ में रैंक 3, आदित्य राज ने आईएमओ में रैंक 2 और नेशनल साइबर ओलंपियाड में सार्थक सिद्धांत ने जोनल रैंक 3 प्राप्त की। दूसरी ओर, विद्यालय की प्राइमरी इकाई में विभिन्न ओलंपियाडों में कुल 9 छात्र-छात्राओं को जोनल रैंक 1 तथा 12 विद्यार्थियों ने स्टेट रैंक वन हासिल की है। अजलान परवेज ने आईओएम में जोनल रैंक 1, स्टेम ओलंपियाड में गेडेला वेदांतिका व अहाना ने स्टेट रैंक 3, रेयांश सिंह ने स्टेट रैंक 2 एवं ध्रुव श्रीवास्तव ने स्टेट रैंक 1, आरव रंजन ने आईओईएल में स्टेट रैंक 1, प्रांजल सिंह ने आईआरएओ में स्टेट रैंक 3, इशित पटेल ने आईआरएओ में जोनल रैंक 3, अभाहिआ ने अदिति ने स्टेट रैंक 3 व आराध्या झा ने स्टेट रैंक 2, आईओएम में गौरव सिसोदिया ने स्टेट रैंक 2, हीरेश हिंतांश ने जोनल रैंक 1, नव्या चिरद ने आईओएस में जोनल रैंक 1, गुरमीत कौर आहूजा ने एनएसओ में जोनल रैंक 6, शैलजा सान्वी ने स्टेम ओलंपियाड में स्टेट रैंक 2, आईआईओ में स्टेट रैंक 1 एवं एनएसओ इंटरनेशनल रैंक 2, दर्शिल राज ने आईओएम में स्टेट रैंक 1 एवं लेवल 2 में स्टेट रैंक 2, अथर्व कश्यप ने स्टेम ओलंपियाड में स्टेट रैंक 1 (लेवल 1) एवं जोनल रैंक 1, हर्षित चंदन ने स्टेम ओलंपियाड में स्टेट रैंक 2 एवं आईआरएओ में स्टेट रैंक 1 पाई।

संक्षिप्त खबरें

दुखहरण नाथ धाम की नदी में डूबने से युवक की मौत

धनबाद : गौतम कुमार चौहान नामक 17 वर्षिय युवक की मौत दुखहरण नाथ धाम गिरिडीह में स्नान करने के दौरान उसरी नदी में डूबने से मौत हो गयी। डूबने के लगभग 3 से 4 घंटे बाद स्थानीय लोगो की मदद से शव को निकाला गया। सूचना पाकर गिरिडीह सदर के सी ओ मोहम्मद अशलम ने बताया कि एन डी आर एफ की टीम देवघर से निकल चुकी है,गिरिडीह सदर के सी ओ मौके पर टीम के साथ मौजूद थे। घटना स्थल पर काफी लोगों की भीड़ जुटी हुई है।
अपने टीम के साथ घटना स्थल पर पहुचकर शव निकालने की प्रक्रिया आरंभ कर दिया,समाचार लिखे जाने तक शव नही निकला था।

शिक्षा से समाज का विकास संभव : संजय निषाद

धनबादः सोमवार को संकल्प एजुकेशन के द्वारा आयोजित महर्षि वेदव्यास जयंती पखवाड़ा का 15 वा.दिन एवं समापन समारोह रेनगुनी बस्ती भूली में समाजसेवी संजय निषाद ने महर्षि वेदव्यास जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया ।उन्होंने कहा कि अपना समाज अति पिछड़ा है इसे विकसित बनाने के लिए शिक्षा का होना आवश्यक है इसके बिना विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।
संकल्प एजुकेशन के निदेशक सहदेव महतो ने कहा कि महर्षि वेदव्यास के द्वारा रचित महाभारत के अंश गीता आम आदमी को जीने का तरीका बताता है। ज्ञात होगी महर्षि वेदव्यास जी का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा के दिन हुआ था उसी दिन से संकल्प एजुकेशन के द्वारा महर्षि वेदव्यास जयंती पकवाड़ा धनबाद एवं बोकारो जिले के विभिन्न स्थानों पर प्रतिदिन जयंती समारोह के रूप में मनाया जा रहा था और आज अंतिम दिन था इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मानव को मानव से जोड़ना एवं उसके अंतर निहित शक्तियों को उजागर करना है। मौके पर राजकुमार निषाद ,रविंद्र निषाद, ईश्वर निषाद, कैलाश मलाह ,कालाचंद निषाद ,कैलाश मालाह, जमुना मलाह, ईश्वर निषाद, अशोक निषाद ,गोपी निषाद, संजय निषाद, संजय निषाद ,संजय निषाद डीके, पप्पू निषाद, बाबू चांद रजक, रमेश निषाद ,संजू बाउरी , अमित बाउरी ,भृगु रजक ,मनोज रजक, बिरजू रजक, मनोज साहू, दीपक कुमार सावआदि उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में पप्पू निषाद, बैजनाथ केवट, नागेश्वर केवट, आदि का सराहनीय योगदान रहा।

नावागढ़ उप स्वास्थ्य केंद्र के पास गोफ बनने से लोगों में हड़कंप

धनबाद: फुलारीटांड मगराहाट के समीप कुआं के बगल में रविवार को गोफ बन जाने से लोगों में दहशत व्याप्त है। गोफ की चौड़ाई तीन फीट और गहराई बीस फीट है। उक्त भवन मधुबन थाना क्षेत्र के फुलारीटांड में स्थित है।सूचना पाकर फुलारीटांड कोलियरी के क्षेत्रीय अभियंता रविकांत यादव, फोरमैन अशोक कुमार घटनास्थल पर पहुंचे और गोफ का मुआयना किया। अधिकारियों ने अविलंब गोफ को भरने का आश्वासन दिया। एहतियात के तौर पर गोफ को बड़ा पत्थर व लकड़ी से ढक दिया गया है। बताते चलें कि उक्त स्थान पर 5 वर्ष पहले भी एक बड़ा गोफ बन गया था। जिसे बीसीसीएल के द्वारा भराई कर दी गयी थी।

श्मशान से लौटकर तालाब में नहाने के दौरान डूबकर युवक की मौत

बोकारो : श्मशान घाट से लौटकर तालाब में नहाने के क्रम में युवक की मौत हो गयी। गोताखोर ने काफी मशक्कत के बाद ढूंढ कर शव को तालाब से निकाला। मृतक सीसीएल कर्मी बताया जाता है।
जानकारी के अनुसार गोमियां प्रखंड के हजारी पंचायत के खुदगड़ा गांव में देर शाम 30 वर्षीय सीसीएल कर्मी अजीत यादव अपनी चाची के निधन पर श्मशान घाट गया था। जब वह लौट कर आया तो शाम हो चुकी थी। वह तालाब में स्नान कर घर लौटने की बात कह कर स्नान करने चला गया। उसी क्रम में संतुलन बिगड़ जाने से उसका पैर फिसलने के कारण वह तालाब में गिर गया। जैसे ही इस घटना की जानकारी परिजनों को लगी सभी तालाब जाकर काफी खोजबीन करने की कोशिश करने लगे। लेकिन वह नहीं मिला। बताया जाता है कि दूसरे दिन अहले सुबह उसकी तलाश के लिए गोताखोर की टीम को लगाया गया। काफी मशक्कत के बाद करीब 8 बजे उसका शव तालाब से निकाला गया। इस संबंध में पूर्व मुखिया चंद्रदीप पासवान ने बताया कि मृत युवक शादीशुदा है एवं एक बेटी भी है। शव मिलते ही परिजनों की चीत्कार से पुरा वातावरण गमगीन हो गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी द्वारा कांवड़िया सेवा शिविर का हुआ आयोजन

बोकारो : रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी ने दिनांक ०४/०८/२०२४ को आई टी आई मोड़ और पिंडराजोड़ा के बीच शिविर लगाकर दामोदर एवं गरगा नदी से चिड़ियाधाम में शिव जी को जलाभिषेक हेतु जल लेकर जाते हुए कांवड़ियों के बीच प्रचुर मात्रा में फल, जूस और पीने के लिए मिनरल वॉटर का वितरण किया। रोटरी क्लब के करीब १५ सदस्यों की टीम ने इस शिविर में अपना नि:स्वार्थ योगदान दिया और मानव सेवा की दिशा में रोटरी की महत्वपूर्ण भूमिका को समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपनी अहम भूमिका का निर्वहन किया।

तीसरी सोमवारी पर आम्रेश्वर धाम में 70 हजार श्रद्धालुओं ने किया बाबा का जलाभिषेक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : पवित्र सावन महीने की तीसरे सोमवारी को क्षेत्र के प्रसिद्ध बाबा आम्रेश्वर धाम अंगराबारी सहित जिले के अन्य शिवालयों में जलाभिषेक और पूजा-अर्चना के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। 70 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने भोलनाथ का जलाभिषेक किया। स्वयंभू शिवलिंग पर जलाभिषेक के लिए दूर दराज क्षेत्रों से श्रद्धालु रविवार रात से ही यहां पहुंचने लगे थे। देर रात से ही मुख्य मंदिर के प्रवेश द्वार पर जलाभिषेक के लिए श्रद्धालुओं की कतारें लगनी शुरू हो गई थी। तड़के साढ़े तीन बजे जैसे ही मुख्य मंदिर और अन्य मंदिरों के पट खुले, पूरा वातावरण बोल बम और हर-हर महादेव के नारों से गुंजायमान हो उठा। इस दौरान घंटों कतार में खड़े भक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा था। मंदिर परिसर में शांति और सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस के जवान, एनसीसी कैडेट और प्रबंध समिति के सदस्य व्यवस्था को संभालते हुए भक्तों को कतारबद्ध मंदिर में प्रवेश कराते रहे। तड़के प्रारंभ हुए पूजन अर्चन का यह दौर पूरे दिन अनवरत जारी रहा। साथ ही बोल बम तथा हर हर महादेव के नारों से पूरा वातावरण गुंजायमान रहा। इस दौरान पुलिस प्रशासन के साथ ही बाबा आम्रेश्वर धाम प्रबंध समिति के अधिकारी व सदस्य भी दिन भर सक्रिय रहे। पूजा-अर्चना के बाद दूरदराज क्षेत्रों से आए श्रद्धालुओं ने धाम परिसर में लगे श्रावणी मेला का आनंद उठाया।

बाबा आम्रेश्वर धाम प्रबंध समिति के अध्यक्ष लाल ज्ञानेंद्रनाथ शाहदेव, महामंत्री महामंत्री मनोज कुमार के अलावा संतोष पोद्दार, श्रीपाल जैन, सुखदेव भगत, कैलाश भगत, आनंद वर्मा, अरुण कर, प्रेमचंद महतो, जगदीश नाग, उपेंद्र कश्यप, पहलाद कुमार, दुर्गा महतो, प्रेमानंद तिवारी, सुरेंद्र गुप्ता, रविकांत मिश्रा, ओम प्रकाश कुमार, दिलीप कर, सत्यजीत कुंडू, हीरा साहू, सुरेंद्र कुमार, केसरी कुमार, दीपक सिंह, गोविंद साहू, मोतीलाल साहू, रोशन भगत, नीरज पाढ़ी , नरेश साहू आदि प्रबंध समिति के पदाधिकारी व सदस्य पूरे दिन धाम परिसर में मौजूद रहकर व्यवस्था की निगरानी करते रहे।

उपायुक्त ने किया जलाभिषेक

उपायुक्त लोकेश मिश्रा सोमवार को माता-पिता के साथ आम्रेश्वर धाम पहुंचे। उन्होंने विधि-विधान के साथ भोलेनाथ का जलाभिषेक के बाद पूजा-अर्चना की और सुख-समृद्धि की कामना की। मौके पर उपायुक्त ने सभी को श्रावण मास की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि श्रावणी मेला के दौरान दूर दराज से श्रद्धालु आम्रेश्वर धाम पहुंचते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए सभी व्यवस्थाएं की गयी है, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हो। उन्होंने कहा कि सीसीटीवी एवं सुरक्षा व्यवस्था को दुरुस्त किया गया है।

अमन यादव को भाजयुमो प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए जाने पर कार्यकर्ताओं ने दी बधाई

चैनपुर : भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष शशांक राज ने अपनी टीम की घोषणा की जिसमें भाजयुमो की नई टीम में गुमला जिला के अमन यादव को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए गए। अमन यादव को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए जाने पर चैनपुर मंडल में खुशी का माहौल है। भाजयुमो मंडल अध्यक्ष शशि भूषण सिंह ने प्रदेश उपाध्यक्ष अमन यादव को बधाई देते हुए कहा कि पार्टी संगठन की मजबूती के लिए वह हमेशा तत्पर रहेंगे। वही मंडल के महामंत्री विक्की साहू ने कहा कि अमन यादव भाजपा के एक-एक कार्यकर्ता के लिए वह हमेशा तत्पर रहते हैं किसी भी प्रकार की परेशानी या पार्टी के संगठन को मजबूत करने के लिए वह हमेशा तत्पर रहे हैं आज पूरे चैनपुर मंडल की ओर से उन्हें शुभकामना और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं उन्हें भाजयुमो के प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए जाने पर युवा मोर्चा अध्यक्ष पूर्व सांसद प्रतिनिधि नीरज शर्मा, मंडल अध्यक्ष मनोहर बड़ाईक, अमित पांडे ,अरविंद मौर्य, बुधराम नायक ,राजेश भगत, बिरसुगोप सहित चैनपुर मंडल के सभी कार्यकर्ता एवं सामाजिक संगठनों ने बधाई दी एवं शुभकामनाएं दी है।

मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना से महिलाओं में काफी उत्साह दिख रहा है : फैयाज शाह

सिल्ली : रांची मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के अंतर्गत वार्ड शिविर आयोजन स्थल पर उपस्थिति के दौरान वार्ड नंबर 04 में फार्म भरने को लेकर महिलाओं में काफी उत्साह देखने को मिला साथ निरीक्षण के दौरान बड़गाईं अंचल अधिकारी शिवशंकर पांडेय जी ने सभी तरह के फार्म को लेने की अनुमति कम्प्यूटर ऑपरेटरों को दी, इस अवसर पर वार्ड पार्षद श्रीमती हुस्न आरा एवं झामुमो युवा नेता महताब अंसारी, काफी एक्टिव, निष्पक्ष एवं उत्साहित होकर लोगों की मदद करते नजर आए, जिसे देखकर ये स्पष्ट कहा जा सकता है, की मुख्यमंत्री माननीय हेमंत सोरेन जी की ये योजना साधारण परिवार की महिलाओं के लिए उम्मीद की एक किरण दिखाई पड़ती नजर आ रही है।

उपायुक्त ने टोटो स्थित लैंप्स का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : सोमवार को उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी द्वारा टोटो लेम्पस का निरीक्षण किया गया। वहीं टोटो लैंपस के सचिव द्वारा बताया गया कि इस वर्ष 24- 25 में लगभग 71 क्विंटल धान का बीज किसानों को 50% अनुदान पर दिया गया है. साथी किसानों के लिए सभी प्रकार का उर्वरक मिलता है जैसे (यूरिया डीएपी इत्यादि) जिसे किसानों को इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नही पड़ती।साथी किसानों को बिना ब्याज पर ऋण की राशि में खाद बीज दिया जाता है। साथी इस कैंपस में 50 एमजी का कोल्ड स्टोर है जिसमें

किसानों का सामान रखा जाता है। वही उपयुक्त द्वारा उपस्थित महिला समूह को बताया गया कि इस कोल्ड स्टोर का उपयोग किसान अपने फल सब्जी को रखने में करते हैं। इस दौरान वहां की एसएचजी की महिला समूह को किस तरह से आगे बढ़ाना है इस पर भी चर्चा किया गया। साथ ही दीदी को बिजनेस करने पर भी बताया गया । वही एक दीदी द्वारा बताया गया कि पिछले वर्ष मशरूम का खेती किया गया था इसमें दीदी को काफी मुनाफा हुई थी दीदी द्वारा बताया गया कि इस वर्ष भी समूह द्वारा मशरूम लगाया जाएगा। जिसमें जिला उद्यान तकनीकी विशेषज्ञ द्वारा बताया गया की दीदी को इस वर्ष मशरूम का बीज उपलब्ध कराया जाएगा। इस दौरान उपायुक्त द्वारा अन्य कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा हुई एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। इसमें जिला सहकारिता पदाधिकारी माधुरी बेक, जिला उद्यान तकनीकी विशेषज्ञ दीपक कुमार, जिला कृषि TA अजीत कुमार व अन्य उपस्थित थे।

धूमधाम से किया गया महादेव का पूजन व रुद्राभिषेक

रांची : एक्यूप्रेशर परिषद झारखंड शाखा टाटी सिल्वे रांची में देवों के देव महादेव का पूजन रुद्राभिषेक धूमधाम से किया गया एक्यूप्रेशर परिषद के डॉक्टर को एक्यूप्रेशर रन एक प्रोफेसर श्री एक्यूप्रेशर गौरव 10 अगस्त 2024 को कुशीनगर में अंतरराष्ट्रीय मिलन समारोह में दिया जाएगा इस उपलक्ष में देवों के देव महादेव का पूजन रुद्राभिषेक पंडित अरुण कुमार मिश्रा प्रोफेसर लखन मिश्रा के द्वारा वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ हुआ है इस अवसर पर एक्यूप्रेशर परिषद के सचिव डॉक्टर मधु स्वयं पांडे ने कहा कि देवों के देव महादेव की कृपा हम सभी पर ऐसे ही बरसाते रहे सभी भक्तजनों पर कृपा करें ताकि वह तन मन धन से स्वस्थ रहे कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रीति कुमारी ललिता कुमारी रिंकू महतो रामबालक सिंह अखिल पाठक सिद्धि देवी संगीता पोद्दार पिंकी देवी संदीप कुमार पांडे दीपक कुमार पांडे सुजीत ठाकुर शशि कुमार मुख्य जजमान राकेश सिंह एवं माधुरी पूजन के बाद महा आरती और खिचड़ी महा भोग प्रसाद का वितरण किया गया

सविता महतो की अध्यक्षता में हुई महिला बाल विकास समिति की विभागीय बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चांडिल : झारखंड विधानसभा के समिति कक्ष में सोमवार को महिला बालविकास समिति के विभागीय बैठक सभापति सविता महतो के अध्यक्षता में हुई। इस दौरान बैठक में राज्य के महिला बालविकास के सभी विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में सभापति ने राज्य स्तर पर सभी जिले में चल रहे आंगनबाड़ी केंद्र के बिस्तृत

जानकारी विभाग के अधिकारियो से मांगा। उन्होंने राज्य में चल रहे आंगनबाड़ी केंद्रकितने बंद है, कितने चालू है और कहा कहा केंद्र का भवन नहीं है और बच्चों के बीच बटने वाले पोषाहार का बिस्तृत जानकारी लेकर कोई जरुरी दिशा निर्देश भी दिए। साथ ही उन्होंने सभी आंगनबाड़ी केंद्र को सुचारु रुप से चलाने को कहा। साथ ही समिति के सदस्य सह विधायक कल्पना मुर्मू सोरेन ने भी अधिकारीयों को कोई जरुरी दिशा निर्देश दिए। बैठक में समिति के सदस्य सह विधायक सुनीता चौधरी भी शामिल थे।

उपायुक्त ने किया मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना का निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजना मुख्यमंत्री मंइया सम्मान योजना के तहत जिले के सभी पंचायतों एवं वार्डों में विशेष शिविर का आयोजन किया गया है, कैंप में उपस्थित सीएससी केंद्र के श्छए के द्वारा शिविर में सभी आवेदनों को ऑनलाइन अपलोड करने का कार्य निः शुल्क किया जा रहा है।इसी क्रम में आज सोमवार को उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने टोटो पंचायत एवं पंचायत सचिवालय में लगे शिविर का औचक निरीक्षण किया ।बताते चले कि मुख्यमंत्री मंइया सम्मान योजना के तहत जिले के सभी योग्य लाभुकों को योजना से आच्छादित किया जा सके इसके लिए दिनांक 3 अगस्त से लेकर 10 अगस्त तक सभी वार्डों एवं पंचायतों में शिविर लगाए गए हैं। शिविर के माध्यम से सभी आवेदन फार्म को ऑनलाइन

अपलोड किया जा रहा है। इस योजना के तहत 19 वर्ष से 49 वर्ष तक की महिलाओं को प्रति माह 1000 रुपए का सहयोग राशि प्रदान किया जाएगा । आज उपायुक्त ने भी टोटो स्थित पंचायत भवन में कैंप के संचालन व्यवस्था की पुष्टि करने के लिए पहुंचे।उन्होंने श्छए से अब तक प्राप्त हुए आवेदनों की जानकारी प्राप्त की। साथ ही उन्होंने कहा कि सभी योग्य लाभुकों को योजनाओं का लाभ मिल सके इसके लिए सभी को अच्छे से कार्य करने का निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि लाभुकों को किसी प्रकार की समस्या ना हो एवं आसानी से उनका कार्य कर सके उसके लिए लाभुकों का सहयोग करें।

जनजातियों एवं दिव्यांग बच्चों के लिए किया जाएगा सेवा सह सशक्तिकरण शिविर का आयोजन

गुमला : जिले में 24 अगस्त को के.ओ. कॉलेज में आदिम जनजातियों एवं दिव्यांग बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विधिक सेवा सह सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया जाएगा । जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश, झारखंड उच्च न्यायालय एवं कार्यपालक अध्यक्ष श्री सुजीत नारायण आरसी प्रसाद एवं न्यायाधीश, झारखंड उच्च न्यायालय एवं अध्यक्ष, झारखंड उच्च न्यायालय विधिक सेवा समिति आर. मुखोपाध्याय का जिले में आगमन होगा। उक्त कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर आज सोमवार को उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में जिले के संबंधित पदाधिकारियों के साथ विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सभी अधिकारियों को लाभुकों की सूची उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया।

झारखंडी भाषा खातीयान संघर्ष समिति रांची जिला कमेटी का हुआ विस्तार

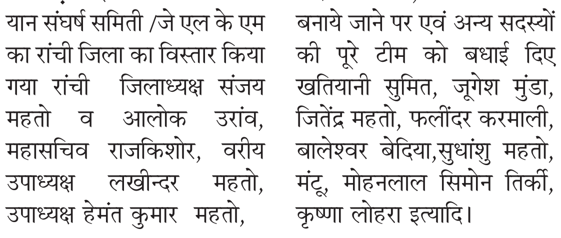

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : झारखंडी भाषा खाती यान संघर्ष समिती /जे एल के एम का रांची जिला का विस्तार किया गया रांची जिलाध्यक्ष संजय महतो व आलोक उरांव, महासचिव राजकिशोर, वरीय उपाध्यक्ष लखीन्दर महतो, उपाध्यक्ष हेमंत कुमार महतो, सुरजनारायण, कार्यकारणी सदस्य मार्शल, बिमल जी को बनाये जाने पर एवं अन्य सदस्यों की पूरे टीम को बधाई दिए खतियानी सुमित, जूगेश मुंडा, जितेंद्र महतो, फलींदर करमाली, बालेश्वर बेदिया,सुधांशु महतो, मंटू, मोहनलाल सिमोन तिर्की, कृष्णा लोहरा इत्यादि।

मौसेरे भाई को कुदाल से मार कर हत्या करने वाला आरोपी गिरफ्तार

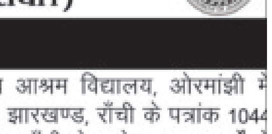

गुमला : गुमला अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी (एसडीपीओ) सुरेश प्रसाद यादव ने अपने कार्यालय कच्छ में एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर मीडिया कर्मियों को बताया की 04 /07/2024 को एक सूचना मिली कि सिसई थाना स्थित सोगड़ा ग्राम के समक्ष एक पुरुष का शव जिसका सर कुदाल से कटकर हत्या किया गया है और वह उक्त स्थान पर पड़ा हुआ हैं, उक्त सूचना मिलने ही सिसई थाना पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुयें अपने दलबल के साथ उक्त घटनास्थल पर सिसई थाना प्रभारी संदीप कुमार यादव, पुअनि अजय कुमार, पुअनि प्रमोद कुमार, रिजर्व गार्ड के जवान आरक्षी नरेंद्र सरदार और आरक्षी सुबोध गोप उक्त घटनास्थल पर पहुंचकर छानबीन और पुछताछ शुरू करते हुवे, उक्त शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु गुमला सदर अस्पताल स्थित पोस्टमार्टम हाउस भेजवाया गया।

कार्यालय समेकित जनजाति विकास अभिकरण, राँची
(समाहरणालय भवन-ब्लाक "बी" राँची।)

अति-अल्पकालीन निविदा

वित्तीय वर्ष 2024–25 में राँची जिला अन्तर्गत कल्याण विभागीय आश्रम विद्यालय, ओरमांझी में उपस्कर/ बर्त्तन अदि सामग्रियों की आपूर्ति हेतु आदिवासी कल्याण आयुक्त, झारखण्ड, राँची के पत्रांक 1044 दिनांक 26.06.2024 के अन्तर्गत निम्न सामग्रियों की क्रय/आपूर्ति हेतु उपायुक्त राँची के आदेशानुसार शर्त्तो के साथ मुहरबंद निविदा दिनांक 13.08.2024 के अपराह्न 02:00 बजे तक समेकित जनजाति विकास अभिकरण राँची (ITDA) कार्यालय कमरा नं0–413 में आमंत्रित किया जाता है। निविदा उसी दिन अपराह्न 3:00 बजे अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय कक्ष में जिला क्रय समिति के समक्ष खोली जायेगी। जिसमें निविदादाता या उनके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधि उपस्थित रह सकते हैं।

निविदा की शर्ते एवं सामगियों की विवरणी राँची जिला के बेवसाईट https://ranchi.nic.in/hi/notice पर अथवा ITDA कार्यालय, राँची के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

परियोजना निदेशक
समेकित जनजाति विकास अभिकरण राँची।

PR.NO.331911 Welfare(24-25):D

लगातार हो रही बारिश के कारण डायवर्सन बहा, गांव का संपर्क टूटा

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित बिशुनपुर प्रखंड में डायवर्सन बहने के कारण नरमा पंचायत और संबंधित पंचायत के आसपास के सभी गांव टापू बन गया हैं, और उक्त पंचायत एवं गांव के लोगों का आवा गमन पूर्णतः बाधित होने के कारण विशेषकर छात्र-छात्राओं की पढ़ाई भी बाधित हो रही है। और गंभीर रूप से पीड़ित रोगियों को अस्पताल ले जाने में भी काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। जबकि जनप्रतिनिधियों द्वारा संबंधित संवेदक को डायवर्सन बनाते वक्त मजबूत डायवर्सन बनाने की हिदायत दी गई थी। फलस्वरुप नरमा पंचायत के समस्त गांव का संपर्क टूट गया है, जिसे जनप्रतिनिधियों ने जल्द ठीक करने की मांग की गई हैं।

OFFICE OF THE DEPUTY COMMISSIONER, LATEHAR
District Planning Office, Latehar, 829206
Website: www.latehar.nic.in

Notice Inviting
Request for Proposals

Selection of Agency for "supply, installation, testing & commissioning of 100 KVA, 35KVA & 20 KVA Diesel Silent Generator (DG) setwith all accessories" under Office of District Planning Office, Latehar Govt. of Jharkhand

RFP No. .... Date –05-08-2024

Supply, Installation, Testing & Commissioning at site of one 100 KVA Diesel Silent Generator set, One 35 KVA Disel Generator Set & One 20 KVA Disel Generator Setwith required accessories.

S.no	Particular	Details
1.(a)	Name of the work	"Request for Proposal (RFP) for the Supply, Installation, Testing & Commissioning at site of one 100 KVA Diesel Silent Generator set,One 35 KVA Disel Silent Generator Set & One 20 KVA Disel Silent Generator Set with required accessories."
(b)	Exhaust Emission norms	The generator set shall be Central Pollution Control Board(CPCB) compliant recent norms and the Bidder shall submit the relevant papers alongwith tender documents as a part of Technical Bid to prove the same.
(c)	Pre-Qualification requirement (PQR) of bidders	The Bidder shall be engaged in supply, Installation, Testing & Commissioning of Diesel Silent Generator set with a capacity of 100 KVA ,35 KVA, 20KVA and shall give self-declaration in this regard while submitting Technical Bid. Also, the Bidder shall enclose the list of suppliers, to whom the supplies were made in the last three years while submitting the Technical Bid. District Administration/Tender Committee Lateharreserve the right to call for documentary proof, if required. Refer to the Annexure-B for details about PQR and documents to be attached with technical bid.
2	Date of Issue of RFP	05-08-2024
3	Last Date for submission of Proposal	12-08-2024
4	Date of opening of Technical Proposal	13-08-2024
5	Date of opening of Financial Proposal	13-08-2024
6	Time allowed for Completion	02 Months
7	Earnest money deposit EMD) (Refundable) & Bid Processing Fee (Non-refundable)	EMD Rs.50,000 (Fifty thousand Rupees Only/-) Refundable & Tender Fees Rs 5,000 (Five Thousand Rupees Only/-) (Non-Refundable) Both DD will be in favour of District Planning Officer, Latehar Payable at Latehar. EMD and tender Fee submission is exempted for MSME of Jharkhand, MSME registration certificate with DIC approval certificate in same manufacturing trade is must require for bidder. If bidder is not a MSME in same trade will not get the Exemption benefit.
8	Address at which the tenders (Hard Copies) are to be submitted:	District Planning Office, Latehar, Jharkhand
9	Place of opening tenders:	District Planning Office, Latehar, Jharkhand
10	Mode of submission	Speed post/ Registered Post/ By Hand only to the address as specified above during office hours only. Submission of the bid through any other mode or late submission of bids will be rejected.
11	Method of Selection	After qualifying in technical bid financial bid will be open and L-1 will be awarded.
12	Date of opening of Technical Bid (Envelope-1)	The technical bid for the tender shall be opened on 13th August 2024 at 11:00 AM at the address as under: The District Planning Office, District Collectrate Office Distt: Latehar, Jharkhand-829206

Note:
1. The sealed first envelope containing PQR documents & EMD shall be super scribed as "Tender for the Supply, Installation, Testing & Commissioning of Diesel Silent Generator Set – PQR documents".
2. The sealed second envelope shall be super scribed as "Tender for the Supply, Installation, Testing & Commissioning of Diesel Silent Generator Set Financial Bid" and the said envelope shall contain with all financial details of bid.
3. The one envelope containing PQR & EMD and second sealed envelope containing financial bid i.e. both these envelopes shall be placed in the big envelope super scribed as "Tender for the purchase of 100 KVA, 35 KVA, 20 KVA Generator Set".

1. Complete Bid Document, terms & conditions are available on official website of the district: - https://latehar.nic.in/

District Planning Officer,
Latehar

PR 331915 (Planning and Development) 24-25 (D)

कार्यालय, जिला उद्यान पदाधिकारी, चतरा
संयुक्त कृषि भवन, तपेज, चतरा पिन कोड–825401
e-mail : atmactr@rediffmail.com

किसान भाइयों के लिए योजना संबंधी आवश्यक सूचना

विभागीय स्वीकृत्यादेश सं0 40 दिनांक 16.07.2024 के आलोक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए उद्यान प्रभाग में संचालित राज्य योजना "राज्य उद्यान विकास की योजना" के कार्यान्वयन हेतु जिले के इच्छुक कृषकों से आवेदन की माँग की जाती है:–

राज्य उद्यान विकास की योजना

क्र0 सं0	कार्य अवयव	OSP के तहत		SCSP के तहत (सिर्फ SC/ST के लिए)		अनुदान	कृषक अंशदान (प्रति हे0/सं0/ए0)
		भौतिक	वित्तीय (रू0 लाख में)	भौतिक	वित्तीय (रू0 लाख में)		
1	बागवान मित्र/उद्यान मित्रों/कृषकों को 06 दिवसीय उद्यानिकी प्रशिक्षण (सं0 में)	200	7.56	80	3.024	-	-
2	युवाओं को 25 दिवसीय(200 घंटे) माली प्रशिक्षण (सं0 में)	10	1.75	04	0.70	-	-
3	मिर्चा की खेती (हे0 में)	20	2.40	08	0.96	12000/-Ha.	18000/-Ha
4	ओल की खेती (हे0 में)	20	8.00	08	3.20	40000/-Ha	260000/-Ha
5	अदरख की खेती (हे0 में)	15	11.70	05	3.90		
6	कीट रहित सब्जी उत्पादन इकाई	10	22.50	03	6.75	225000.00	75000.00
7	खुले वातावरण में फूलों की खेती (हे0 में)	30	6.00	10	2.0	20000/-Ha	20000/-Ha
8	टिशु कल्चर केला की खेती (हे0 में)	09	5.40	02	1.20	131600/-Ha	60,000/-Ha
9	गृह वाटिका की स्थापना (प्रति ईकाई 25 डिसमील)	25	10.00	10	4.00	40000 #0	
10	सब्जी की तकनीकी खेती हेतु प्रत्यक्षण (हे0 में)	250	25.00	80	8.00	10000/-Ha	
11	मशरूम उत्पादन (Button&Oyster)	2490	3.2868	750	0.990	3960/ अधिक दाग (30 बैग हेतु)	
12	मशरूम उत्पादकों के 05 दिवसीय प्रशिक्षण	83	4.15	25	1.250	-	
13	पपीता की खेती (संख्या में)	10000	1.00	5000	0.50	5/- (पौध उत्पादन) 5/- (लगाने के 2 माह उपरांत जीवित रहने पर)	
14	टिशु कल्चर स्ट्रोबेरी की उन्नत खेती (हे0 में)	15	37.50	05	12.50	250000/-Ha	275365/-Ha
15	पॉली हाउस की इकाई	02	15.90	-	-	795000/-	265000.00
16	सैपलिंग नर्सरी– गुणवत्तायुक्त सब्जी, फूल, फल, पौध बिचड़ा उत्पादन (सं0 में)	20	45.00	10	22.50	225000.00	75000.00

उपर्युक्त योजनाएँ अनुदान पर आधारित है। जिसका उल्लेख संबंधित कार्य अवयव में किया गया है। कृषक अंशदान की राशि योग्य एवं चयनित लाभुक को वहन करना होगा।

इन योजनाओं का लाभ लेने हेतु इच्छुक कृषक जिला उद्यान कार्यालय, चतरा या प्रखंड में अवस्थित एटिक सेन्टर (कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र) से आवेदन प्राप्त कर विहित प्रपत्र में पूर्ण रूप से आवेदन पत्र भरकर एवं पंचायती राज संस्था के जनप्रतिनिधि से अनुशंसा करा कर प्रखंड में अवस्थित एटिक सेन्टर (कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र) में दिनांक 12.08.2024 को सायं 5 बजे तक आवेदन पत्र जमा कर सकते है। BPM JSLPS BTM /ATM निश्चित रूप से दिनांक 12.08.2024 तक प्राप्त आवेदकों को अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में उपलब्ध कराएगें। आवेदन पत्र में सभी आवश्यक कागजात यथा लाभुक का फोटोग्राफ, आधार कार्ड, शैक्षणिक प्रमाण पत्र बैंक पासबुक छाया प्रति, भू–स्वामित्व प्रमाण पत्र की छाया प्रति अथवा खतियान,शपथ पत्र, जमीन का अद्यतन रसीद, आवेदक के हिस्से में पड़ने वाले भूमि का कागजात के संबंध में मुखिया से प्राप्त वंशावली संलग्न होना आवश्यक है।

आवेदन पूर्ण रूप से भरा हुआ तथा वांछित कागजातों के साथ प्राप्त होने पर ही लाभुक चयन के लिए विचार किया जायेगा। अपूर्ण आवेदन अस्वीकृत किए जाएगें।

अनुदान हेतु लाभुक चयन के लिए निम्नांकित न्यूनतम मानदण्ड आवश्यक होगा–

01. आवेदन पत्र पूर्ण रूप से भरा हुआ एवं सभी कागजात के साथ हो।
02. आवेदन पत्र की प्रति पर मुखिया अथवा अन्य जनप्रतिनिधि तथा BAO/BTM/VLW/ATM/BPMJSLPS के द्वारा अनुशंसित किया होना आवश्यक है।
03. पिछले तीन वर्षों में जिन लाभुक का चयन नहीं किया गया है, केवल उनका चयन किया जाएगा।
04. पिछले तीन वर्षों में जिन ग्रामों का चयन नहीं किया गया है, उन ग्रामों के चयन में प्राथमिकता दी जाएगी।
05. आवेदक के पास पर्याप्त निजी भूमि हो तथा वे पूर्व कई वर्षों से सब्जी, फल, फूल आदि की खेती करते आये हो।
06. कृषक अंशदान राशि स्वयं व्यय करने हेतु इच्छुक हो।
07. योजना कार्यान्वयन में SC,ST लघु एवं सीमांत कृषक,कृषक समूह FPO / प्रगतिशील कृषकों / महिला स्वयं सहायता समूह / सिंचाई सुविधा युक्त कृषकों को प्राथमिकता दी जाएगी तथा लाभुकों के चयन में टोकन प्रणाली को अपनाते हुए चयनित की जाएगी।
08. सब्जी, मिर्चा, ओल एवं फूल की खेती का क्रियान्वयन समूह खेती (Cluster farming) के द्वारा की जाएगी। सभी कार्य अवयवों के क्रियान्वयन कृषक समूह / महिला स्वयं सहायता समूह (JSLPS) के द्वारा किया जाएगा।
09. योजना का कार्यान्वयन में प्राथमिकता ग्रामीण विकास विभाग के अधीन JSLPS से प्राप्त कृषक समूह / महिला स्वयं सहायता समूह की सूची के आधार पर किया जाएगा। यदि JSLPS से लक्ष्य के अनुरूप स्वयं सहायता समूह की विवरणी उपलब्ध नहीं हो पाती है तो अन्य माध्यम से गठित कृषक समूह / महिला स्वयं सहायता समूह को आच्छादित किया जा सकेगा।
10. ऊपर वर्णित सभी योजनायें चतरा जिले का लक्ष्य है, जिसका प्रखंडवार लक्ष्य निर्धारित है।
11. सभी योजना पहले आओ पहले पाओ पर आधारित है।

सभी योजनाओं की विस्तृत जानकारी जिला उद्यान कार्यालय, चतरा एवं एटिक सेन्टर पर प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है। योजना का लाभ लेने हेतु विहित आवेदन पत्र में जिला उद्यान कार्यालय, चतरा एवं प्रखंड के एटिक सेन्टर / एग्री क्लिनिक चतरा सिमरिया पर उपलब्ध है। आवेदन पत्र स्वीकार करने की निर्धारित तिथि 12.08.2024 के उपरान्त कोई आवेदन स्वीकार नहीं की जाएगी। योजना के लाभ हेतु लाभुक का चयन सर्वाधिक उपयुक्त कृषक को किया जाएगा जिसमें उनके भूमि, खेती आदि का निरीक्षण तथा जांच के उपरान्त किया जा सकेगा।

जिला उद्यान पदाधिकारी,
चतरा।

PR.NO.331838 Agriculture(24-25):D

मनु भाकर क्यों बन गयीं सभी खिलाड़ियों के लिए आदर्श

आर.के. सिन्हा

सारी दुनिया ने मनु भाकर को बीत दिनों मीडिया को इंटरव्यू देते हुए देखा। इतनी छोटी सी उम्र में वह कितने धीर-गंभीर अंदाज में अपनी बात रखती है। वह गीता का उदाहरण देते हुए सफलता के मर्म को समझाती है। मनु भाकर हिन्दी और अंग्रेजी में पूरे विश्वास के साथ सवालों के जवाब देती है। यही सही शिक्षा सिखाती भी है।

निशानेबाज मनु भाकर को अब सारा देश जानता है। पेरिस ओलंपिक खेलों में दो कांस्य पदक जीतने वाली मनु भाकर 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में भी चौथे स्थान पर रहीं। उनके पेरिस ओलंपिक खेलों में अभूतपूर्व प्रदर्शन से सारा देश प्रसन्न है। मनु भाकर सिर्फ अचूक निशानची ही नहीं हैं। वो तो देश के अधिकतर खिलाड़ियों के लिए भी एक तरह से प्रेरणा हैं। उन्होंने अपनी शिक्षा पर भी हमेशा भरपूर ध्यान दिया। हरियाणा के झज्जर शहर की रहने वाली मनु भाकर ने 10 वीं और 12 वीं की बोर्ड की परीक्षाओं में 90 पर्सेंट से अधिक अंक अर्जित किए। उसके बाद दिल्ली विश्वविद्लाय के लेडी श्रीराम कॉलेज (एलएसआर) से पालिटीकल साईंस आनर्स की डिग्री भी ली। एल० एस० आर० देश का चोटी का महिला कॉलेज माना जाता है। नोबल पुरस्कार विजेता और म्यांमार की शिखर नेता आंग सान सू ची यू ने 1964 में इसी लेडी श्रीराम कॉलेज से ग्रेजुएशन किया था। मुन भाकर का लेडी श्रीराम कॉलेज में पढ़ना इस बात की गवाही है कि उन्होंने अपनी पढ़ाई पर भी हमेशा फोकस रखा। इधर बीते कुछ सालों से हमारे अपने देश के बहुत सारे नामवर खिलाड़ियों ने स्कूल के बाद आगे की पढ़ाई नहीं की। ये कोई बहुत आदर्श स्थिति नहीं मानी जा सकती। आप कितने ही बड़े खिलाड़ी क्यों न हो जाएं, पर आप बेहतर इंसान और नागरिक तो ढंग से पढ़-लिखकर ही बनते हैं। महान फुटबॉलर चुन्नी गोस्वामी, क्रिकेटर अजीत वाडेकर और सुनील गावस्कर उन खेलों की दुनिया के शिखर नाम रहे हैं, जिन्होंने खेल के मैदान में जौहर दिखाते हुए अपनी पढ़ाई को नजरअंजाद नहीं किया। चुन्नी गोस्वामी और अजीत वाडेकर तो स्टेट बैंक में अहम पदों पर इसलिए पहुंचे, क्योंकि इनके पास सही डिग्रियां थीं। सुनील गावस्कर बीते पांच दशकों से सक्रिय हैं। पहले क्रिकेटर के रूप में और बाद के दशकों में बतौर लेखक और कमेंटेटर के। उनके पास क्रिकेट की गहरी समझ के अलावा शब्दों का भंडार भी है। वैसे खेलों में बेहतर प्रदर्शन करने के आधार पर नौकरी तो बहुत सारे खिलाड़ियों को मिल ही जाती हैं। माफ करें, कई कथित खिलाड़ियों को जाली प्रमाणपत्रों के आधार पर भी नौकरियां मिलती रही हैं। यह भी सबको पता है।

सारी दुनिया ने मनु भाकर को बीत दिनों मीडिया को इंटरव्यू देते हुए देखा। इतनी छोटी सी उम्र में वह कितने धीर-गंभीर अंदाज में अपनी बात रखती है। वह गीता का उदाहरण देते हुए सफलता के मर्म को समझाती है। मनु भाकर हिन्दी और अंग्रेजी में पूरे विश्वास के साथ सवालों के जवाब देती है। यही सही शिक्षा सिखाती भी है। आप पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के अधिकतर खिलाड़ियों को देख लें। जावेद मियांदाद, इंजमाम उल हक, शोएब अख्तर जैसे मशहूर खिलाड़ियों ने खेल के मैदान में भले ही बेहतरीन प्रदर्शन किए हों, पर वे जब बोलते हैं तो सच में बहुत अफसोस होता है कि बेहतर शिक्षा ना मिलने के कारण वे अपने व्यक्तित्व निर्माण में कितना पिछड़ गए। वे इंटरव्यू देते वक्त पूरी तरह से सड़क छाप ही लगते हैं।

बेशक, शिक्षा ही जीवन का आधार है और बिना शिक्षा के मनुष्य का जीवन अर्थहीन व दिशाहीन हो जाता है। एक सफल जीवन में सार्थक शिक्षा का विशेष महत्व होता है। शिक्षा जीवन का आधार है, और शिक्षा से ही मनुष्य अपने जीवन में आगे बढ़ता है, सही गलत में अंतर कर पाता है। शिक्षा और संस्कार एक-दुसरे के पूरक हैं। अगर आपके संस्कार सही है तो आपकी शिक्षा भी सही दिशा में जाएगी। मनु भाकर और दुसरे खिलाड़ियों के कोचों का दायित्व है कि वे युवा पीढ़ी को सही मार्ग दिखाएं, ताकि आने वाला कल अच्छा हो। उन्हें शिक्षा के महत्व की जानकारी दें।

मनु भाकर के अलावा भी हमारे यहां बहुत सारे खिलाड़ी साबित करते रहे हैं कि खेलों में सफलता के साथ-साथ पढ़ाई करना भी संभव है। यह सट है कि पेशेवर खिलाड़ी बनने के लिए बहुत समर्पण और मेहनत चाहिए। इसके अलावा, व्यक्ति को अपने खेल के शिखर पर पहुंचने के लिए बहुत कुछ त्याग करना पड़ता है। तमाम कठिनाइयों और संघर्षों के बीच, अधिकांश एथलीटों के लिए पढ़ाई पीछे छूट जाती है। पर इस तरह के खिलाड़ियों की भी कोई कमी नहीं है, जिन्होंने अपने खेल और पढ़ाई के बीच सही संतुलन बनाया और दोनों क्षेत्रों में कामयाबी हासिल की है। ये व्यक्ति बौद्धिक और शारीरिक शक्ति का शानदार उदाहरण हैं।

भारतीय क्रिकेट टीम के हाल तक कोच रहे राहुल द्रविड़ को दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमियों को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने सभी प्रारूपों में 23, 000 से अधिक रन हैं। राहुल द्रविड़ ने कॉमर्स में स्नातक की डिग्री भी हासिल की है, जिसे उन्होंने बैंगलोर के सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ कॉमर्स से प्राप्त किया। भारतीय क्रिकेट टीम के लिए चुने जाने से पहले, वह एमबीए की पढ़ाई कर रहे थे। कर्नाटक और भारतीय टीम में राहुल द्रविड़ के साथी अनिल कुंबले ने सभी प्रारूपों में 900 से अधिक विकेट लिए हैं और टेस्ट और वनडे क्रिकेट में भारत के सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। कुंबले भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान और कोच भी रहे हैं। उनके पास मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री है।

अब शतरंज के महान खिलाड़ी विश्वनाथन आनंद की बात कर लेते हैं। विश्वनाथन आनंद पहले भारतीय शतरंज ग्रैंडमास्टर हैं। वह पांच बार के विश्व शतरंज चैंपियन हैं और उन्हें शतरंज के सर्वकालिक महानतम खिलाड़ियों में से एक माना जा सकता है। शतरंज के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों ने उनकी शिक्षा को बाधित नहीं किया। उनके पास चेन्नई के लोयोला कॉलेज से वाणिज्य में स्नातक की डिग्री है। यह हरेक इंसान को समझना होगा कि हमारे जीवन में शिक्षा का क्यों इतना महत्व है और हर व्यक्ति को शिक्षित होना क्यों जरूरी है? सबसे जरूरी बात यह है किशिक्षा हमें निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षित लोग अपने जीवन के बारे में बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। इसके अलावा, शिक्षा हमें समाज में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम बनाती है। शिक्षित लोग अपने आसपास की दुनिया को बेहतर बनाने में योगदान दे सकते हैं। शिक्षा का कोई विकल्प नहीं है। मनु भाकर यह साबित करती है कि हरेक इंसान के लिए शिक्षा कितनी अहमियत रखती है।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

संपादकीय

मुकदमेबाजी में समझौता

भारत के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस ड़ीवाई चंद्रचूड़ ने दोटूक कहा है कि लोग अदालतों से ''इतने तंग' आ गए हैं कि वे बस समझौता चाहते हैं। वे कहते हैं कि बस, अदालत से दूर करा दीजिए। जस्टिस चंद्रचूड़ विशेष लोक अदालत सप्ताह के दौरान शनिवार को एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। वैकल्पिक विवाद निवारण तंत्र के रूप में लोक अदालतों की भूमिका पर प्रकाश ड़ालते हुए उन्होंने कहा कि लोगों में इस प्रकार की भावना उभरना बतौर जज हम लोगों के लिए गहन चिंता का विषय है। बेशक, लोगों का अदालती मामलों से त्रस्त होकर छुटकारा पाने उत्कट इच्छा न्याय व्यवस्था के लिए कोई अच्छी बात नहीं है। इससे संदेश यह निकलता है कि व्यवस्था लोगों की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर पा रही है। और इसलिए उन्हें मजबूरी में मामलों में समझौता करने की राह चुनना बेहतर लगता है। समझौता कोई न्याय नहीं हैƒ बल्कि मजबूरी में किया गया उपाय है, जो समाज में पहले से मौजूद असमानताओं को ही दशार्ता है। जैसा कि प्रधान न्यायाधीश ने भी इंगित किया है कि यह स्थिति अपने आप में सजा है। लोक अदालत की अवधारणा इस स्थिति से निजात दिलाती हैं जहां आपसी समझौते और सहमति से मामलों को सुलटाया जाता है और कोई भी अपने आप को मजबूर या न्याय से वंचित हुआ नहीं पाता। लोक अदालत से मामले का निस्तारण होने पर फैसले के खिलाफ अपील नहीं की जा सकती। सबसे अच्छी बात यह है कि फैसला परस्पर सहमति के आधार पर किया जाता है। कहना न होगा कि तमाम मामले ऐसे होते हैं, जिन्हें आपसी सहमति से सुलझाया सकता है। सबसे बड़ा तो यह कि लोक अदालत के माध्यम से न्याय दिया जाना अदालतों पर मुकदमों के भार को कम करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। यहां फैसला किसी भी रूप में थोपा हुआ करार नहीं दिया जा सकता। इसलिए जरूरी है कि लोक अदालत की अवधारणा को संस्था के रूप मजबूत किया जाए। न्याय की पहुंच आम नागरिकों तक सुनिश्चित करने की बात हमारे संविधान में निहित है, लेकिन नौबत यह है कि आम जन न्याय पाने की बजाय हलकान ज्यादा हो जाता है। यह स्थिति लोकतांत्रिक समाज में स्वीकार्य नहीं हो सकती। जिस समाज में आम जन को न्याय पाने में हलकान होना पड़ जाए उसे किसी भी सूरत में अभीष्ट या आदर्श समाज नहीं कहा जा सकता।

गुरुकुल की छात्राओं के साथ संघ प्रमुख का अनूठा संवाद

कृष्णमोहन झा

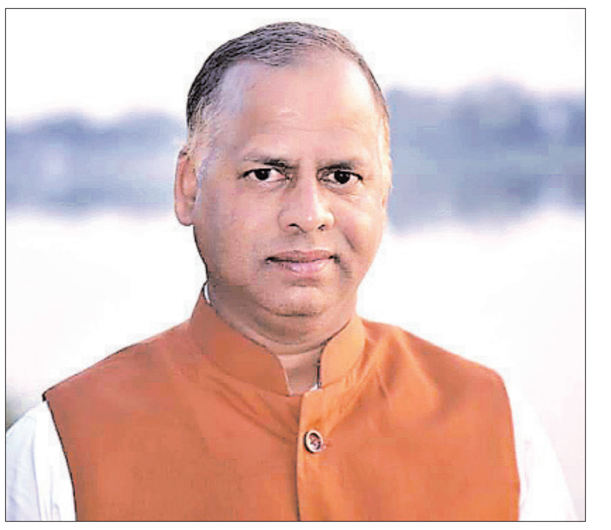

श्रीमद दयानंद कन्या गुरुकुल महाविद्यालय अमरोहा की छात्राओं को गत दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत से संवाद करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह उनके लिए अनूठा अनुभव था जब सरसंघचालक ने सहज सरल बोधगम्य भाषा में उनके मन की जिज्ञासा को शांत किया। छात्राएं प्रश्न पूछ रही थी और सरसंघचालक उनके प्रश्नों का इस तरह उत्तर दे रहे थे मानों उनके और छात्राओं के बीच सामान्य वातार्लाप चल रहा हो। छात्राओं को निःसंकोच अपने प्रश्न पूछने की अनुमति थी और मोहन भागवत भी चेहरे पर स्मित हास्य के साथ पूरी तरह सहज होकर उनके हर प्रश्न का जबाब दे रहे थे। छात्राओं को पल भर के लिए भी यह आभास नहीं हुआ कि उन्हें आज विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति से रूबरू होने का सौभाग्य मिला है। संघ प्रमुख की व्यस्तता के कारण इस अनूठे संवाद का सिलसिला यद्यपि आधे घंटे तक ही जारी रह सका परन्तु श्रीमद दयानंद कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की छात्राओं के लिए यह यादगार अनुभव था। छात्राओं ने सरसंघचालक से धर्म, अध्यात्म, राष्ट्र भक्ति, नारीशक्ति सहित अनेक विषयों पर आधारित प्रश्न पूछे और और उनकी हर जिज्ञासा का सुंदर समाधान संघ प्रमुख ने किया। जब एक छात्रा ने उनसे प्रश्न किया कि आप सरसंघचालक होने के साथ देश के प्रधानमंत्री व अन्य वरिष्ठ पदों को प्राप्त कर सकते थे। आपने ऐसा क्यों नहीं किया तो संघ प्रमुख ने कहा कि मेरे साथ यहां जो कार्यकर्ता बैठे हैं ,सभी ऐसे हैं। हम सब यहां कुछ होने के लिए नहीं बल्कि देश की सेवा करने के लिए आए हैं। किसी भी स्वयं सेवक से पूछो वह शाखा चलाने की इच्छा जताएगा। उसके लिए संघ का आदेश सर्वोपरि है। एक अन्य छात्रा का प्रश्न था कि अर्जुन के बलशाली होने पर भी श्रीकृष्ण के उपदेश की आवश्यकता पड़ी थी परन्तु आज उनके अभाव में क्या गीता उपदेश देने में सफल हो पाएगी। इस पर संघ प्रमुख ने उसे सरल शब्दों में समझाते हुए कहा कि श्रीकृष्ण सत्य हैं। जो सत्य है उसका अभाव नहीं होता। असत्य का कहीं भाव नहीं होता। भारत ळ्त्रमें योगेश्वरों की कभी कमी नहीं रही है। न पहले थी न आज है। धनुर्धर पार्थ चाहिए। ऐसे लोग चाहिए जो कर्तव्य पथ में धनुष उठाने के लिए तैयार रहें। गीता एक जीवन है। भारत के साथ सनातन संस्कृति बढ़ रही है। भारत चार कदम चला तो दुनिया को लगा कि भारत बढ़ी शक्ति बन रहा है। एक छात्रा के मन में संघ प्रमुख से जीवन के उन संघर्षों को जानने की उत्सुकता थी कि जिन पर विजय प्राप्त करके वे एक सफल व्यक्ति बने। इस प्रश्न के उत्तर में मोहन भागवत ने कहा कि मेरे बारे में सभी को जानने की जिज्ञासा है। ऐसा मैं अकेला नहीं हूं। संघ के सभी कार्य कर्ता ऐसे ही होते हैं। संघर्ष क्या है। अहंकार को हावी न होने दें। हम अपने मन बुद्धि और शरीर पर वास्तविकता का आवरण करें। एक दूसरे के सहायक बनें। संघ के विस्तार में महिलाओं की भूमिका से जुड़े प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि संघ में यह सीधे तौर पर नहीं दिखती लेकिन पर्दे के पीछे बहुत बड़ी भूमिका है। संघ के चार हजार स्वयं सेवक अविवाहित हैं और लाखों स्वयंसेवक गृहस्थी में रहकर संघ के काम कर रहे हैं। उनके घर की माताएं बहनें संघ के लिए समर्पित होकर काम करने देती हैं इसलिए कर पाते हैं। मातृशक्ति के लिए संघ की राष्ट्र सेविका समिति की नौ हजार शाखाएं समाज के लिए काम कर रही हैं। संघ का काम नारियों को उन्नत नहीं सक्षम बनाना है। मोहन भागवत एक छात्रा के इस प्रश्न पर मुस्कुरा उठे कि आपके नाम के दोनों शब्द ईश्वर का स्मरण कराते हैं। यह नाम रखने के पीछे क्या रहस्य है। भागवत ने कहा कि यह परिजनों का दिया नाम है। भागवत मेरे कुल का है जो बुजुर्गों का दिया हुआ है। भक्ति का प्रचार करने वाले भागवत कहलाते हैं। हमारे कुल में भी ऐसे रहे होंगे। मैं तो देशभक्ति का प्रचार करता हूं। मैं देश व देव में अंतर नहीं मानता। सरसंघचालक एक छात्रा के इस प्रश्न से बहुत प्रभावित हुए कि देश व धर्म में किसे ऊपर स्थान देना चाहिए और क्या धर्म उन्नति और देश उन्नति अलग-अलग हैं। इस प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा कि नहीं,सब एक हैं।जो दुनिया के समय से चलता आया है वह सनातन धर्म है। सत्यार्थ का प्रकाश दिल में हो हम देश हित के लिए काम करते रहें।मोहन भागवत ने छात्राओं के साथ संवाद कार्यक्रम के पूर्व महाविद्यालय में आयोजित यज्ञ में भाग लिया और नवनिर्मित भवन उद्घाटन किया। उन्होंने महाविद्यालय की 134 छात्राओं के उपनयन संस्कार के बाद उन्हें आशीर्वाद दिया।

कटाक्ष/ कबीरदास

मन की शक्ति

मन को जीवन का केंद्रबिंदु कहना असंभव नहीं है। मनुष्य की क्रियाओं, आचरणों का प्रारंभ मन से ही होता है। मन तरह-तरह के संकल्प, कल्पनाएं करता है। जिस ओर उसका रुझान हो जाता है उसी ओर मनुष्य की सारी गतिविधियां चल पड़ती है। जैसी कल्पना हो उसी के अनुरूप प्रयास-पुरुषार्थ एवं उसी के अनुसार फल सामने आने लगते हैं। मन जिधर रस लेने लगे उसमें लौकिक लाभ या हानि का बहुत महत्व नहीं रह जाता। प्रिय लगने वाले के लिए सब कुछ खो देने और बड़े से बड़े कष्ट सहने को भी मनुष्य सहज ही तैयार हो जाता है। मन यदि अच्छी दिशा में मुड़ जाए; आत्मसुधार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास में रुचि लेने लगे तो जीवन में एक चमत्कार हो सकता है। सामान्य श्रेणी का मनुष्य भी महापुरुषों की श्रेणी में आसानी से पहुंच सकता है। सारी कठिनाई मन को अनुपयुक्त दिशा से उपयुक्त दिशा में मोड़ने की ही है। इस समस्या के हल होने पर मनुष्य सच्चे अर्थ में मनुष्य बनता हुआ देवत्व के लक्ष्य तक सुविधापूर्वक पहुंच सकता है।

शरीर के प्रति कर्तव्य पालन करने की तरह मन के प्रति भी हमें अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करना चाहिए। कुविचारों और दुर्भावनाओं से मन गंदा, मलिन और पतित होता है, अपनी सभी विशेषता और श्रेष्ठताओं को खो देता है। इस स्थिति से सतर्क रहने और बचने की आवश्यकता का अनुभव करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। मन को सही दिशा देते रहने के लिए स्वाध्याय की वैसी ही आवश्यकता है जैसे शरीर को भोजन देने की। आत्मनिर्माण करने वाली जीवन की समस्याओं को सही ढंग से सुलझाने वाली उत्कृष्ट विचारधारा की पुस्तकें पूरे ध्यान, मनन और चिंतन के साथ पढ़ते रहना ही स्वाध्याय है। यदि सुलझे हुए विचारों के जीवन विद्या के ज्ञाता कोई संभ्रांत सज्जन उपलब्ध हो सकते हों तो उनका सत्संग भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। मन का स्वभाव बालक जैसा होता है, उमंग से भरकर वह कुछ न कुछ करना-बोलना चाहता है। यदि दिशा न दी जाए तो उसकी क्रियाशीलता तोड़-फोड़ एवं गाली-गलौज के रूप में भी सामने आ सकती है।

मन में जब सद्विचार भरे रहेंगे तो कुविचार भी कोई दूसरा रास्ता टटोलेंगे। रोटी और पानी जिस प्रकार शरीर की सुरक्षा और परिपुष्टि के लिए आवश्यक हैं उसी प्रकार आत्मिक स्थिरता और प्रगति के लिए सद्विचारों, सद्भावों की प्रचुर मात्रा उपलब्ध होनी ही चाहिए। युग निर्माण के लिए, आत्म निर्माण के लिए वह प्रधान साधन है। संकल्प की, मन की शुद्धि के लिए इसे ही दवा माना गया है।

जाति पर सियासी संग्राम

भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर के लोकसभा में राहुल गांधी की जाति पूछे जाने के बाद से देश में जाति को लेकर माहौल गमार्या हुआ है। इससे पूर्व केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने जाति आधारित जनगणना नहीं करने को लेकर लोकसभा में जो बयान दिया उसके बाद से इस विषय पर लगातार बहस जारी है। जातिगत जनगणना कराए जाने को लेकर पक्ष और विपक्ष दोनों अपने-अपने तर्क दे रहा है। विपक्ष लगातार जातिगत जनगणना कराए जाने के समर्थन में अनेक तर्क दे रहा है।

देश में जातीयता और फूट डालो राज करो की नीति का जो जहरीला बीज अंग्रेज डाल गए थे कांग्रेस और उसकी सहयोगी पार्टियों के नेताओं ने उसे खाद-पानी देकर निरन्तर सींचा और अपनी जरूरतों के अनुसार इसका इस्तेमाल किया। आज यह जहर हमारी संपूर्ण फिजाओं में घुल चुका है ।

देश में जनगणना की शुरूआत 1881 में औपनिवेशिक शासन के दौरान हुई। जाति के आधार पर आबादी की गिनती को जातिगत जनगणना कहते हैं, इसके अंतर्गत जातियों की उपजाति का भी पता चलता है। उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति का भी पता चलता है। देश में हर 10 साल में जनगणना होती है। साल 2011 में आखिरी जनगणना हुई थी और अब 2021 की जनगणना होनी बाकी है। पहले कोरोना महामारी के कारण इसे टाल दिया गया था लेकिन अब इस प्रक्रिया को सरकार शुरू करना चाहती है। ऐसे में नेताओं ने 2021 की जनगणना में जाति आधारित जनगणना कराने की मांग शुरू कर दी। देश में अनुसूचित जाति और जनजाति की जनगणना इसलिए कराई जाती है क्योंकि संविधान के अंतर्गत उन्हें सदन के अंदर आरक्षण दिया गया है। देश में आखिरी बार जाति आधारित जनगणना 1931 में हुई थी। जब पाकिस्तान और बांग्लादेश भी भारत का ही हिस्सा थे। आजादी के बाद सरकार ने जातिगत जनगणना को नहीं कराने का फैसला लिया। इससे पूर्व 1951 में भी तत्कालीन सरकार के पास जाति आधारित जनगणना कराने का प्रस्ताव आया था लेकिन तब तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल ने उस प्रस्ताव को खारिज कर दिया था। उनका मानना था कि जातीय जनगणना कराए जाने से देश का सामाजिक ताना-बाना बिगड़ सकता है। स्वतंत्र भारत में 1951 से 2011 तक की हुई हर एक जनगणना में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों के आकड़े प्रकाशित किए गए हैं लेकिन किसी अन्य जातियों के नहीं। वैश्विक फलक पर भारत का लगातार बढ़ता हुआ कद कई बड़ी वैश्विक शक्तियों की आंख की किरकिरी बना हुआ है। ये वैश्विक शक्तियां नहीं चाहती कि भारत एक महाशक्ति के रूप में विश्व फलक पर उभरे। वह आज भी भारत को पिछड़ा और कमजोर राष्ट्र ही देखना चाहती हैं। वहीं, हमारे देश का विपक्ष ऐसे मुद्दों पर ऐसी शक्तियों के साथ लग कर देश में एक तरह से गृह युद्ध जैसा हाल पैदा कर रहा है। जातीय जनगणना की यह मांग जातिविहीन समाज की परिकल्पना के खिलाफ है।यह देश में सामाजिक भेदभाव को बढ़ाएगी और सामाजिक सद्भाव को कम करेगी। इस जातिगत जनगणना का एक विपरीत असर यह भी होगा कि जो जातियां जातीय जनगणना में ज्यादा है वे ताकतवर होंगी। वे अपनी ताकत के बल पर अपने लिए हिस्सेदारी मांगेंगी। इससे भी जातिवाद बढ़ेगा, समाप्त नहीं होगा। यह समानता के सिद्धांत के खिलाफ ही होगा। जाति आधारित जनगणना के पक्ष में विपक्ष का तर्क है कि यदि सभी जातियों की सही जानकारी पता चले तो उनकी स्थिति के अनुसार भावी योजनाएं बनाने में और लागू करने में सहजता होगी। इससे पिछड़ी जातियों को आर्थिक व राजनीतिक आधार पर सहायता प्रदान की जा सकेगी ताकि उनका विकास हो सके।

यह वही विपक्ष है और ये वही राहुल गांधी है जिनके परिवार ने सत्ता में रहते हुए नारा दिया था- न जात पर न पात पर, मुहर लगेगी हाथ पर। यदि जातीय जनगणना देश की समृद्धि का, उन्नति का आधार है तो कांग्रेस ने अपने शासनकाल के दौरान इसे क्यों लागू नहीं किया? कांग्रेस के शासनकाल में इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, मनमोहन सिंह ने जातिगत जनगणना क्यों नहीं कराई ? जो राहुल गांधी विपक्ष में बैठ इसकी पैरवी कर रहे हैं वे संसद में अनुराग ठाकुर द्वारा जाति का प्रश्न पूछने पर हंगामा क्यों करने लगे? कांग्रेस और राहुल दोनों का यह दोहरा रवैया हमेशा से रहा है। राहुल गांधी यह बता दें कि संसद में जाति पूछना गलत और बाहर पूछना सही कैसे ठहराया जा सकता है?

यह विडंबना ही है कि इस जातिवाद को देश में बढ़ावा देने में सबसे ज्यादा योगदान समाजवादी धारा के राजनेताओं का ही है जिनके डॉ. राम मनोहर लोहिया मानते थे कि समाज में जैसे ही समता आएगी जातिवाद खत्म हो जाएगा। लेकिन उनके अनुयायियों ने जाति को तोड़ा नहीं बल्कि जातियों की राजनीति प्रारंभ कर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकी है। देश से इस जातिगत भेदभाव को खत्म करने और समाज में एकता, समरसता स्थापित करने हेतु अनेक महापुरुषों ने अपने संपूर्ण जीवन को अर्पित कर दिया। इसी जाति का फायदा उठा हमारी सनातन गौरवशाली राष्ट्रीय एकता, हमारी संस्कृति व परंपरा को कमजोर कर विदेशियों ने सैकड़ों सालों तक हम पर शासन किया। अनेक महापुरुषों व संतों कबीर, संत रैदास, महर्षि दयानंद सरस्वती, विवेकानंद, राजा राममोहन राय आदि ने सामाजिक समरसता बनाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। संत कबीर ने कहा है कि 'जात न पूछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान', संत रविदास ने कहा 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।'

विपक्ष कितनी ही पिछड़ी जातियों के विकास की बात करे, असली मुद्दा यह है कि वह अपने हित और सत्ता प्राप्ति हेतु जाति को टूल के रूप में उपयोग करना चाहता है। वर्तमान में वे ओबीसी जातियों के भीतर इस हेतु दबाव डाल रहे हैं ताकि वे आरक्षण को 27% से बढ़ा कर अपनी संख्या के बराबर लाने का दावा मजबूती के साथ कर सकेंगे। इसके आधार पर सियासी पार्टियों को अपना राजनीतिक समीकरण व चुनाव से संबंधित रणनीति बनाने में बहुत मदद मिलेगी। उनकी दिलचस्पी ओबीसी की सटीक आबादी को जानने को लेकर है। इन्हीं को साध कर जाति संघर्ष को बढ़ावा देना और देश की राजनीति को अपने हिसाब से इस्तेमाल करना इनका प्रमुख लक्ष्य है। हमें इस जाति के जहर से सावधान रहने की जरूरत है। अब अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो का प्रयोग स्वीकार नहीं होगा। इस जातीय विमर्श के ठेकेदार, तथाकथित बुद्धिजीवी, नेता ,अर्बन नक्सली हमें लड़वा कर समाज को जातियों में, उपजातियो में तोड़ कर अपनी राजनीतिक रोटियां सेकना चाह रहे हैं और सिर्फ सत्ता हथियाने के लिए हमें एक टूल की तरह प्रयोग कर रहे हैं । देश की जनता को इस खेल को समझ इससे सावधान रहना होगा ।

- प्रो. मनीषा शर्मा (लेखिका, शिक्षाविद् और स्तम्भकार हैं)

10 से 25 अगस्त तक जिले में खिलाई जाएगी फाइलेरिया की दवा : डीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चाईबासा : पश्चिमी सिंहभूम जिला समाहरणालय में डीसी कुलदीप चौधरी की अध्यक्षता में फाइलेरिया उन्मूलन, पल्स पोलियो अभियान एवं घर-घर कुष्ठ खोजी अभियान-2024 के जिला समन्वय समिति की बैठक हुई। बैठक में बताया गया कि राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण तहत फाइलेरिया उन्मूलन हेतु सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम-2024 अंतर्गत 10 अगस्त से 25 अगस्त तक चलाया जाएगा। इसके तहत फाइलेरिया समाप्त करने के लिए डीईसी, एलबेंडाजॉल एवं आईमरमेक्टिन की एक खुराक खिलाई जायेगी। अभियान के तहत 01 वर्ष से कम उम्र के बच्चे, गर्भवती महिला एवं गंभीर रूप से

बीमार व्यक्ति शामिल नहीं होंगे.अभियान सफल बनाने के लिए जिले में कुल 2509 बूथ बनाए गए हैं, जिसमें 5017 दवा प्रशासक के रूप में आंगनबाड़ी सेविका व सहिया होंगी। कार्यक्रम के पर्यवेक्षण हेतु कुल 481 पर्यवेक्षक बनाये गए हैं। प्रखण्ड व जिला स्तर पर रैपिड रिस्पांस टीम भी पूरे कार्यक्रम में तैनात रहेगी। बैठक में बताया गया कि जिला अंतर्गत 25 अगस्त 2024 से पल्स पोलियो कार्यक्रम और 28 अगस्त से 13 सितंबर 2024 तक तकरीबन 3,82,777 घरों में घर-घर कुष्ठ खोजी अभियान का भी संचालन किया जाएगा। जिसके लिए कुल 2350 खोजी दल का गठन किया गया है। बैठक में उपायुक्त के द्वारा जनसमुदाय को कार्यक्रम से अवगत कराने हेतु वृहद प्रचार-प्रसार करने, प्रतिकूल प्रभाव के लिए त्वरित कार्य दल गठन करने एवं सभी दवा प्रशासकों एवं पर्यवेक्षकों को कार्यशील व दक्ष बनाने हेतु प्रशिक्षण सत्र का आयोजन कराने का निर्देश दिया गया। बैठक में उप विकास आयुक्त संदीप कुमार मीणा, सहायक समाहर्ता अर्णव मिश्रा, सिविल सर्जन डॉ साहिर पाल, अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डा भारती मिंज, जिला शिक्षा पदाधिकारी, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, नगरपरिषद चक्रधरपुर एवं चाईबासा के कार्यपालक पदाधिकारी, सभी प्रखंड चिकित्सा पदाधिकारी सहित डबल्यूएचओ, पिरामल फाउण्डेशन एवं पीसीआई के प्रतिनिधि व अन्य उपस्थित थे।

एक नजर

अनुमंडलीय अस्पताल में एक दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

राजमहल : रविवार को राजमहल अनुमंडलीय अस्पताल सभागार में साहिया एवं साहिया साथी का एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजन किया गया। अनुमंडलीय अस्पताल उपाधीक्षक डॉक्टर उदय कुमार टुडू के अध्यक्षता में एवं अंतरराष्ट्रीय संस्था जीएवीआई के विश्व स्वास्थ्य संगठन साहिबगंज के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय घर घर सर्वे एवं ड्यूलिस्ट संबंधी प्रशिक्षण मंगलहट, कसवा एवं पड़ड़िया कलस्टर के सभी सहिया एवं सहिया साथी को प्रशिक्षण दिया गया। उक्त मौके पर विश्व स्वास्थ्य संगठन साहिबगंज से बासुकीनाथ यादव, प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक अमित कुमार, सहित प्रशिक्षकगण एवं साहिया एवं साहिया साथी सहित अन्य उपस्थित रहे।

सड़क दुर्घटना में दो कावड़िये घायल

बरहेट : थाना क्षेत्र के बरहेट शिवगादी कावरिया मुख्य पथ अंतर्गत पेटखासा गांव समीप मोटरसाइकिल से गिरकर दो कांवरिया घायल हो गया। जानकारी के अनुसार पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के अंतर्गत वैष्णवनगर निवासी विक्रम मंडल 27 वर्षीय, लोकनाथ चौधरी 22 वर्षीय बताया जा रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार फरक्का गंगा नदी से जल भरकर बरहेट शिवगादी आ रहा था, इसी दौरान मोटरसाइकिल का संतुलन बिगड़ जाने से पेटखासा गांव स्थित गिरकर घायल हो गया। वही दोनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट लाया, जहा डॉक्टर पंकज कर्मकार ने प्राथमिक उपचार किया। वही लोकनाथ चौधरी 22 वर्षीय को गंभीर रूप से चोट लगने से हायर सेंटर रेफर कर दिया।

झामुमो कार्यकर्ता ने नया ट्रांसफार्मर का किया उद्घाटन

उधवा : प्रखंड के राधानगर पंचायत के मियांपाड़ा में नया ट्रांसफार्मर लगा। जहां ग्रामीणों ने कहा कि झामुमो नेता एमटी राजा के प्रयास से गांव में ट्रांसफार्मर लगा है। जिससे स्थानीय ग्रामीणों ने एमटी राजा के प्रति आभार व्यक्त किया। यहां 15 दिन पहले 63 केवीए के ट्रांसफार्मर जल गया था,जिससे ग्रामीणों को अंधेरे में रहना पड़ता था। ग्रामीणों ने विभाग को आवेदन देकर नया ट्रांसफार्मर लगाने की मांग किया था। एमटी राजा के प्रयास से यहां 100 केवीए का नया ट्रांसफार्मर लगाया गया। जहां स्थानीय झामुमो कार्यकर्ता मोतीउर रहमान ने फीता काटकर ट्रांसफार्मर का उद्घाटन किया।

सड़क पर नाले का गंदा पानी बहने से ग्रामीण परेशान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पतना : चुने गए जनप्रतिनिधि या सरकारी कर्मचारी दोनों का एकमात्र उद्देश्य होता है गरीब तथा जरूरतमंद जनता की मदद करना। उनके लिए तमाम विकास के वो संसाधन विकसित करना जिससे उनकी रोजमर्रा की जिंदगी आसान बन सके। लेकिन कई बार कर्मचारियों की मिलीभगत के कारण यह विकास विनाश का स्वरूप ले लेती है और लोगों की मुसीबतें और बढ़ जाती है। बताते चलें कि पतना प्रखंड अंतर्गत शिव पहाड़ पंचायत के पंचायत भवन के सामने 24 घंटे नाले का गंदा पानी सड़क पर बहता रहता है, जिसे आम लोगों को चलने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मुख्य सड़क होने के कारण स्थानीय ग्रामीणों का आना-जाना इसी रास्ते से होता है, ना चाहते हुए भी उन्हें इस नाली के गंदे पानी से होकर गुजरना पड़ता है। पूजा पाठ करने जाने वाले लोगों की मुसीबतें तो और बढ़ जाती है, उनकी आस्था के साथ खिलवाड़ हो जाता है। स्थानीय ग्रामीणों ने पंचायत सचिव पर आरोप लगाते हुए कहा कि तमाम लोगों को नल का बहता पानी दिखाई दे रहा है लेकिन पंचायत सचिव ने अपनी आंखें बंद कर ली है,सड़क के ऊपर पानी बहने को ही वह विकास समझते हैं। ग्रामीणों ने उच्च अधिकारियों से अपील की है कि मामले में तुरंत संज्ञान लेकर उचित कार्रवाई करें ताकि स्थानीय ग्रामीणों को इस जी के जंजाल से मुक्ति मिल सके।

बाबा धाम शिवगादी में तीसरी सोमवारी पर 1 लाख 20 हजार श्रद्धालुओं ने किया जलाभिषेक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहेट : सावन माह की तीसरी सोमवारी को बाबा गजेश्वरनाथ धाम में श्रद्धालुओं ने उल्लास के साथ पुजा अर्चना कि। मंदिर परिसर में कांवरियों का जनसैलाब उमड़ा। प्राकृतिक द्वारा निर्मित गुफा स्थित पीतांबरी शिवलिंग पर पवित्र गंगाजल, दूध, बेलपत्र, पुष्प, अर्पित कर श्रद्धालुओं ने बारी बारी से पूजा अर्चना की। सावन माह की तीसरी सोमवारी को पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, के श्रद्धालु का हुजूम उमड़ा। कांवरिया रविवार के देर रात्रि तक शिवगादी पहुंच गए थे। सावन माह की तीसरी सोमवारी को एक लाख बीस हजार श्रद्धालुओं ने मिनी बाबा धाम शिवगादी में जलाभिषेक किया। पहले सुबह 3:00 बजे मंदिर के मुख्य द्वार खोल दिया गया था। कांवरियों को पूजा अर्चना करने को लेकर प्रबंध समिति की ओर से स्वयंसेवकों की तैनाती की गई थी, जहां श्रद्धालुओं को बारी-बारी से पूजा अर्चना कराया। जहां सोमवार

को दिनभर कावरिया का ताता लगा रहा। इधर भीड़ को नियंत्रण को लेकर बरहेट शिवगादी कांवरिया पथ पर चप्पा-चप्पा पुलिस बल तैनात किये गये थे, बरहेट से शिवगादी आने वाले वाहनों को खेरवा फुटबॉल मैदान समीप वाहनों को रखरखाव के लिए पार्किंग बनाया गया था ताकि बड़े वाहनों के कारण कांवरिया पथ पर जाम की स्थिति ना हो। वही मोटरसाइकिल, टोटो जैसे वाहनों को जाने की अनुमति दी गई थी। शिवगादी प्रबंध समिति की ओर से वाहनों का परिचालन के लिए वनवे बनाया गया था, शिवगादी से पूजा अर्चना कर लौटने वाले श्रद्धालु डुमरिया होते हुए बरहेट पहुंचेंगे, वही डुमरिया स्थित गांव समीप 4 घंटों तक वहां जाम रहा, स्थानीय प्रशासन द्वारा पहुंचकर जाम को हटाया गया। इधर बरहेट थाना प्रभारी पवन कुमार वाहनों की जाम की समस्या ना हो इसको लेकर सड़कों पर लगातार गश्ती करते रहे। वही कांवरिया पथ पर विभिन्न जगहों पर जिला प्रशासन द्वारा पुलिस बल की तैनाती की गई है। इस संबंध में सचिव उत्पल दत्त ने कहा कि सावन की तीसरी सोमवारी को 1 लाख 20 बीस हजार कांवरियों ने जलार्पण किया। कांवरियों की सेवा के लिए शिवगादी प्रबंध समिति तात्पर्य है।

कांवरियों के लिए नि:शुल्क सेवा शिविर में तुफान के सहयोग से की गई सेवा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

देवघर : सोमवार को विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला में अनवरत कांवरियों का बाबा बैद्यनाथ धाम आने का सिलसिला जारी है। सावन माह के तीसरी सोमवार को भुरभुरा मोड़ में निःशुल्क बम बम बाबा कॉलोनी सेवा समिति कांवरिया सेवा में तुफान महथा के सहयोग से कांवरिया की सेवा की मौके पर तुफान महथा ने बताया कि शिवभक्त कांवरियों की सच्चे मन से सेवा ही शिव की सबसे बड़ी पूजा है। शिव भक्तों की सेवा से बढ़कर कुछ भी नहीं है। श्रद्धालुओं की सेवा ही सबसे बड़ी भक्ति है। उन्होंने कहा कि सावन भादो के पूरे माह तक देवघर एवं बासुकीनाथ धाम में देश-विदेश के अलग-अलग प्रांतों से लाखों श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। जिनकी सेवा करना सचमुच में ईश्वर की सच्ची पूजा है। सेवा शिविर में कांवरियों को सभी सुविधाएं मुफ्त उपलब्ध करायी जा रही । इसमें नींबू चाय, शर्बत, फल ठंडा पानी, माजा, प्राथमिक चिकित्सा की सुविधाएं शामिल

हैं। कांवरियों के लिए पेयजल की भी उचित व्यवस्था की गई है। और मौके ललन पांडे ने कहा कि श्रावणी मेला में कांवरिया श्रद्धालुओं की सेवा ही सच्ची सेवा है। उन्होंने कहा कि समाज सेवा किसी समूह या समुदाय में व्यक्तिगत आधार पर व्यक्तियों की मदद करने की एक प्रक्रिया है, ताकि कोई व्यक्ति अपनी मदद स्वयं कर सके। इसके माध्यम से व्यक्ति वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में उत्पन्न होने वाली अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करने में सक्षम होता है। समाज सेवा ही सच्ची भक्ति है।मौके पर बम बम बाबा कॉलोनी सेवा समिति के अध्यक्ष संजीव कुमार झा उर्फ गुड्डू झा ने कहा कि 7 साल से लगातार बम बम बाबा कॉलोनी सेवा समिति कांवरिया का सेवा करते आ रही। इस साल भी प्रत्येक सोमवार समिति कांवरिया की सेवा करेगी। इसी निमित्त आज तीसरी सोमवारी को भी किया गया।इस शिविर में सभी का सहयोग रहता है।आपको बता कि भुरभुरा मोड़ में वैसे कांवरिया की सेवा की जाती जो बाबा मंदिर से पूजा करके वापस लोटते समय या मोटर साइकिल से मंदिर की ओर जाते कांवरिया की सेवा की जाती क्योंकि इस रास्ते में एक भी शिविर नहीं है।

तालझारी प्रखंड में धड़ल्ले से चल रहा है अवैध लॉटरी का कारोबार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

तालझारी : प्रखंड क्षेत्र के कई दुकानों एवं चौक चौराहों एवं ग्रामीण इलाकों में इन दिनों झारखंड राज्य में प्रतिबंध लॉटरी का कारोबार बड़ी जोर-शोर से चल रही है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नागालैंड, सिक्किम सहित अन्य राज्यों के लॉटरी को इलाके में घूम-घूम कर सुबह से लेकर शाम तक बेचा जा रहा है। ग्रामीण इलाकों में लोगों की गाड़ी कमाई को लेकर उन्हें रातों-रात लाखपति बनाने का सपना दिखाकर एवं झुठा झांसा देकर खागपति बनाया जा रहा है। वहीं सूत्र बताते हैं कि लॉटरी के इस काले कारोबार से एक दिन में तालझारी बाजार और आसपास के ग्रामीण इलाकों से 40 से 50 लाख रुपैया का अवैध कारोबार रोजाना किया जाता है। जहां अलग-अलग जगहों पर लॉटरी के थोक व्यापारी रोजाना लाखों रुपया कमाते हैं। वही थोक व्यापारी के नीचे काम करने वाले लोग रोजाना दस से बीस हजार रुपए कमाते हैं उसी के

नीचे खुदरा माल बेचने वाले रोजाना हजारों रुपए कमाते हैं खुदरा माल बेचने वाले को एक बेनिफिट और भी दिया जाता है जब उसे टिकट पर कोई भी प्राइज होता है तो उसे बोनस के रूप में भी कुछ कमीशन दिया जाता है। इस कारण कारोबार में सबसे अधिक कमाई लॉटरी कारोबार से जुड़े हैं। उधर सूत्रों के मिली जानकारी के अनुसार थोक विक्रेता लॉटरी की भी छपाई करते हैं इस लॉटरी का थोक विक्रेता अपने-अपने क्षेत्र में बड़ी धड़ल्ले से अवैध लॉटरी की खपत करता है। खुदरा लाटरी खपत करने में मजदूर किस्म के लोग जो महाराजपुर, करणपुरा, तालझारी, कल्याणचक, लालमाटी, मंगलहट के लोग इसमें संलिपित है।

गेहूं लदा ट्रेलर सड़क पर पलटा, चालक का पैर टूटा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : ईचागढ़ थाना क्षेत्र के सिल्ली रांगामाटी सड़क पर दुबराजपुर तीखा मोड़ के पास सोमवार को एक गेहूं लदे ट्रेलर पलट गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बताया गया कि गाड़ी इतना तेजी से सिल्ली से रागामाटी की ओर जा रहा था तथा बीच में तीखा मोड़ आ गया जिससे गाड़ी का संतुलन बिगड़ा ओर गाड़ी पलटी हो गया। ट्रेलर में गेहूं लदा हुआ था।लदा गेंहू बोरा पूरा सड़क एवं पानी भरे हुए खेत में जा गिरा। जिससे लाखों रुपए का नुकसान हुआ। सुचना मिलते ही ईचागढ़ थाना प्रभारी बिक्रम आदित्य पांडे दलवल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे व ट्रैलर को जप्त कर लिया। वहीं थाना प्रभारी विक्रम आदित्य पांडे ने बताया कि ट्रैलर पलटी होने से चालक गंभीर रूप से घायल हो गया है एवं एक पैर टुटा है। उन्होंने कहा कि घटनास्थल से चालक को टीकर में एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। चालक का नाम मनोज कुमार बताया जा रहा है जो पंजाब के सांगरुर का निवासी है। ट्रैलर पलटने से सड़क और खेत में गेहूं बीखर गया,जिससे लाखों की क्षति का अनुमान लगाया जा रहा है।

मोती नाथ धाम मंदिर में श्रद्धालुओं ने की पूजा अर्चना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

तालझारी : महाराजपुर स्थित मोती नाथ बाबा मंदिर में सावन की तीसरी सोमवारी को करीब सात हजार से अधिक शिव भक्तों ने भोले शंकर बाबा पर जलाभिषेक किया। सोमवार को अहले सुबह बाहर से आये श्रद्धालु महाराजपुर गंगा घाट पर स्नान कर हर हर महादेव व बोल बम के नारे लगाते हुए मोती झरना शिव मंदिर पहुंचकर जलार्पण कर पूजा अर्चना कि। मोतीनाथ स्थित बाबा मंदिर में पुजा अर्चना के लिए सुबह से ही श्रद्धालु मंदिर परिसर पहुंचना शुरू होने लगा था। पश्चिम बंगाल, बिहार सहित जिले के आसपास के क्षेत्रों से हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने तीसरी सोमवारी को जलार्पण किया। मंदिर

परिसर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए जरूरत का हर सामान मिल रहा था प्रसाद, मखाना, चूड़ा, माला, फुल बेलपत्र आदि की बिक्री भी हो रही थी। स्थानीय श्रद्धालुओं पूजा-अर्चना को लेकर मंदिर परिसर में दीन भर भीड़ लगी रही। मंदिर जाने के रास्ते में फूल बेलपत्र फल के दुकने लगाया गया था। वहीं श्रद्धालुओं के मंदिर में आने जाने में किसी प्रकार की समस्या न हो इसके लिए वाहनों की पार्किंग मंदिर प्रांगण से एक किलोमीटर दूर बनाया गया। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर मंदिर परिसर से लेकर मुख्य गेट तक पुलिस बलों की तैनाती की गई।मोती झरना विकास समिति के सदस्य तन-मन से श्रद्धालुओं की सेवा में जुटे थे। बाहर से आये श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो इसका विशेष ध्यान रखा गया। मुख्य गेट से लेकर मंदिर प्रांगण तक अपने सदस्यों को देख रेख के लिए लगाया गया। समिति के सचिव ने बताया की सावन की तीसरी सोमवारी को पंद्रह हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने बाबा मोती नाथ धाम में जलार्पण किया।बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की विशेष निगरानी रखी जा रही है। सुविधा देने में समिति के सदस्य लगे हैं। मौके पर समिति के संविधान सदस्य विधि व्यवस्था में लगे हुए थे। मौके पर एएसआई मनोज आजाद सहित पुलिस बल उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

पतंजलि के संरक्षक संजय मालवीय ने कांवड़िया सेवा शिविर को झंडी दिखाकर किया रवाना

देवघर : पतंजलि परिवार के द्वारा रविवार एवं सोमवार को भारत स्वाभिमान के जिला अध्यक्ष अनुज कुमार त्यागी के नेतृत्व में संरक्षक संजय मालवीय ने चलंत कांवरिया सेवा शिविर को झंडी दिखाकर रवाना किया जो कि रविवार को दर्जनों कार्यकताओं के द्वारा रात्रि में कांवरियों को प्रसाद ने खीर पुडी, चाय, शरबत, पानी से सेवा दिया गया एवं थके घायल पीड़ित श्रद्धालुओं को रात भर पतंजलि बाम, पीड़ांतक तेल, महलम, दिव्य धारा आदि से मालिश किया गया वहीं सोमवारी को चार बजे भोर से ही फल, शर्वत ,पानी वितरण किया गया, इसमें आर एन बोस पुस्तकालय एवं केकेएन स्टेडियम योग कक्षा का विशेष योगदान मिला।कार्यक्रम को सफल बनाने में युवा प्रभारी मनोज कुमार, शिव ओतार बरनवाल, अशोक मेडिसिनो, अरुण,प्रवीण, डॉक्टर अविनाश, विजय, सज्जन, संजीव ,प्रमोद चौरसिया, मुकेश चौधरी, शिव शंकर बरनवाल, शंभू कुमार बरनवाल, छठी साह,राजीव रंजन राय ,गुड्डू, मौसम राज, प्रिंस, संजीव, धीरज ,अमित ,आशीष, सुभाष, स्नेह, दिनेश, सोनालाल मंजू, रीता ,अर्चना, रेखा,उषा,कल्याणी,रंजु, वंदना, सीमा प्रकाश आदि मुख्य भूमिका निभाई।

पटमदा में सर्वर नहीं चलने की महिलाओं ने बीडीओ से की शिकायत

पटमदा : झारखंड सरकार द्वारा महिलाओं के लिए लागू की गई झारखंड मुख्यमंत्री मईया सम्मान योजना में पटमदा प्रखंड के 15 पंचायतों में सर्वर नहीं चलने से काफी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। सर्वर नहीं चलने की शिकायत को लेकर पटमदा पंचायत की आगुईडांगरा गांव की दर्जनों महिलाओं ने पटमदा बीडीओ पियुषा सलीना डोना मिंज को सोमवार को उनके कार्यालय पहुंचकर समस्या से अवगत करवाया। बीडीओ ने महिलाओं को आश्वासन दिया की । सभी महिलाओं को इस योजना का लाभ देने का काम किया जाएगा। सर्वर की समस्या पूरे राज्य भर में है।इसके समाधान का रास्ता निकालने का प्रयास जारी हैं। उन्होंने कहा की 21 वर्ष से 50 वर्ष तक सभी महिलाएं इस योजना से लाभान्वित होंगी।

आदिवासी समुदाय के लोगों को मशरूम की खेती करने का दिया गया प्रशिक्षण

साहिबगंज : जिला अंतर्गत प्रिमिटिव वल्नरेबल ट्राइबल ग्रुप (पीवीटीजी) के तीसरे बैच के प्रशिक्षुओं को आरसेटी (आरएसईटीआई) में मशरूम की खेती का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आत्मनिर्भरता और रोजगार सृजन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य आदिवासी समुदाय के लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। आरसेटी में प्रशिक्षुओं को मशरूम की खेती के विभिन्न चरणों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है, जिसमें बीज की बुवाई, खाद्य सामग्री की तैयारी, वातावरण की देखभाल, और कटाई की प्रक्रियाएँ शामिल हैं। विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षुओं को यह भी सिखाया जा रहा है कि कैसे मशरूम की गुणवत्ता बनाए रखी जाए और बाजार में इसके विपणन के लिए रणनीतियाँ अपनाई जाएं। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे एक प्रशिक्षु ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, ्यह प्रशिक्षण हमारे लिए एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। हमें उम्मीद है कि हम इससे आत्मनिर्भर बन सकेंगे और अपने समुदाय के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित कर सकेंगे।

विकास भवन सभागार में स्वतंत्रता दिवस एवं संस्कृति कार्यक्रम को लेकर हुई बैठक

साहिबगंज : विकास भवन सभागार में उप विकास आयुक्त सतीष चंद्रा की अध्यक्षता में 15 अगस्त के स्वतंत्रता दिवस समारोह एवं 14 अगस्त की संध्या में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जुड़े प्रतिनिधि उपस्थित थे। उप विकास आयुक्त ने तैयारियों का जायजा लेते हुए सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि स्वतंत्रता दिवस समारोह को भव्य और सफल बनाने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को समय पर पूर्ण किया जाए। उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रम की रूपरेखा पर चर्चा की और कार्यक्रम को आकर्षक एवं अनुशासित तरीके से संपन्न कराने के लिए आवश्यक दिशानिर्देश दिए। बैठक में सुरक्षा, यातायात व्यवस्था, साफ–सफाई, मंच सजावट, ध्वनि व्यवस्था आदि पर विशेष जोर दिया गया। उप विकास आयुक्त ने संबंधित अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि सभी तैयारियाँ सुव्यवस्थित और समयबद्ध तरीके से पूर्ण हों। साथ ही 14 अगस्त की संध्या में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभागियों के अभ्यास और उनकी प्रस्तुति की भी समीक्षा की गई।

सड़क दुर्घटना में एक महिला घायल

तालझारी : तालझारी महराजपुर सड़क के बीच बागजोडी.गांव के पास सोमवार को एक महीला मोटरसाइकिल से गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गई। जानकारी के अनुसार सोमवार को पश्चिम बंगाल फरक्का से मोतीझरना पुजा करने जा रहे थे कि तालझारी बागजोड़ी गांव के पास अचानक मोटरसाइकिल असंतुलित होकर सपन साहा की पत्नी अर्चना साहा सड़क पर गिर गई। पक्की सड़क मे सर टकराने के कारण उस महिला का सर फट गया और कान से खून निकलने लगा। वहीं स्थानीय लोगों द्वारा निजी वाहन कर घायल महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचागया। सूचना मिलते ही सड़क सुरक्षा प्रजापति प्रकाश बाबा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे डॉक्टर के सहयोग से घायल महिला का इलाज करवाया। गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टर द्वारा बेहतर इलाज के लिए बाहर रेफर कर दिया गया। वहीं महिला के पति सपन साहा ने बताया कि मेरे द्वारा एंबुलेंस को फोन लगाकर सूचना दिया गया।एंबुलेंस द्वारा बार–बार कुछ देर में पहुंचने की बात कही गई, परंतु डेढ़ घंटा बीत जाने के बाद भी एंबुलेंस नहीं पहुंचा। निजी वाहन कर अपने पत्नी के इलाज के लिए फरक्का ले जा रहा हूं। यहां के विधि व्यवस्था देख वह बहुत नाराजगी जताए। साथ ही उन्होंने घटना के बारे में बताया कि मेरी पत्नी मोटरसाइकिल पर सो गई जीस कारण गीर गई।

एनसीएलएटी से राहत के बाद भी बायजू के फाउंडर रवींद्रन पहुंचे सुप्रीम कोर्ट

- बायजूस को अमेरिकी कर्जदाता की तरफ से एनसीएलएटी के आदेश के खिलाफ याचिका दायर करने की आशंका

नई दिल्ली ।

कर्ज के संकट का सामना रही स्टार्टअप फर्म का मामला सुलझता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। 2 अगस्त को ही एडटेक को राष्ट्रीय कंपनी विधि अपील अधिकरण (एनसीएलएटी) से राहत मिली थी, लेकिन अब बायजूस के फाउंडर बायजू रवींद्रन ने सुप्रीम कोर्ट में एक और याचिका दायर कर दी है। रवींद्रन को अपने अमेरिकी कर्जदाता की तरफ से एनसीएलएटी के आदेश के खिलाफ याचिका दायर करने की आशंका है, ऐसे में उन्होंने पहले ही सुप्रीम कोर्ट जाने का फैसला कर लिया।

गौरतलब है कि एनसीएलएटी ने बायजूस की पैरेंट कंपनी थिंक ऐंड लर्न के खिलाफ चल रही दिवालिया कार्यवाही प्रक्रिया पर 2 अगस्त को रोक लगा दी थी और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के साथ बायजू रवींद्रन के समझौते को भी मंजूर कर लिया था। जिसके बाद बैजू रवींद्रन सहित कंपनी के प्रमोटर्स को फिर से फर्म का नियंत्रण मिल गया।

जिस दिन एनसीएलएटी का फैसला आया उसी दिन ही खबर मिली कि अमेरिकी फर्म ग्लास ट्रस्ट ने एनसीएलएटी से अपील की है कि बायजू की दिवाला कार्यवाही को रद्द न किया जाए। अमेरिका की फर्म भारत के कोर्ट से यह अपील इसलिए की थी क्योंकि ग्लास ट्रस्ट का दावा है कि उसके कर्जदाताओं ने बायजू को 1 अरब डॉलर का कर्ज दिया था और अभी बायजू की जो स्थिति है, यह मुश्किल ही लगता है कि वह खुद से कर्ज चुका पाएगी।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बायजू रवींद्रन ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की है और कोर्ट से अपील की है कि बायजू के खिलाफ दिवालिया कार्यवाही को रद्द करने के एनसीएलएटी के आदेश के खिलाफ अमेरिकी कर्जदाताओं की तरफ से दायर की जाने वाली याचिका पर कोर्ट के फैसले से पहले सुनवाई की जाए।

इनकम टैक्स रिफंड के नाम पर धोखाधड़ी का खेल शुरू, रहें सावधान

आपके मोबाइल पर आयकर रिफंड का मैसेज आए तो क्लिक ना करें वरना बैंक खाता हो जाएगा खाली

नई दिल्ली ।

अब इनकम टैक्स रिफंड के नाम पर धोखाधड़ी का खेल शुरू हो गया है। ऐसे में उन तमाम टैक्सपेयर्स को सतर्क रहने की जरूरत है जिन्होंने आईटीआर दाखिल किया है। आयकर रिफंड के नाम पर हाईटेक ठगी के प्रयास किए जा रहे हैं।

साइबर ठग, टैक्सपेयर्स के मोबाइल पर फर्जी आयकर रिफंड का मैसेज भेज रहे हैं। इन मैसेज में आयकर रिफंड की रकम जारी करने के लिए यूजर्स को एक लिंक पर क्लिक करने को कहा जा रहा है। टैक्सपेयर्स द्वारा इस फर्जी लिंक पर क्लिक करते ही उनके बैंक अकाउंट से पैसे निकाले जा रहा हैं। आयकर विभाग ने करोड़ों टैक्सपेयर्स को साइबर ठगों की इस जालसाजी से सावधान किया है।

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने आयकर रिफंड के नाम पर किसी तरह की लिंक पर क्लिक नहीं करने की सलाह दी है, साथ ही किसी भी सूरत में मोबाइल पर आए ओटीपी, पैन कार्ड व अन्य महत्वपूर्ण जानकारी साझा नहीं करने को कहा है। वहीं साइबर सेल ने भी आईटीआर के नाम पर आ रहे इस तरह के मैसेज को लेकर लोगों को आगाह किया है। साइबर क्राइम पुलिस ने कहा कि इस तरह के मैसेज बैंक धोखाधड़ी के नए हथकंडे हैं इसलिए आप सावधान रहें और अपने परिचितों को भी सतर्क करें।

अमेरिकी चिंगारी से भारत में निवेशकों के 17 लाख करोड़ रुपये स्वाहा

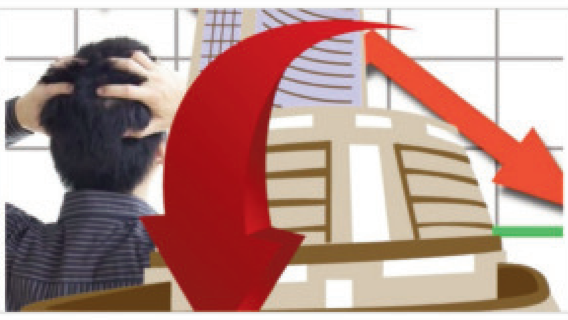

नई दिल्ली ।

अमेरिका ने शुक्रवार को बाजार बंद होने के बाद नौकरी से जुड़े आंकड़े जारी किए। इसके मुताबिक देश में जुलाई में लोगों को उम्मीद के मुताबिक नौकरियां नहीं मिली और बेरोजगारी दर तीन साल के शीर्ष पर पहुंच गई। इससे अमेरिका में फिर मंदी की आशंका तेज हो गई है। सोमवार को दुनियाभर के शेयर बाजारों में इसका असर दिख रहा है। भारत में बीएसई सेंसेक्स में कारोबार के दौरान करीब 2,600 अंक की गिरावट आई और निवेशकों के 17 लाख करोड़ रुपये एक झटके में स्वाहा हो गए।

जापान के शेयर मार्केट में इतिहास की सबसे बड़ी गिरावट दिखाई दी है। बेंचमार्क निक्केई 225 इंडेक्स 4,451 अंक की गिरावट के साथ बंद हुआ। यह अंक के हिसाब से इसकी अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। जापान और साउथ कोरिया में भारी गिरावट के बीच कुछ समय के लिए ट्रेडिंग रोकनी पड़ी। एशिया-पैसिफिक के दूसरे बाजारों में भी भारी गिरावट देखने को मिली। कोरिया एक्सचेंज के बेंचमार्क कोस्पी में आठ फीसदी से ज्यादा गिरावट के बाद कुछ देर के लिए ट्रेडिंग रोकनी पड़ी। ताइवान का ताइपे इंडेक्स भी 8.4 प्रतिशत गिरकर बंद हुआ जो इसकी अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। हॉन्ग कॉन्ग के हैंगसैंग इंडेक्स में 2.6 प्रतिशत और चीन के शंघाई में 1.2 प्रतिशत गिरावट आई है। शुक्रवार को अमेरिकी शेयर बाजार में भी भारी गिरावट देखने को मिली। जॉब्स के निराशाजनक आंकड़ों से अमेरिकी इकॉनमी के कमजोर पड़ने की आशंका बन रही है।

जोमेटो ने मार्च तक ग्राहकों से मंच शुल्क के रूप में 83 करोड़ जुटाए

नई दिल्ली ।

ऑनलाइन ऑर्डर पर खाने पीने की चीजें पहुंचाने वाले मंच जोमैटो ने इस साल मार्च तक ग्राहकों से मंच शुल्क के रूप में 83 करोड़ रुपये जुटाए हैं। कंपनी की सालाना रिपोर्ट में यह बात कही गई है। जोमैटो ने पिछले साल अगस्त में प्रत्येक ऑर्डर पर मंच शुल्क लेना शुरू किया था। मंच शुल्क को जोमैटो के समायोजित राजस्व को बढ़ाने वाले तीन प्रमुख कारकों में से एक बताया गया है। कंपनी की आमदनी पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में सालाना आधार पर 27 प्रतिशत बढ़कर 7,792 करोड़ रुपये हो गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि जीओवी (सकल ऑर्डर मूल्य) के प्रतिशत के रूप में समायोजित राजस्व में वृद्धि जारी रही, जिसका मुख्य कारण रेस्तरां कमीशन दरों में वृद्धि, विज्ञापन मौद्रिकरण में सुधार और पिछले वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही से प्लेटफॉर्म शुल्क की शुरुआत है। इसमें कहा गया है कि इन सभी कारकों ने गोल्ड ऑर्डरों पर उपलब्ध मुफ्त डिलीवरी लाभ के कारण प्रति ऑर्डर ग्राहक डिलीवरी

शुल्क में कमी की भरपाई कर दी। जोमैटो की रिपोर्ट के अनुसार दिलचस्प बात यह है कि पिछले वित्त वर्ष में देर रात के अधिकांश ऑर्डर दिल्ली एनसीआर से आए थे, जबकि नाश्ते के अधिकांश ऑर्डर बेंगलुरु से आए थे। कंपनी ने पिछले अगस्त में दो रुपये प्रति ऑर्डर मंच शुल्क लेना शुरू किया था, जिसे अब प्रमुख बाजारों में धीरे-धीरे बढ़ाकर छह रुपये कर दिया गया है। जोमैटो की प्रमुख प्रतिद्वंद्वी स्विगी भी प्रत्येक ऑर्डर पर मंच शुल्क लेती है।

कर्नाटक के बाद टोयोटो महाराष्ट्र में लगाएगी विनिर्माण संयंत्र

- कंपनी करेगी 20,000 करोड़ का निवेश

नई दिल्ली । कर्नाटक के बिडदी में दो विनिर्माण संयंत्र स्थो पित करने के बाद अब टोयोटा महाराष्ट्र में नया प्लांट लगाने पर विचार कर रही है। इसके लिए कंपनी करीब 20,000 करोड़ रुपये तक का निवेश करेगी। टोयोटा ने एक बयान में कहा कि महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजी नगर में एक नए विनिर्माण संयंत्र की स्थापना की पड़ताल के लिए महाराष्ट्र सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। कंपनी के पहले से ही बेंगलुरु के पास बिडदी में दो विनिर्माण संयंत्र मौजूद हैं, जिनकी मौजूदा उत्पादन क्षमता 3.42 लाख वाहनों की है। कर्नाटक में टोयोटा ने अपनी ग्रुप कंपनियों को मिलाकर 16,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया है और इससे करीब 86,000 नौकरियां पैदा हुई हैं। कंपनी ने हाल ही में महाराष्ट्र सरकार के साथ इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड कारों के निर्माण के समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि यह प्रोजेक्ट वाहन क्षेत्र में क्रांति लाएगी। वहीं टीकेएम के एमडी और सीईओ मसाकाजू योशिमुरा ने कहा कि इस एमओयू के साथ हम भारत में विकास के अगले चरण में कदम रख रहे हैं। इससे हम लोकल और ग्लोबल लेवल पर गुणवत्तापूर्ण वाहनों के साथ जीवन को समृद्ध बनाने में योगदान दे सकेंगे। उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र को बदलना, मराठवाड़ा का विकास करना! भारत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर्स महाराष्ट्र में एक नई विनिर्माण सुविधा शुरू करने के लिए तैयार है! छत्रपति संभाजीनगर के औरंगाबाद औद्योगिक शहर में मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी के लिए 850 एकड़ जमीन आवंटित की गई है।

जुलाई में यात्री वाहनों की बिक्री 10 फीसदी बढ़ी: फाडा

नई दिल्ली । नए मॉडल की पेशकश और बढ़ी हुई छूट से भारत में यात्री वाहनों की खुदरा बिक्री जुलाई में सालाना आधार पर 10 फीसदी बढ़ी। उद्योग निकाय फाडा ने सोमवार को यह जानकारी दी। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अनुसार जुलाई में कुल यात्री वाहन खुदरा बिक्री बढ़कर 3,20,129 इकाई हो गई, जबकि जुलाई 2023 में यह 2,90,564 इकाई थी। फाडा के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि डीलरों ने बताया कि उन्हें अच्छे उत्पाद उपलब्ध होने, आकर्षक योजनाओं और उत्पादों की व्यापक श्रृंखला से लाभ मिला है। उन्होंने कहा कि भारी बारिश, उपभोक्ता भावना में कमी और तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण चुनौतियां उत्पन्न हुई, लेकिन अधिक प्रचार तथा बढ़ी छूट के जरिये बिक्री को बनाए रखने में कामयाबी मिली। जुलाई में दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री 17 फीसदी बढ़कर 14,43,463 इकाई रही, जो जुलाई 2023 में 12,31,930 इकाई थी। वाणिज्यिक वाहनों की खुदरा बिक्री पिछले महीने सालाना आधार पर सात फीसदी बढ़कर 80,057 इकाई हो गई। हालांकि, जुलाई में ट्रैक्टर की बिक्री सालाना आधार पर 12 फीसदी घटकर 79,970 इकाई रह गई।

दाल की कीमतों में आई गिरावट

नई दिल्ली । लगभग साल भर परेशान करने के बाद दाल की कीमतों में अब गिरावट देखने को मिल रही है। ऐसे में कहा जा रहा है कि आने वाले महीनों में दालों की कीमतों में और गिरावट आ सकती है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया है कि पिछले एक महीने से देश की विभिन्न मंडियों में दाल की कीमतों में गिरावट आ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक चना, तुअर और उड़द जैसी दालों के दाम कम हो रहे हैं। जनवरी में दालों की खुदरा महंगाई दर 19.54 फीसदी पर थी, जो जून में कम होकर 16.07 फीसदी पर आ गई है। उपभोक्ता मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक अरहर दाल की खुदरा कीमतें कम होकर 160 रुपये किलो दर्ज की गई। जो कि एक महीने पहले की तुलना में 5.8 फीसदी कम है। इसी तरह मसूर दाल एक महीने पहले की तुलना में 10 फीसदी सस्ती होकर 90 रुपये किलो दर्ज की गई।

देश की अर्थव्यवस्था चालू वित्त वर्ष में 7-7.2 प्रतिशत बढ़ने की संभावना: डेलॉयट

नई दिल्ली । डेलॉयट इंडिया ने सोमवार को कहा कि मजबूत आर्थिक बुनियादी ढांचे और घरेलू नीति सुधारों में निरंतरता से चालू वित्त वर्ष 2024-25 में भारत की अर्थव्यवस्था सात से 7.2 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है। डेलॉयट के अगस्त माह के भारत आर्थिक परिदृश्य के अनुसार केंद्रीय बजट 2024-25 में कृषि उत्पादकता में सुधार, युवाओं के लिए रोजगार सृजन, विनिर्माण तथा सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) के लिए वित्त तक पहुंच की चुनौती का समाधान करने की दिशा में की गई कई पहलों से आपूर्ति पक्ष की मांग में सुधार, मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता खर्च को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। डेलॉइट इंडिया की एक अर्थशास्त्री ने कहा कि वर्ष के पहले छह महीनों में अनिश्चितता के दौर के बाद भारत दूसरी छमाही में मजबूत वृद्धि दर्ज करेगा। आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में कहा गया, मजबूत आर्थिक बुनियाद वित्त वर्ष 2024-25 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर सात प्रतिशत से 7.2 प्रतिशत के बीच रहेगी। शहरी-ग्रामीण उपभोक्ता व्यय अंतर, मुद्रास्फीति तथा रोजगार संबंधी चिंताओं से प्रभावी ढंग से निटपने से महत्वाकांक्षी ग्रामीण उपभोक्ताओं की सामर्थ्य में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। डेलॉइट इंडिया का वृद्धि अनुमान भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अनुमान के बराबर है। आरबीआई ने वित्त वर्ष 2024-25 में 7.2 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया है। यह वित्त मंत्रालय की आर्थिक समीक्षा में लगाए अनुमान से अधिक है, जिसमें जीडीपी विस्तार का अनुमान 6.5 से सात प्रतिशत के बीच लगाया गया है। वित्त वर्ष 2023-24 में भारतीय अर्थव्यवस्था 8.2 प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है।

शेयर बाजार टूटा , सेंसेक्स 2222 अंक नीचे आया

निफ्टी 414 अंक फिसला

मुम्बई ।

घूरेल शेयर बाजार में सोमवार को भारी गिरावट रही। सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन ये गिरावट दुनिया भर के बाजारों विशेषकर अमेरिका के नीचे आने और बिकवाली हावी रहने से आई है। इससे निवेशकों में भय का माहौल छा गया जिससे विदेशी कोषों की निकासी होने लगी। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 2,393.77 अंक टूकर 78,588.19 पर जबकि 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 414.85 अंक नीचे आकर 24,302.85 पर बंद हुआ। इससे निशेवकों के कई लाख करोड़ रुपये डूब गये

वहीं एशियाई बाजारों में भी काफी गिरावट रही। दक्षिण कोरिया, ताइवान और ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य एशियाई बाजारों में 2.5 फीसदी से 7फीसदी तक की गिरावट देखी गई।

बाजार जानकारों के अनुसार येन के व्यापार में कमी, भू-राजनीतिक तनाव और विकसित अर्थव्यवस्थाओं में कथित मंदी जैसे कारकों के कारण भारतीय बाजार पर दबाव आया। इसके अलावा मुद्रास्फीति के मामले और सितंबर में फेडरल रिजर्व दर में कटौती की उम्मीदों से भी बाजार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है हालांकि कहा जा रहा है कि बाजार इस कठिन दौर से उबर जाएगा। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने जुलाई में महत्वपूर्ण निवेश के बाद इक्विटी में 1,027 करोड़ की बिक्री करते हुए अगस्त की शुरुआत में काफी सतर्कता बरती है।

इससे पहले आज सुबह

अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मंदी और विदेशी निवेशकों की बिकवाली की आशंकाओं को देखते हुए वैश्विक बाजारों में बड़ी गिरावट की वजह से भारतीय शेयर बाजार खुलते ही टूट गये। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 2401.49 अंक गिरकर 78,580.46 पर पहुंच गया। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 489.65 अंक का गोता लगाकर 24,228.05 पर आ गया। सेंसेक्स की कंपनियों में टाटा मोटर्स, टाटा स्टील, जेएसडब्ल्यू स्टील, अदाणी पोर्ट्स, मारुति और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर में सबसे ज्यादा गिरावट आई। शेयर बाजार में चौतरफा बिकवाली के बावजूद सन फार्मा और हिंदुस्तान यूनिलीवर बढ़त के साथ कारोबार कर रहे थे

आईईएक्स कारोबार की मात्रा जुलाई में 56 फीसदी बढ़ी

नई दिल्ली । इंडियन एनर्जी एक्सचेंज (आईईएक्स) ने जुलाई 2024 में अब तक का सर्वाधिक 13,25 करोड़ यूनिट (एमयू) का कुल कारोबार प्राप्त किया। यह पिछले साल की समान अवधि से 56 प्रतिशत अधिक है। आईईएक्स के बयान के अनुसार कुल व्यापार मात्रा में अक्षय ऊर्जा प्रमाणपत्र और ऊर्जा-बचत प्रमाणपत्र शामिल हैं। कंपनी ने अनुसार बिजली की मात्रा 1009.3 एमयू तक पहुंच गई, जो पिछले साल की तुलना में 29 प्रतिशत की वृद्धि को दिखाता है। अक्षय ऊर्जा प्रमाणपत्र (आरईसी) में बढ़ोतरी देखी गई जिसकी मात्रा सालाना आधार पर 405 प्रतिशत बढ़कर 315 एमयू तक पहुंच गई। समीक्षाधीन माह में हरित बिजली की मात्रा 259 प्रतिशत बढ़कर एक अरब यूनिट हो गई। गौरतलब है कि 31 जुलाई 2024 को कारोबारी सत्र में 120 रुपये प्रति प्रमाण पत्र पर आरईसी बाजार ने अब तक का सबसे निचला मूल्य दर्ज किया। ये कीमतें संस्थाओं को अपने नवीकरणीय खरीद दायित्वों को पूरा करने और स्वैच्छिक ग्राहकों को उनकी स्थिरता आकांक्षाओं को पूरा करने का अवसर प्रदान करती हैं। डे-अहेड मार्केट (डीएएम) की मात्रा जुलाई 2024 में 27 प्रतिशत बढ़कर 505.6 एमयू हो गई। यह जुलाई 2023 में 397.6 एमयू थी। रियल-टाइम इलेक्ट्रिसिटी मार्केट (आरटीएम) की मात्रा जुलाई 2023 में 2,540 एमयू से बढ़कर जुलाई 2024 में 3,334 एमयू हो गई। यह सालाना आधार पर 31 प्रतिशत की वृद्धि दिखाती है।

जापान के निक्की 225 में 1987 के बाद बड़ी गिरावट

तोक्यो । जापान के शेयर सूचकांक निक्की 225 में सोमवार को भारी बिकवाली के कारण 10 प्रतिशत की गिरावट आई। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में नरमी के बीच यह गिरावट आई। सूचकांक निक्की सोमवार दोपहर तक 3,500 अंक से अधिक गिरकर 32,385.01 अंक पर आ गया। इसमें शुक्रवार को 5.8 प्रतिशत की गिरावट आई थी। दो कारोबारी सत्र की यह अभी तक की सबसे अधिक गिरावट रही। निक्की में अक्टूबर 1987 में 3,836 अंक की गिरावट आई थी जिसे ब्लैक मंडे करार दिया गया था। बैंक ऑफ जापान (बीओजे) के अपनी प्रमुख ब्याज दर बढ़ाने के बाद से तोक्यो में शेयर की कीमतों में गिरावट आई है।

पेट्रोल, डीजल कारों की जगह स्वच्छ तकनीक की नीतिगत रूपरेखा का इंतजार: मारुति

नई दिल्ली ।

मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) के चेयरमैन आरसी भार्गव ने कहा है कि कंपनी एक ऐसी नीतिगत रूपरेखा का इंतजार कर रही है, जो सभी स्वच्छ प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा दे, जिससे पेट्रोल और डीजल कारों के स्थान पर ऐसी पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने वाले वाहन आ जाएं। वित्त वर्ष 2023-24 के लिए कंपनी की सालाना रिपोर्ट में शेयरधारकों को संबोधित करते हुए भार्गव ने कहा कि औद्योगिक वृद्धि के लिए नीतियों में स्थिरता और पूर्वानुमानित कार्य वातावरण की आवश्यकता होती है। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि तीसरे कार्यकाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार बुनियादी ढांचे के निर्माण, राजकोषीय विवेक बनाए रखने, मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखने, विनिर्माण को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने वाले सुधारों को लागू करने और निजी क्षेत्र पर भरोसा करने पर अपना जोर जारी रखेगी। भार्गव ने रिपोर्ट में कहा कि कुछ लोगों का मानना है कि आपकी कंपनी इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण में धीमी रही है। हमने राष्ट्रीय उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अधिक विविध दृष्टिकोण अपनाने का फैसला किया और अपने सभी अंडे एक ही टोकरी में नहीं रखना चाहते थे। उन्होंने कहा कि सरकार ने भी स्वीकार किया है कि भारत में विभिन्न प्रौद्योगिकियों के उपयोग की आवश्यकता है। भार्गव ने कहा कि उत्तर प्रदेश जैसे कुछ राज्यों ने इस दिशा में पहले ही कदम उठा लिए हैं। अब हम एक ऐसे नीतिगत ढांचे का इंतजार कर रहे हैं जो उन सभी तकनीकों को बढ़ावा देगा जिनके परिणामस्वरूप पेट्रोल और डीजल कारों को अन्य तकनीकों का उपयोग करने वाली कारों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सके।

देश के सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर में जुलाई में हल्की गिरावट

नई दिल्ली। देश के सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर जून की तुलना में जुलाई में थोड़ी धीमी देखी गई। एक मासिक सर्वेक्षण में यह जानकारी दी गई है। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया भारत सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि सूचकांक जुलाई में 60.3 रही जबकि जून में यह 60.5 थी। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर अंक का मतलब गतिविधियों में विस्तार से और 50 से कम अंक का आशय संकुचन से होता है। एचएसबीसी के एक मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जुलाई में सेवा क्षेत्र की गतिविधि थोड़ी धीमी गति से बढ़ी, नए कारोबार में और वृद्धि हुई जो मुख्य रूप से घरेलू मांग से प्रेरित रही। सेवा कंपनियां आने वाले वर्ष के लिए आशावादी हैं। सितंबर 2014 में इस सर्वेक्षण की शुरुआत के बाद से नए निर्यात ठेकों में तीसरी सबसे तेज वृद्धि हुई है, जिसका कारण दुनिया भर से भारतीय सेवाओं की मांग में वृद्धि है। निर्यात ठेकों की प्रमुख मांग ऑस्ट्रिया, ब्राजील, चीन, जापान, सिंगापुर, नीदरलैंड और अमेरिका से रही। सर्वेक्षण में कहा गया है कि अनुकूल आर्थिक स्थिति और उत्पादन के प्रति आशावादी उम्मीदों ने सेवा कंपनियों में भर्ती को बढ़ावा दिया। इस बीच एचएसबीसी इंडिया कंपोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स जुलाई में 60.7 रहा, जो जून में 60.9 था। एचएसबीसी इंडिया भारत सेवा पीएमआई को एसएंडपी ग्लोबल ने करीब 400 सेवा क्षेत्र की कंपनियों को भेजे गए सवालों के जवाबों के आधार पर तैयार किया है।

घर में घुसकर लड़की को मारी गोली, भीड़ ने की पिटाई युवक बोला- शादी के लिए दबाव बना रही थी

नालंदा। में सोमवार को एक युवक ने घर में घुसकर युवती के सीने में गोली मार दी। जिसके बाद भीड़ ने भाग रहे आरोपी को पकड़ा और पुलिस के सामने ही उसकी पिटाई कर दी। लड़की और युवक दोनों की हालत गंभीर है। इलाज के लिए दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। युवक ने कहा कि हमदोनों के बीच प्रेम-प्रसंग चल रहा था। लड़की मुझ पर शादी के लिए दबाव बना रही थी। घरवालों के कहने पर मेरे खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। बताया जा रहा है कि फायरिंग के बाद आरोपी युवक भागने लगा। गांव वाले भी उसका पीछा करने लगे। आरोपी घबराकर पास के एक गोदाम के ऑफिस में छिप गया। उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। इसी बीच बाहर ग्रामीणों की भीड़ इकट्ठा हो गई।आक्रोशित लोग ऑफिस की खिड़की तोड़कर अंदर घुसे और आरोपी युवक को बाहर निकालकर बेरहमी से पिटाई कर दी। बेहोश होने तक भीड़ उसकी पिटाई करती रही। कोई लाठी तो कोई लात-मुक्के से उसे मारता रहा। भीड़ के सामने पुलिस बेबस दिखी। युवक को बचाने के चक्कर में पुलिस को भी चोट लगी है। घटना परवलपुर थाना क्षेत्र के पीलीच गांव की है। आरोपी युवक ने कहा कि डेढ़ साल से उसके साथ संबंध में थे। वो बोलती थी शादी वो मुझसे ही करेगी। हम बोले जब तक रिलेशन चलता है चलाओ। फिर हम अपनी पसंद से शादी कर लेंगे और तुम

अपनी पसंद के लड़के से शादी कर लेना। वो बोलती थी कि जब शादी नहीं करोगे तो मेरे साथ रिलेशन में क्यों रहोगे।हम उसको बोले थे कि बात करोगी तो शादी करना पड़ेगा। फिर नहीं बोलना कि परिवार वाले नहीं मान रहे हैं। वो बोली जान दे देंगे पर किसी और से शादी नहीं करेंगे। तब हमको अपना जैसा फील हुआ। उसको 40 हजार का वन प्लस मोबाइल दिए। वो जीजू को दे दी। उसके पास खराब मोबाइल था। फिर उसको 15 हजार का मोबाइल दिया। कहीं भी ले जाना होता था तो सेफ्टी से ले जाते थे। पिछले महीने भी 20 हजार खर्च किए। परिवार वालों के प्रेशर से थाने में की थी शिकायत वो बोली थी किसी और से शादी करेगा तो तुमको और तुम्हारे परिवार को छोड़ेंगे नहीं।

हम बोले थे कि तुम्हीं से शादी करेंगे। लड़की परिवार वालों के प्रेशर से थाने में शिकायत की थी। वो परिवार वाले के सपोर्ट में आ गई। सब से गुहार लगाए कि शादी करवा दीजिए। वो लोग कहते थे कि मरा जाओगे। आज बोली थी कि दोनों साथ में मरेंगे। उसको एक गोली मारे।

फिर जब हम अपने आप पर गोली चलाने लगे तो गोली चली ही नहीं हिलसा डीएसपी-2 गोपाल कृष्ण ने बताया कि पीलीच गांव में एक युवती को गोली मारी गई है। गोली मारने वाला युवक गांव से बाहर एक गोदाम में छिपा गया था। ग्रामीण युवक को घेरे थे।

पुलिस ने युवक को अपने कब्जे में लेकर इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया। घटनास्थल से 1 पिस्तौल, 1 कट्टा, 1 कारतूस और एक खोखा बरामद हुआ है। मामला प्रेम-प्रसंग का लग रहा है।

संक्षिप्त डायरी

गंडक के जलस्तर में वृद्धि डाउन स्ट्रीम में पहुंचे मगरमच्छ

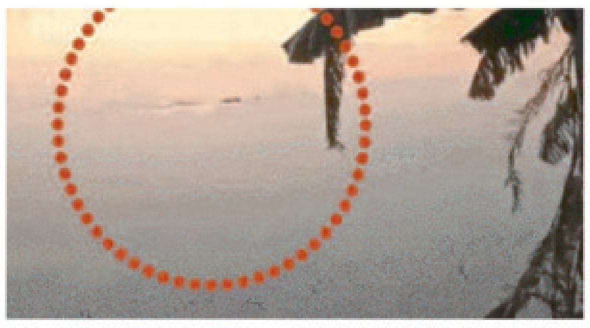

बेतिया। के गंडक नदी में मगरमच्छ की संख्या में तेजी से इजाफा देखने को मिल रहा है। इससे अब डाउन स्ट्रीम में भी मगरमच्छ नजर आ रहे हैं। बढ़ती संख्या से एक तरफ पर्यावरण और वन विभाग खुश है, तो दूसरी ओर मछुआरों के लिए सबसे ज्यादा परेशानी का सबब बन गया है। कई बार मगरमच्छ मछुआरों के जाल में फंस जा रहे है। जबकि, रात में नदी के आसपास के घरों तक रेंगते हुए पहुंच जा रहे हैं। वहीं, दिन में रेत पर धूप सेंकते नजर आ रहे है। जिससे ग्रामीण और किसानों में भय का माहौल है सिसवा गांव में मगरमच्छ के भय से किसान परेशान इधर, योगापट्टी के मंगलपुर पंचायत के सिसवा गांव के लोग इन दिनों गंडक नदी में बहकर पहुंचे मगरमच्छों व घड़ियाल से परेशान हैं। ग्रामीण पप्पू पांडेय ने बताया कि मंगलपुर पंचायत के लोगों को पहले गंडक में पानी बढ़ने पर चारों ओर जल जमाव का सामना करना पड़ा। गंडक नरम पड़ी तो कटाव और अब नदी में आए अनगिनत दर्जनों मगरमच्छ के भय का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों की खेती-बारी पूरी तरह से चौपट होने के कगार पर है। हजारों एकड़ फसल की देखभाल नहीं कर पा रहे किसान पप्पू पांडेय ने बताया कि दियारा क्षेत्र में हजारों एकड़ फसल बर्बाद हो रहा है। मजबूरी में लोग नदी पार कर किसी तरह खेती के लिए जा रहे हैं। हालांकि, कई बार मगरमच्छ उन पर हमला कर दे रहे हैं। लेकिन, सतर्कता बरतने की की वजह से लोगों को क्षति नहीं पहुंची है। यहां झुंड में मगरमच्छ नदी किनारे से लेकर खेतों में विचरण कर रहे हैं। नाव से नदी पार करने पर मगरमच्छों का झुंड नाव की ओर टूट पड़ता है। हालांकि, अबतक किसी तरह के जान-माल की क्षति नहीं हुई है। लोगों को मगरमच्छ से दूर जाकर नाव से नदी पार करना पड़ रहा है। अन्यथा मगरमच्छ के दूर जाने का इंतजार करना पड़ रहा है।

बीमा भारती के पति का कोर्ट में सरेंडर 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया

पूर्णिया। के हाई प्रोफाइल गोपाल यादुका मर्डर मामले में पूर्व विधायक बीमा भारती के पति अवधेश मंडल ने सोमवार को पूर्णिया सिविल कोर्ट में सरेंडर किया है। कोर्ट ने अवधेश मंडल को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। इस मामले में आरोपी बेटा अब भी फरार है। अवधेश मंडल भी मामले में आरोपी बनाए जाने के बाद से ही फरार था। हालांकि, आज उसने कोर्ट में सरेंडर कर दिया है। पूर्णिया पुलिस ने अवधेश मंडल पर हत्या की साजिश के आरोप में गिरफ्तारी को लेकर छापेमारी कर रही थी। अवधेश मंडल रुपौली विधानसभा क्षेत्र से 5 बार की पूर्व विधायक बीमा भारती के पति हैं। हत्याकांड में शामिल बेटा राजा अब भी फरार है, जिसको पुलिस तलाश रही है। पुलिस ने हत्याकांड के आरोपी विकास कुमार, ब्रजेश यादव, संजय भगत और विशाल राय को गिरफ्तार किया। इसके बाद 48 घंटे की रिमांड पर लिया था। इन चारों आरोपियों से पूछताछ की गई। पूछताछ में आरोपियों ने हत्याकांड में दोनों पिता-बेटे की संलिप्तता सामने आई थी। हालांकि, बीमा भारती ने मीडिया के सामने आकर अपने पति और बेटे का बचाव किया था। लोकसभा और विस उपचुनाव में हार गई थी बीमा भारती बता दें कि बीमा भारती रुपौली से पांच बार की विधायक रह चुकी हैं। जदयू से इस्तीफा देकर बीमा भारती ने बतौर राजद प्रत्याशी लोकसभा का चुनाव लड़ा था। मगर इस चुनाव में उन्हें करारी हार मिली। इसके बाद बीमा भारती ने विधानसभा उपचुनाव में छठी बार अपनी किस्मत आजमाई थी। इस चुनाव में भी निर्दलीय प्रत्याशी शंकर सिंह के आगे हार का मुंह देखना पड़ा। लोकसभा और विधानसभा उपचुनाव दोनों में ही वे तीसरे नंबर पर रही।

छुआछूत की बात न करें चिराग उनकी पहली हीरोइन कंगना थीं

बिहार। सुप्रीम कोर्ट के SC/ST आरक्षण में कोटे में कोटा और इसमें क्रीमी लेयर लागू करने के फैसले के बाद से बिहार में सियासत तेज हैं। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव इसका विरोध कर रहे हैं। वहीं हाजीपुर सांसद और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने भी कोर्ट के फैसले पर आपत्ति जताई है। चराग के विरोध को बिहार के पूर्व सीएम और केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी ने स्वार्थ बताया है। वहीं एमएलसी सच्चिदानंद राय ने कहा कि छुआछूत की बात चिराग

पासवान ना ही करें। उनका जूठा खाने के लिए ब्राह्मण बैठे हैं। उनकी तो पहली हीरोइन कंगना रनौत थी। बता दें कि राजनीति से पहले चिराग पासवान ने एक्टिंग में हाथ आजमाया था। वहीं एससी-एसटी में क्रीमी लेयर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर तेजस्वी की पुनर्विचार याचिका को लेकर एमएलसी सच्चिदानंद राय ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के सात जज ने जजमेंट दिया है तो इस पर अब क्या विचार करे। नौवीं फेल की बात छोड़िए। मांझी ने कहा है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश का स्वागत करते हैं। सुप्रीम कोर्ट का जो जजमेंट आया है वह 10 साल पहले आना चाहिए था। बाबा साहेब के अनुसार साक्षरता एक मानदंड है सबसे नीचे होने का। वहीं, उन्होंने चिराग पासवान को स्वार्थी बताया है। दरअसल चिराग ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर कहा था कि देश में दलितों के साथ भेदभाव होता है। इस पर मांझी ने कहा कि ऐसी बात स्वार्थी लोग कह रहे हैं। भुइयां, मुसहर, डोम, मेहतर जाति के जो लोग हैं उनमें से कितने आईएएस, आईपीएस, इंजीनियर और चीफ इंजीनियर हैं? जो लोग आज क्षोभ व्यक्त कर रहे हैं चार जातियां उनका सब है तो इसका मतलब है कि शेड्यूल कास्ट का हक वही लोग लेते रहें? 76 साल से तो वह लोग लेते ही रहे हैं।

सोमवारी पर तेजस्वी-राजश्री ने की पूजा, लंगर परोसा

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव और उनकी पत्नी राजश्री सोमवारी के मौके पर राजवंशी नगर हनुमान मंदिर पहुंचे। उनके साथ उनकी बेटी कात्यायिनी भी गोद में । सभी ने मंदिर में पूजा-अर्चना की। तेजस्वी सफेद कुर्ता-पायजामा में दिखे तो पत्नी रेड कलर के ड्रेस में। बेटी ने गुलाबी फ्रॉक पहन रखा था। तेजस्वी और उनकी पत्नी ने लोगों के बीच खुद से भोजन परोसा। तेजस्वी ने कहा कि लोगों को लंगर खिलाने की व्यवस्था हमलोगों ने की है। गरीबों की सेवा इस माध्यम से हमलोग कर रहे हैं। भगवान का आशीर्वाद भी हमलोगों ने लिया है। तेजस्वी ने कहा कि भगवान पर बयानबाजी से लोगों को बचना चाहिए। लोगों की भावना को ठेस पहुंचाने वाली बात किसी को नहीं करनी चाहिए। विशेष राज्य के दर्जे के वादे का क्या ? उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार को देश की महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी से मतलब नहीं है। लोगों को अच्छी शिक्षा मिले, अच्छी चिकित्सा मिले, लोगों को रोजगार मिले, बिहार जैसे गरीब राज्य में कल-कारखाने लगें, इससे भाजपा को कोई लेना देना नहीं है। भाजपा सिर्फ हिंदू-मुसलमान करके राजनीतिक रोटी सेंकना चाहती है। भाजपा के लोगों को बताना चाहिए कि जो आरक्षण का दायरा हमलोगों ने बिहार में बढ़ाया है, उसे केन्द्र सरकार नौवीं अनुसूची में क्यों नहीं डाल रही है। बिहार के साथ वादा किया गया था कि विशेष राज्य का दर्जा दिया जाएगा, उस वादे क्या हुआ।

गंगा उफान पर, खतरे के 2 सेमी नीचे जिला प्रशासन की टीम कर रही मॉनिटरिंग

भागलपुर। में लगातार 2 दिनों से हो रही बारिश से गंगा उफान पर आ गया है। 2 दिनों में जलस्तर 15 सेमी बढ़ गया है। जिले के निचले इलाके में पानी प्रवेश करना शुरू हो गया है।सुल्तानगंज समेत कई गंगा घाट खतरे के निशान से 2 सैंटीमीटर नीचे है। एहतियात के तौर पर जिला प्रशासन की टीम लगातार मॉनिटरिंग कर रही है। सुल्तानगंज का उत्तर वाहिनी गंगा भी उफान पर है। मालूम हो कि उत्तरवाहिनी गंगा तट पर श्रावणी मेला को लेकर श्रद्धालुओं की लाखों की संख्या में हर दिन भीड़ हो रही है। इसको लेकर जिला प्रशासन की ओर से गंगा में बढ़ते जलस्तर को देखते हुए लगातार

बैरिकेडिंग को ऊपर किया जा रहा है। ताकि कांवरिया को कोई दिक्कत या परेशानी न उठाना पड़े। कांवरियों की सुरक्षा के लिए जिला प्रशासन लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। गंगा में बढ़ते जलस्तर को देखते हुए घाट पर नाव की व्यवस्था की गई है। बता दें कि देश-विदेश और कई राज्यों से श्रद्धालु सुल्तानगंज के उत्तर वाहिनी गंगा से जल भरकर देवघर के लिए रवाना होते हैं। वहां पर भगवान भोलेनाथ को जल अर्पण करते हैं। मामले को लेकर जिला अधिकारी ने बताया कि गंगा के बढ़ते जलस्तर को देखते हुए फलक कंट्रोल डिवीजन हमारा लगा हुआ है।

जैसे-जैसे घाट के पानी का स्तर बढ़ता है, तो हमलोग बैरिकेड को ऊपर की तरफ लाते हैं। ताकि कम पानी में ही हमारे श्रद्धालु स्नान और जल भर सके। उन्होंने आगे बताया कि हम लोगों ने जाली भी लगाए हैं। ताकि अच्छी सुरक्षा हो सके। घाट पर नाव और बोट से श्रद्धालुओं की निगरानी की जाती है। कम पानी में नहाने के लिए निर्देश भी दिया जाता है।

चिराग-जीतनराम मांझी नहीं बचाएंगे आरक्षण, इन्होंने वोट का किया सौदा

बोधगया। के विधायक पूर्व कृषि मंत्री कुमार सर्वजीत ने रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने चिराग पासवान और जीतनराम मांझी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि चिराग पासवान और जीतनराम मांझी आरक्षण नहीं बचाएंगे। इन लोगों ने चुप्पी साध ली है। इनसे आरक्षण बचाने की उम्मीद छोड़ देनी चाहिए। इनसे भला नहीं होनेवाला। आरक्षण के लिए सड़कों पर उतरना होगा। अब तक आंदोलन का रूप ऐसा होना चाहिए था कि पूरा देश देखता। लेकिन पता नहीं क्यों अति पिछड़ा और अनुसूचित जाति ने खुद को कमजोर कर लिया है। यही वजह है कि आरक्षण की हकमारी का खेल रचा जा रहा है।

4 फॉर्मेट में होगा पटना क्रिकेट लीग का आयोजन ऑनलाइन भरे जाएंगे लीग के फॉर्म

पटना। जिला क्रिकेट संघ (PDCA) के नवनिर्वाचित कमेटी ऑफ मैनेजमेंट की सोमवार को बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता PDCA के उपाध्यक्ष रहबर आबदीन ने की। इसमें कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। अब क्लबों को लीग खेलने के लिए मैनुअल फॉर्म भरने की जरुरत नहीं पड़ेगी। अगले सीजन से लीग का फॉर्म ऑनलाइन भरा जाएगा।चार फॉर्मेट में होगा पटना क्रिकेट लीग का आयोजन PDCA अब

डिजिटल होगा। संघ अपना वेबसाइट बनाएगी, जिसकी लॉन्चिंग सितंबर महीने में की जाएगी। अब पटना जिला क्रिकेट संघ चार फॉर्मेट में क्रिकेट लीग का आयोजन करेगा। तीन फॉर्मेट पुरुषों के लिए और 1 फॉर्मेट महिलाओं के लिए होंगे। पुरुषों के लिए सुपर डिवीजन क्रिकेट लीग, ए डिवीजन क्रिकेट लीग और जूनियर डिवीजन क्रिकेटर लीग का आयोजन किया जायेगा। महिलाओं के लिए एक क्रिकेट लीग का आयोजन होगा। दुर्गापूजा के बाद घरेलू सत्र की शुरूआत संघ के उपाध्यक्ष रहबर आबदीन ने कहा कि पटना जिला क्रिकेट संघ अगले सत्र में अपने घरेलू सीजन की शुरूआत दुर्गापूजा के बाद कर देगा। इसके लिए सितंबर में सारे नोटिफिकेशन निकाल दिए जाएंगे। नए सत्र में घरेलू सीजन में कुछ नया करने पर विचार किया जा रहा है कि जो खिलाड़ियों की बेहतरी से जुड़ा रहेगा। खिलाड़ी नए सीजन की तैयारी में जुट जाए उपाध्यक्ष रहबर आबदीन ने आगे कहा कि पटना जिला क्रिकेट संघ से संबद्धता प्राप्त क्लब के अधिकारी और खिलाड़ी अगले सीजन की तैयारी शुरू कर दें।

चलती बस में आग, खिड़कियों से कूदे लोग

किशनगंज। में सोमवार दोपहर सिलीगुड़ी से पूर्णिया जा रही बस में अचानक आग लग गई।

बस में करीब 20 यात्री सवार थे। बस जैसे ही खगड़ा ओवरब्रिज पर पहुंची गियर बॉक्स से अचानक धुआं निकलने लगा। धीरे-धीरे बस में आग लगने लगी। यात्रियों ने बताया कि खिड़कियों के कूदकर लोगों ने अपनी जान बचाई। बच्चों को भी खिड़कियों से बाहर निकाला गया। मामला खगड़ा ओवरब्रिज एनएच-27 का है। हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। बस में आग की सूचना सदर थाने की पुलिस और फायर ब्रिगेड को दी गई। आधे घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया, लेकिन तब तक बस पूरी तरह से खाक हो चुकी थी। बस करीब 1 बजकर 10 मिनट पर सिलीगुड़ी से किशनगंज बस स्टैंड पर पहुंची थी। बस वातानुकूलित थी। किशनगंज बस स्टैंड से पूर्णिया के लिए खुली थी।

इंटर में एडमिशन आज जारी होगा थर्ड मेरिट लिस्ट

बिहार। बोर्ड इंटरमीडिएट (सत्र 2024- 26) में नामांकन के लिए आज सोमवार को थर्ड मेरिट लिस्ट जारी की जाएगी। इसके बाद नामांकन प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। सूची में शामिल छात्र 5 से 8 अगस्त तक नामांकन लेंगे। बोर्ड ने कहा है कि तृतीय चयन सूची के आधार पर 8 अगस्त तक एडमिशन के बाद 9 अगस्त तक नामांकन सूची अपडेट करना होगा।स्पॉट एडमिशन की भी जानकारी मिलेगीबोर्ड ने कहा है कि जिनका नाम थर्ड मेरिट लिस्ट में नहीं है, उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है। तीसरे मेरिट लिस्ट में शामिल नहीं होने वाले स्टूडेंट्स तृतीय सूची के आधार पर एडमिशन की प्रक्रिया पूर्ण होने का इंतजार करें। इस दौरान स्टूडेंट्स थर्ड कट ऑफ देख सकते हैं। यह साफ है कि जिन-जिन संस्थानों और विषयों का विकल्प स्टूडेंट्स की ओर से भरा गया था। उन सभी

संस्थानों और विषयों का कट ऑफ अंक संबंधित स्टूडेंट्स के कट ऑफ से ज्यादा है। थर्ड लिस्ट के एडमिशन प्रक्रिया समाप्त होने के बाद स्पॉट एडमिशन के संबंध में बाद में जानकारी दी जाएगी। तृतीय चयन सूची में चयनित स्टूडेंट्स अगर आवंटित संस्थानों में एडमिशन नहीं लेते हैं तो वर्तमान सत्र में उनका नाम ओएफएसएस सिस्टम से हटा दिया जाएगा।आवंटित संस्थानों में होगा नामांकन नामांकन करने के लिए आवेदन करते समय विद्यार्थियों से 350 रुपए लिया गया था।

दिलीप जायसवाल और संजय झा को कमान, बीजेपी की नाराज वैश्यों को मनाने की कोशिश, नीतीश अपनी पुरानी नीति पर चलेंगे

बिहार। में विधानसभा का चुनाव अभी एक साल दूर है, लेकिन पार्टियों ने कमर कसना अभी से शुरू कर दिया है। इसकी शुरूआत हुई है प्रदेश में पार्टी का चेहरा बदल कर। यहां हर पार्टियों ने अपने हिसाब से प्रयोग किए हैं। बीजेपी ने जहां कुशवाहा नेता के रूप में उभर रहे सम्राट चौधरी को हटाकर दिलीप जायसवाल जैसे संयमित नेता को कमान सौंपी है। वहीं, नीतीश कुमार ने अपने सबसे अहम सिपहसालार संजय झा के कंधे पर जिम्मेदारी दी है।दूसरी तरफ राजद की कमान एक बार फिर से तेजस्वी यादव के हाथों में ही रहेगी। पार्टी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने आधिकारिक रूप से इस पर सहमति की मुहर लगा दी है। कांग्रेस अभी तक अनिर्णय की स्थिति में है। क्या लोकसभा चुनाव में बड़ी हार के बाद अखिलेश सिंह के नेतृत्व में ही बिहार में कांग्रेस आगे बढ़ेगी या कन्हैया और पप्पू यादव की बैकडोर से एंट्री होगी। इस पर फिलहाल पार्टी के किसी नेता के पास कोई जवाब नहीं है। वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण बागी कहते हैं कि दिलीप जायसवाल के सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी सीनियर नेताओं के साथ जूनियर को भी अपने भरोसे में लेना। ताकि वे पार्टी

में एक टीम की तरह काम करें। फिलहाल पार्टी में इंटरनल गुटबाजी हावी है। इस चीज को कैसे समाप्त करते हैं, ये उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती होगी।प्रवीण बागी कहते हैं कि मौजूदा समय में बीजेपी के कार्यकर्ताओं में भी निराश हैं। सत्ता में आने के बाद कार्यकर्ताओं को सत्ता का शेयर नहीं मिल पाया है। सरकार बनने के बाद भी बोर्ड, निगम, कमेटी में उन्हें जगह नहीं मिल पाई है। इनकी लगातार इस बात की शिकायत है कि जिले में अधिकारी कार्यकर्ताओं की नहीं सुनते हैं। इन सबको वे कैसे हैंडल करते हैं, ये भी इनके लिए एक चुनौती होगी। पूरे राज्य के स्तर पर खुद को साबित करना होगा दिलीप जायसवाल भले 20 सालों से बीजेपी के कोषाध्यक्ष रहे हैं। तीन बार से पार्टी के एमएलसी हैं, लेकिन अभी बिहार के स्तर पर उनकी पहचान या फिर स्वीकार्यता नहीं है। ऐसे में जब उनके पास पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी है तो उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि वे पार्टी में प्रदेश स्तर पर कार्यकताओं के बीच उन्हें अपनी पहचान बनानी है। कार्यकताओं को अपने साथ जोड़ना, उनका भरोसा अर्जित करना और चुनाव में जीतने के लिए प्रेरित करना। यह भी उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती होगी । गठबंधन में सम्मान के साथ सामंजस्य भी बनाना होगा बिहार में भले एनडीए के नेता नीतीश कुमार हों, लेकिन सबसे बड़ी पार्टी बीजेपी ही है।

ऐसे में दिलीप जायसवाल के सामने ये एक बड़ी जिम्मेदारी होगी कि पार्टी को गठबंधन में बड़े भाई का सम्मान दिलाए रखें।

इसके साथ उनपर दबाव होगा कि वे गठबंधन के अन्य घटक दल लोजपा और हम को किस तरह साध पाते हैं।

मानसून में रेनकोट नहीं का ऐसे रखें ध्यान

बारिश के मौसम में रेनकोट बड़े काम की चीज होती है। खासकर जब ऑफिस जाना हो या जब बच्चे स्कूल जाते हैं और तेज बारिश होने लगे तो रेनकोट का महत्व बढ़ जाता है। लेकिन बारिश के मौसम में रेनकोट का इस्तेमाल करने के बाद उसका सही से ध्यान नहीं रख जाता है तो रेनकोट ख़राब भी हो जाता है या रेनकोट के ऊपर फफूंदी के दाग भी लग जाते हैं। ऐसे में हम आपको कुछ टिप्स बताने जा रहे हैं जिन्हें फॉलो करके आप रेनकोट को हमेशा नया बनाकर रख सकते हैं।

ऐसे करें सफाई

रेनकोट की सफाई करना काफी आसान है, लेकिन ध्यान से साफ नहीं किया गया तो रेनकोट ख़राब भी हो सकता है। इसलिए उसकी सफाई कर आपको ध्यान देने की ज़रूरत है। रेनकोट को साफ करने के लिए आपको माइल्ड डिटर्जेंट का इस्तेमाल करना चाहिए। इसके लिए एक लीटर पानी में माइल्ड डिटर्जेंट को डालकर अच्छे से मिक्स कर लें और रेनकोट को डालकर कुछ देर छोड़ दें। कुछ देर बाद सॉफ्ट हाथों से साफ कर लें और हवा के नीचे के रख दें।

ऐसे निकाले दाग

अगर रेनकोट पर मिट्टी या फिर फिर किसी अन्य चीज का दाग लग गया है तो आप उसे आसानी से साफ कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले एक बार नॉर्मल पानी से साफ कर लें। अब दाग वाली जगह पर नींबू के रस को डालकर कुछ देर के लिए छोड़ दें। कुछ देर बाद सॉफ्ट क्लीनिंग ब्रश से दाग को साफ कर लें। साफ करने के बाद हवा के नीचे रख दें।

तेज धूप में न रखें

जी हां, अगर इस्तेमाल करने के बाद रेनकोट को तेज धूप में रखते हैं तो रेनकोट कभी भी ख़राब हो सकता है। इसलिए रेनकोट का इस्तेमाल करने के बाद तेज धूप में नहीं बल्कि फंखा के नीचे रख दें। जब रेनकोट से पानी पूरी तरीके से निकल जाए तो फिर आप उसे फोल्ड करके रख सकते हैं।

पैक करके रखने से पहले रखें ये ध्यान

ऐसा नहीं कि इस्तेमाल किया और सीधा फोल्ड करके रेनकोट को अंदर रख दिया। इससे रेनकोट कभी भी ख़राब हो सकता है। ऐसे में एक से दो-दिन सूखने के बाद ही रेनकोट को पैक करके अंदर रखें। रेनकोट पैक करने वक्त आप एक पेपर में नेप्थलीन की गोली लपेट लीजिए और अंदर रख दें। इससे रेनकोट फ्रेश रहेगा।

मानसून के मौसम में घर के अंदर होती है घुटन

तो अपनाएं ये कमाल के वेंटिलेशन डिजाइन

वेंटिलेशन एक अहम प्रक्रिया है, क्योंकि यह बासी हवा को ताजी हवा से बदल देता है। खराब वेंटिलेशन की वजह से कार्बन जमा हो सकता है और इससे घर में बैक्टीरिया भी बढ़ सकते हैं।

मानसून का मौसम खुशियों और त्योहारों का मौसम होता है, लेकिन साथ ही यह घर में घुटन और उमस का भी मौसम होता है। बंद खिड़कियां और दरवाजे, बारिश का पानी, और हवा में नमी घर के अंदर एक भारीपन सा माहौल पैदा कर सकती है। लेकिन अब आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। कुछ आसान वेंटिलेशन डिजाइन अपनाकर आप अपने घर को हवादार और खुशनुमा बना सकते हैं।

वेंटिलेशन डिजाइन क्या है

वेंटिलेशन डिजाइन, घरों में ताजी हवा के प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया है। इसमें कमरे से प्रदूषित हवा को बाहर निकालकर बाहर से ताजी हवा दी जाती है।
वेंटिलेशन डिजाइन के कई फायदे हैं

- ठंड के मौसम में हवा की गुणवत्ता बनाए रखना
- गर्म मौसम में तापमान को कंट्रोल करना
- नमी, धुआं, खाना पकाने की गंध, और इनडोर प्रदूषकों से छुटकारा पाना
- अटारी में गर्मी के स्तर को कंट्रोल करना
- क्रॉलस्पेस और बेसमेंट में नमी को कंट्रोल करना
- दीवारों से नमी को दूर रखना
- पानी के इस्तेमाल के कारण नमी के प्रभाव को कंट्रोल करना
- कंप्यूटिंग गैजेट से केमिकल के उत्सर्जन को कंट्रोल करना
- खाना पकाने के कारण दहन को कंट्रोल करना
- घर में गंध को कंट्रोल करना
- घर के अंदर अलग से कार्बन डाइऑक्साइड को कंट्रोल करना

घर में वेंटिलेशन के कई तरह के हो सकते हैं

नेचुरल वेंटिलेशन

खिड़कियों और दरवाजों के जरिए हवा का आना-जाना। यह वेंटिलेशन का सबसे बेहतर तरीका है। इसलिए, जब भी संभव हो, खिड़कियां और दरवाजे खोलकर ताजी हवा को घर के अंदर आने दें। विपरीत दिशाओं में खिड़कियां और दरवाजे खोलकर हवा को घर से गुजरने का रास्ता दें। छत या दीवारों में रोशनदान सेट करें ताकि ऊपर की गर्म हवा बाहर निकल सके। बाथरूम और रसोई में एयर वेंट लगाएं, जहां नमी और गंध जमा होने की संभावना होती है। घर के अंदर कुछ छोटे पौधे लगाएं जो हवा को शुद्ध करने में मदद करते हैं।

मेकैनिकल वेंटिलेशन

इसमें बाहरी पंखे, अटारी पंखे और पूरे घर के पंखे शामिल हैं। नए और मौजूदा दोनों तरह के ऊर्जा-कुशल घरों में इनडोर एयर क्वालिटी बनाए रखने के लिए यांत्रिक वेंटिलेशन की जरूरत होती है। छत के पंखे और टेबल फैन का इस्तेमाल करके हवा को घुमाएं। इसमें हीट रिकवरी वेंटिलेशन या एनर्जी रिकवरी वेंटिलेशन शामिल हैं। वेंटिलेशन एक अहम प्रक्रिया है, क्योंकि यह बासी हवा को ताजी हवा से बदल देता है। खराब वेंटिलेशन की वजह से कार्बन जमा हो सकता है और इससे इमारत में बैक्टीरिया भी बढ़ सकते हैं। इसलिए, वेंटिलेशन सिस्टम चुनते समय आपके घर के लेआउट और जरूरतों को ध्यान में रखना जरूरी है। आप इन तरीकों से अपने घर में वेंटिलेशन बढ़ा सकते हैं

- मौजूदा वेंटिलेशन सिस्टम का सही इस्तेमाल करें
- खिड़कियां या जालीदार दरवाजे खोलें
- रसोई में वेंटिलेशन पंखा लगाएं

अपने घर में वेंटिलेशन कैसे बढ़ाएं

घर और खुले स्थानों की ओर हवा लाने के लिए पेड़ लगाएं। पेड़ों को एक-दूसरे के बहुत पास न लगाएं, क्योंकि पत्ते हवा को अंदर नहीं आने देते। तेज हवाओं के दौरान नुकसान से बचने के लिए पेड़ों और घर के बीच दूरी बनाएं। पेड़ से घर की दूरी पेड़ की ऊंचाई से ज्यादा होनी चाहिए। अगर आपके घर में विंडो एयर कंडीशनर है, तो उसे चलाएं जिसमें बाहरी हवा का प्रवेश या वेंट हो। वेंट खुला रहने दें। अगर आपके HVAC सिस्टम में बाहरी हवा का प्रवेश है, तो उसे खोलें। अगर आपने छत का पंखा नहीं लगवाया है, तो खुली खिड़की के पास जितना हो सके, एक स्टैंडअलोन पंखा लगाएं ताकि हवा बाहर की ओर जाए। अच्छे वेंटिलेशन से घर में ताजी हवा आती है, हवा फ़िल्टर होती है, और हवा का प्रवाह बेहतर होता है। इससे वायरस के कण कम होते हैं और बीमारियां फैलने से रोका जा सकता है। साथ ही, हवादार घर में धूल के कणों को कंट्रोल रखा जा सकता है।

सावन के मौके पर घर के आंगन से लेकर मंदिर तक में बनाएं जा सकते हैं भगवान शिव से जुड़ी रंगोली के ये डिजाइंस

घर को सजाना हम सभी पसंद करते हैं। वहीं तीज-त्योहार के मौके पर हम घर में साफ-सफाई से लेकर पूजा पाठ तक करते हुए कई चीजों का खासतौर से ध्यान रखते हैं।

सावन का महीना शुरू हो चुका है। हर सोमवार को पत्नियां अपने पति की लंबी आयु के लिए व्रत रखती हैं और भगवान शिव की पूजा करती हैं। इस दिन पाठ-पूजा भी की जाती है। इस मौके पर आप घर के मंदिर में भगवान शिव से जुड़ी कई तरह की रंगोली बनाई जा सकती हैं। सावन के खास मौके पर मंदिर में बनाने के लिए रंगोली के कुछ आसान और खास डिजाइंस।

ओम रंगोली डिजाइन

भगवान शिव का चित्र बनाना आपके लिए थोड़ा मुश्किल हो सकता है। इसके लिए आप घर के मंदिरके बाहर बड़े साइज की थाली या पूजा घर में ओम नाम: शिवाय लिख सकती हैं या केवल ओम भी रंगों या फूलों से लिख सकती हैं। रंगोली को भरा-भरा बनाने के लिए आप पहले बैकग्राउंड के लिए गोलाई में फ्रेम को तैयार करें।

शिवलिंग रंगोली डिजाइन

घर के मंदिर में भगवान शिव की प्रतिमा के सामने आप रंगों की मदद से शिवलिंग रंगोली के माध्यम से बना सकती हैं। इसके लिए आप काले रंग के अलावा अन्य कई रंग इस्तेमाल कर सकती हैं। शिवलिंग के साथ में आप बेलपत्र और फूल डिजाइन की रंगोली भी बना सकती हैं। बेलपत्र और फूलों के डिजाइन को 3डी बनाने के लिए माचिस की तीली की मदद लें।

त्रिशूल रंगोली डिजाइन

ओम के अलावा आप त्रिशूल के डिजाइन को डमरू के साथ में बना सकती हैं। इसके लिए आप भूरे रंग के साथ नारंगी रंग को चुनकर डिजाइन को पूरा करें। आस-पास चाहे तो बॉर्डर के लिए बेलपत्र रंगोली डिजाइन को बना सकती हैं। त्रिशूल और डमरू के आकार को डेप्थ देने के लिए आप सफेद रंग से आउटलाइन कर सकती हैं।

भगवान शिव रंगोली डिजाइन

अगर आप कला से जुड़ी व्यक्ति हैं और तरह-तरह के चित्र बनाना पसंद करती हैं तो इस तरह से नीले रंग की मदद लेकर भगवान शिव के चेहरे को रंगोली में बना सकती हैं। रंगोली के डिजाइन को पूरा करने के लिए इस तरह के चावल की मदद से बनाया चांद डिजाइन को आकर्षक भी बनाने में मदद करेगा। दीपक जलाकर आप पूजा सकती हैं।

शिवलिंग रंगोली डिजाइन

घर के मंदिर में भगवान शिव की प्रतिमा के सामने आप रंगों की मदद से शिवलिंग रंगोली के माध्यम से बना सकती हैं। इसके लिए आप काले रंग के अलावा अन्य कई रंग इस्तेमाल कर सकती हैं। शिवलिंग के साथ में आप बेलपत्र और फूल डिजाइन की रंगोली भी बना सकती हैं। बेलपत्र और फूलों के डिजाइन को 3डी बनाने के लिए माचिस की तीली की मदद लें।

त्रिशूल रंगोली डिजाइन

ओम के अलावा आप त्रिशूल के डिजाइन को डमरू के साथ में बना सकती हैं। इसके लिए आप भूरे रंग के साथ नारंगी रंग को चुनकर डिजाइन को पूरा करें। आस-पास चाहे तो बॉर्डर के लिए बेलपत्र रंगोली डिजाइन को बना सकती हैं। त्रिशूल और डमरू के आकार को डेप्थ देने के लिए आप सफेद रंग से आउटलाइन कर सकती हैं।

भगवान शिव रंगोली डिजाइन

अगर आप कला से जुड़ी हैं और तरह-तरह के चित्र बनाना पसंद करती हैं तो इस तरह से नीले रंग की मदद लेकर भगवान शिव के चेहरे को रंगोली में बना सकती हैं। रंगोली के डिजाइन को पूरा करने के लिए इस तरह के चावल की मदद से बनाया चांद डिजाइन को आकर्षक भी बनाने में मदद करेगा। दीपक जलाकर आप पूजा सकती हैं।

मोनोक्रोम आउटफिट में स्टनिंग दिखने के लिए इन टिप्स की लें मदद

मोनोक्रोम आउटफिट स्टाइलिंग पिछले काफी समय से चलन में है। जिन महिलाओं के लिए कलर ब्लॉकिंग या कलर व्हील को ध्यान में रखकर सही कलर चुनने में परेशानी होती है, उनके लिए मोनोक्रोम आउटफिट स्टाइल करना अच्छा ऑप्शन है। चूंकि इसमें आपको डिफरेंअ कलर्स सलेक्ट को लेकर बहुत अधिक परेशान नहीं होना पड़ता है और इसे स्टाइलिंग का सेफ ऑप्शन माना जाता है। लेकिन मोनोक्रोम आउटफिट को स्टाइल करना भी इतना आसान नहीं होता। अगर आप मोनोक्रोम आउटफिट कैरी करना चाहती हैं तो यह जरूरी है कि आप इसे स्टाइल करते समय कुछ बातों का खासतौर पर ध्यान रखें। अगर इसकी स्टाइलिंग के दौरान आपसे गड़बड़ी हो जाती है तो आपका लुक एकदम डल व बोरिंग नजर आता है। मोनोक्रोम आउटफिट की स्टाइलिंग के दौरान आपको कलर्स सलेक्शन से लेकर प्रिंट्स व पैटर्न आदि पर भी उतना ही ध्यान देना होता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको मोनोक्रोम आउटफिट को स्टाइल करने के कुछ बेहतरीन आईडियाज शेयर कर रहे हैं, जिसे जानने के बाद आपको अपने लुक को एन्हॉन्स करना आसान हो जाएगा-

सही हो कलर

मोनोक्रोम आउटफिट में खुद को स्टाइल करते समय जिस बात का सबसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए, वह है कलर। आप किसी भी कलर शेड को सलेक्ट करते समय अपनी स्किन टोन व ओकेजन का खास ख्याल रखें। मसलन, अगर आप ऑफिस में मोनोक्रोम आउटफिट को स्टाइल कर रही हैं तो ऐसे में आप व्हाइट व ब्लैक कलर को प्राथमिकता दे सकती हैं। वहीं एक पॉप लुक के लिए आप कुछ ब्राइट कलर्स व नियॉन कलर सलेक्ट करें।

लाइट व डार्क शेड

कई बार ऐसा होता है कि हम मोनोक्रोम लुक तो कैरी करना चाहते हैं, लेकिन एक ही कलर में डिफरेंट शेड्सको सलेक्ट करते हैं। इस तरह डिफरेंट शेड्स आपके लुक को खास बनाते हैं। हालांकि, इस दौरान भी आपको शेड्स को सलेक्शन स्मार्टली करना होता है। मसलन, लाइट टिंट आंख को आकर्षित करेगा और उस बॉडी पार्ट को अधिक हाइलाइट करेगा, जबकि एक डार्क शेड ध्यान भटकाएगा। इस तरह आप सही शेड सलेक्शन करें।

एसेसरीज का लें सहारा

मोनोक्रोमेटिक लुक कुछ लड़कियों को काफी बोरिंग लगता है। अगर आपके साथ भी ऐसा ही है तो आप कुछ एसेसरीज के जरिए अपने लुक को स्पाइस अप कर सकती हैं। मसलन, आप हैट से लेकर सनग्लासेस, कुछ चंकी ज्वैलरीज आदि को अपने आउटफिट के साथ पेयर करें। यह आपके लुक की एकरसता को ब्रेककरेंगे और आपके लुक को अधिक स्टाइलिश बनाएंगे।

यूं एड करें टेक्सचर

अगर आप मोनोक्रोम आउटफिट को स्मार्टली कैरी करती हैं तो इससे आप अपने लुक में टेक्सचर को भी बेहद खूबसूरती के साथ शामिल कर सकती हैं और अपने लुक को खास बना सकती हैं। मसलन, आप एक स्लीक टॉप के साथ वुलन स्कर्ट को पेयर कर सकती हैं या फिर बल्कि निट स्वेटर के साथ स्लिम या शाइनी पैंट्स को स्टाइलकिया जा सकता है और इस तरह आप खुद को स्टाइल कर सकती हैं।

फुटवियर सलेक्ट

मोनोक्रोमेटिक लुक में आपके फुटवियर भी काफी अहम् होते हैं। इसमें भी आप कलर्स का सलेक्शन इस आधार पर करें कि आप किस तरह का लुक कैरी करना चाहती हैं। मसलन, व्हाइट, ब्लू एंड ब्लैक कलर मोनोक्रोमेटिक लुक में आप मैचिंग फुटवियर कैरीकरके एक एलीगेंट लुक पा सकती हैं। वहीं, अगर आप थोड़ा एक्सपेरिमेंटल होना चाहती हैं तो ऐसे में प्रिंटेड या फिर ब्राइट व नियॉन कलर को चुन सकती हैं। यह आपके लुक को एकदम से चेंज कर देगा।

पेरिस ओलंपिक : स्वर्ण से दो जीत दूर भारतीय हॉकी टीम, सेमीफाइनल में जर्मनी की चुनौती

पेरिस (एजेंसी)। ओलंपिक में 44 साल बाद स्वर्ण पदक जीतने की राह पर भारतीय हॉकी टीम के सामने मंगलवार को सेमीफाइनल में विश्व चैम्पियन जर्मनी की चुनौती होगी और इस बाधा को पार करके टीम 'संकटमोचक' पी आर श्रीजेश को शानदार विदाई देने के अपने मिशन की अगला कदम रखेगी। ब्रिटेन के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में 10 खिलाड़ियों तक सिमटने के बावजूद भारतीय टीम ने जिस साहस और कौशल का प्रदर्शन करके मुकाबला पेनल्टी शूटआउट तक खिंचा, वह काबिले तारीफ है।

तोक्यो ओलंपिक कांस्य पदक मैच में जर्मनी की पेनल्टी बचाकर भारत को 41 साल बाद पदक दिलाने वाले नायक श्रीजेश एक बार फिर जीत के सूत्रधार बने। उन्होंने शूटआउट में ब्रिटेन के दो शॉट बचाए और इससे पहले निर्धारित समय के भीतर भी ब्रिटेन ने 28 बार भारतीय गोल पर हमला बोला और 10 पेनल्टी कॉर्नर बनाए लेकिन महज एक सफलता मिली। 36 वर्ष के श्रीजेश का यह आखिरी टूर्नामेंट है और उन्हें स्वर्ण पदक के साथ विदा करने का मिशन भारतीय टीम के लिए अतिरिक्त प्रेरणा बना है।

1980 में मॉस्को में जीता था गोल्ड

भारत ने आठ ओलंपिक स्वर्ण में से आखिरी 1980 में मॉस्को में जीता था और अब पेरिस में उसके पास 44 साल बाद इतिहास रचने का मौका है। सेमीफाइनल जीतने पर भारत का रजत तो पक्का हो जाएगा जो आखिरी बार उसने 1960 में रोम में जीता था। ब्रिटेन के खिलाफ भारत ने करीब 40 मिनट 10 खिलाड़ियों के साथ खेला क्योंकि अमित रोहिदास को रेडकार्ड दिखाया गया था।

सेमीफाइनल से बैन हुए अमित रोहिदास की कमी खलेगी

सेमीफाइनल में भी भारत को अपने नंबर एक फर्स्ट रशर के बिना ही खेलना होगा जिन पर एक मैच का प्रतिबंध लगाया गया है। हॉकी इंडिया ने हालांकि इसके खिलाफ अपील की है। रोहिदास की गैर मौजूदगी भारत को पेनल्टी कॉर्नर में भी खलेगी क्योंकि कप्तान हरमनप्रीत सिंह के बाद वह भारत के ड्रैग फ्लिक विशेषज्ञ हैं। उनकी गैर मौजूदगी में अब हरमनप्रीत पर अतिरिक्त दबाव रहेगा जो शानदार फॉर्म में हैं और अब तक 7 गोल कर चुके हैं। आधुनिक हॉकी में भारतीय डिफेंस का यह सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था और जैसा कि कोच क्रेग फुल्टोन ने कहा कि यह जीत नहीं एक 'स्टेटमेंट' था।

श्रीजेश ने मैच के बाद कहा, 'जब मैं मैदान पर उतरा तो मेरे सामने दो ही विकल्प थे। यह मेरा आखिरी मैच हो सकता था या मेरे पास दो मैच और खेलने के मौके होते। अब मेरे पास दो मैच और खेलने के मौके हैं।' हरमनप्रीत ने कहा, 'कुछ चीजें हमारे हाथ में नहीं होती। सेमीफाइनल में अमित का नहीं होना खलेगा लेकिन हमारा फोकस मैच पर और अपने प्रदर्शन पर है। क्वार्टर फाइनल में आखिरी मिनट तक हर खिलाड़ी ने अमित की कमी पूरी करने की कोशिश की।'

भारत-जर्मनी का एक दूसरे के खिलाफ रिकॉर्ड

विश्व रैंकिंग और एक दूसरे के खिलाफ रिकॉर्ड को देखें तो मौजूदा विश्व चैम्पियन और चार बार की ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता जर्मनी और भारत में ज्यादा फर्क नहीं है। जर्मनी विश्व रैंकिंग में चौथे और भारत पांचवें स्थान पर है। क्वार्टर फाइनल में अर्जेंटीना को हराने वाली जर्मनी का सामना भारत से तोक्यो ओलंपिक कांस्य पदक के मैच में हुआ था जिसमें भारत ने 5-4 से जीत दर्ज की थी। श्रीजेश ने आखिरी सेकंड में पेनल्टी कॉर्नर बचाया था।

ओलंपिक से पहले भारत ने जर्मनी से अभ्यास मैच खेले थे और छह में से पांच जीते। इस साल जून में एफआईएच प्रो लीग के लंदन चरण में भारत ने जर्मनी को 3-0 से हराया लेकिन रिटर्न मैच में 2-3 से हार गए। हरमनप्रीत ने कहा, 'हम जर्मनी से फाइनल में खेलना चाहते थे। हमने टीम बैठकों में भी इस पर बात की थी। वह कठिन प्रतिद्वंद्वी है और उसके खिलाफ मैच आखिरी मिनट तक जाते हैं।' दूसरे सेमीफाइनल में नीदरलैंड का सामना स्पेन से होगा। भारत का मैच रात 10-30 पर खेला जाएगा।

हरभजन ने पाक प्रशंसक को करारा जवाब दिया

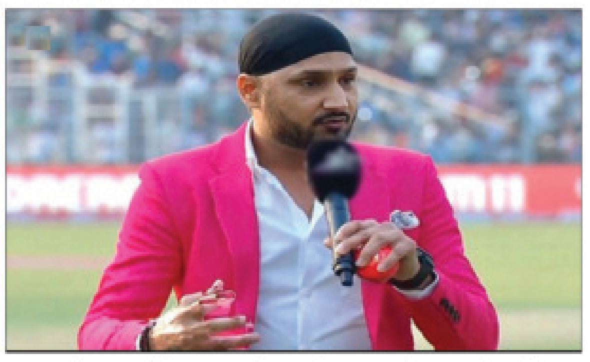

लाहौर (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने एक पाकिस्तानी प्रशंसक को करारा जवाब दिया है। ये पाक प्रशंसक इरफान पठान का मजाक उड़ा रहा था। हरभजन ने हाल ही में एक पाकिस्तानी पत्रकार को मोहम्मद रिजवान की तुलना महेंद्र सिंह धोनी से करने पर भी कड़ी फटकार लगायी थी। वहीं अब अब उन्होंने इरफान का ट्रोल कर रहे एक पाक प्रशंसक को जमकर फटकारा है। ये मामला एसक वीडियो को है इसमें पाक के बल्लेबाज बाबर आजम मैच के बाद ड्रेसिंग रूम में जाते हुए नजर आ रहे हैं। इस वीडियो के साथ लिखा गया है कि जब इरफान पठान ने बाबर आजम से साक्षात्कार लिए कहा तो उन्होंने मना कर दिया। हालांकि इस वीडियो में कहीं भी इरफान नजर नहीं आ रहे हैं।

हरभजन ने इस पोस्ट का जवाब देते हुए लिखा, इस वीडियो में इरफान कहां हैं। साथ ही कहा कि आपको बोलन का ढंग तो था नहीं। वहीं अब लगता है कि आंखों से दिखना भी बंद हो गया है। अगर कोई सवाल तुम लोगों से अंग्रेजी में पूछे तो समझ में आयेगा। हरभजन के इस कमेंट की कई लोगों ने सराहना की है। वहीं कई लोगों का कहना है कि उन्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये था क्योंकि वह एक स्टार खिलाड़ी हैं।

ऋषभ, ईशांत और ललित दिल्ली टी20 प्रीमियर लीग में खेलते दिखेंगे

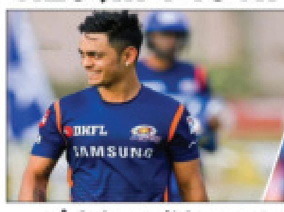

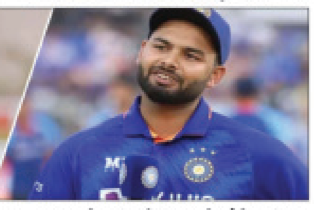

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत 17 अगस्त से यहां होने वाली दिल्ली टी20 प्रीमियर लीग में खेलेंगे। ऋषभ को इस लीग के लिए दिल्ली 6 फ्रेंचाइजी ने अपनी टीम में शामिल किया है। इस टीम में ऋषभ के अलावा अनुभवी तेज गेंदबाज इशांत शर्मा भी खेलेंगे।

दिल्ली टी20 प्रीमियर लीग 17 अगस्त से शुरु होकर सितंबर तक चलेगी। इसका फाइनल 8 सितंबर को खेला जाएगा। इस इस लीग में ऑलराउंडर ललित यादव भी खेलेंगे। वहीं ऑलराउंडर के तौर पर शिवम शर्मा हैं को रखा है। इस फ्रेंचाइजी ने ऑफ स्पिनर अर्पित राणा और तेज गेंदबाज प्रिंस यादव को भी अपने साथ रखा है।

इस लीग के सभी मैच नई दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में होंगे। टी20 लीग के उद्घाटन सीजन में कुल 40 मैच होंगे जिसमें 33 पुरुष और 7 महिलाएं हैं। इसमें पुरुष वर्ग में 33 और महिला वर्ग में 7 मैच शामिल हैं। इस लीग के लिए हुए ड्राफ्ट में दिल्ली के 270 क्रिकेट शामिल थे, जिनमें राष्ट्रीय, आईपीएल, राष्ट्रीय और अंडर-19 टीमों में खेलने वाले खिलाड़ी भी शामिल हैं।

पुरानी दिल्ली 6 टीम इस प्रकार है- ऋषभ पंत, इशांत शर्मा, ललित यादव, अर्पित राणा, शिवम शर्मा, प्रिंस यादव, मयंक गुसाईं, सनत सांगवान, अंकित भदाना, युग गुप्ता, केशव दलाल, आयुष सिंह, कुश नागपाल, सुमित छीकरा, अर्णव बग्गा, वंश बेदी, मंजीत यश भारद्वाज, संभव शर्मा।

विजेता की तरह खेलो और स्वर्ण तुम्हारा है, पाक हॉकी दिग्गज की भारतीय टीम को सलाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम के प्रदर्शन से प्रभावित पाकिस्तान के महान सेंटर फॉरवर्ड हसन सरदार ने हरमनप्रीत सिंह की अगुवाई वाली टीम को एक ही सलाह दी है, 'विजेता की तरह खेलो और तुम्हें स्वर्ण जीतने से कोई नहीं रोक सकता।'

लॉस एंजिलिस ओलंपिक 1984 में पाकिस्तान को स्वर्ण पदक दिलाने में सूत्रधार रहे सरदार ने कहा, 'जब हॉकी या क्रिकेट में पाकिस्तान नहीं खेल रहा होता है तो मैं हमेशा भारत का समर्थन करता हूं। यह भारत की सर्वश्रेष्ठ टीमों में से है जिसमें काफी सुधार आया है और जो यूरोपीय टीमों को कड़ी टक्कर दे रही है।' उन्होंने कहा, 'इस टीम के पास 1980 के बाद ओलंपिक हॉकी में पहला स्वर्ण जीतने का सुनहरा मौका है और मुझे लगता है कि वे जीतेंगे।'

इस यकीन के साथ सेमीफाइनल में उतरें

उन्होंने कहा, 'ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उनके प्रदर्शन से मैं काफी प्रभावित हुआ। भारतीय टीम अच्छी है और उसे दिमाग में यह बिठाकर खेलना है कि हम जीत सकते हैं। इस स्तर पर मानसिक तैयारी का ही फर्क होता है।' ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 1984 ओलंपिक सेमीफाइनल की अपनी तैयारियो को याद करते हुए 66 वर्ष के पूर्व कप्तान ने कहा, 'हमने सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराया था। टीम बैठकों में हमने इस पर बात की और हमें यकीं था कि हम उन्हें हरा सकते हैं। भारत को भी यह यकीन लेकर सेमीफाइनल में जर्मनी के खिलाफ उतरना होगा।'

भारतीय टीम ने रविवार को क्वार्टर फाइनल में अमित रोहिदास को रेडकार्ड मिलने के बाद लगभग 40 मिनट दस खिलाड़ियों के साथ खेलने के बावजूद पेनल्टी शूटआउट में ब्रिटेन को 4-2 से हराया। दिल्ली एशियाई खेल 1982 के फाइनल में हैट्रिक लगाकर भारत के खिलाफ पाकिस्तान की 7-1 से जीत के नायक रहे सरदार ने कहा, 'दस खिलाड़ियों के साथ खेलना हमेशा कठिन होता है लेकिन भारत ने शानदार प्रदर्शन किया। खासकर कप्तान जबर्दस्त फॉर्म में है। इस जीत से उनका मनोबल काफी बढ़ा होगा और अब उन्हें बस स्वाभाविक खेल दिखाना है।'

उन्होंने कहा, 'हमने जब भारत को एशियाई खेलों के फाइनल में भारत में हराया था तो हमारा फोकस बढ़त बनाने और उसे दुगुनी करने पर था। दोनों टीमें अच्छा खेली लेकिन हम खुशकिस्मत थे कि इतने गोल कर सके।' भारत ने आखिरी बार ओलंपिक स्वर्ण 1980 में मॉस्को में और आखिरी रजत 1960 में रोम ओलंपिक में जीता था। अब पेरिस में उनके पास इतिहास रचने का मौका है।

जर्मनी को जवाबी हमले या वापसी का मौका कतई नहीं दें

जर्मनी के खिलाफ सेमीफाइनल के लिए उन्होंने भारत को सलाह दी है कि उसे जवाबी हमले या वापसी का मौका कतई नहीं दें। उन्होंने कहा, 'जर्मन टीम काफी कठिन प्रतिद्वंद्वी है। वे जबरदस्त वापसी करते हैं और शारीरिक रूप से बहुत मजबूत हैं। आप उन्हें शॉर्ट पास से ही हरा सकते हैं। पहला गोल करना जरूरी है और उन्हें वापसी से रोकना भी। भारतीय डिफेंस काफी मजबूत है और मुझे यकीन है कि वह ऐसा कर सकेगा।'

बीसीसीआई को लगानी होगी शराब और तंबाकू से जुड़े उत्पादों के विज्ञापन पर रोक : स्वास्थ्य मंत्रालय

मुम्बई (ईएमएस)। अब आने वाले समय में भारतीय क्रिकेटर तंबाकू-शराब से जुड़े उत्पादों के विज्ञापन नही कर पायेंगे। देश में क्रिकेट मैचों के दौरान कई बार तंबाकू उत्पादों के विज्ञापन अन्य उत्पादों के जरिए पेश किये जाते हैं पर अब केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने इसको लेकर बीसीसीआई को कदम उठाने को कहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि क्रिकेट स्टेडियमों में तंबाकू-शराब को बढ़ावा देने वाले विज्ञापनों पर रोक लगायी जाये। सरकार का मानना है कि कई युवा क्रिकेटरों को आदर्श मानते हैं और उनसे प्रभावित रहते हैं। ऐसे में इस प्रकार के विश्रापनों का उनपर विपरीत प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस मामले में बीसीसीआई को एक पत्र भी लिखा है1 जिसमें अपनी चिन्ताएं जाहिर की हैं। इसमें कहा गया है कि बीसीसीआई को भारत के खिलाड़ियों और क्रिकेट प्रशंसकों को ध्यान में रखते हुए खेल को बढ़ावे देने के लिए नीतियां, रूपरेखा, दिशानिर्देश सही बनाने चाहिये जिससे आईपीएल जैसे क्रिकेट आयोजनों के दौरान कुछ जाने-माने क्रिकेटरों को तंबाकू या शराब से जुड़े विज्ञापन करते हुए देखना निराशाजनक हैं। ऐसें बीसीसीआई खिलाड़ियों को तंबाकू या शराब से जुड़े विज्ञापन को रोकने के लिए सकारात्मक कदम उठाये। बीसीसीआई को इन विज्ञापनों से करोड़ों रुपये की आय होती है। ऐसे में देखना है कि बोर्ड क्या कर्रवाई करता है।

मनिका की अगुआई में भारत ने रोमानिया को हराकर क्वार्टर फाइनल में बनाई जगह

पेरिस। स्टार खिलाड़ी मनिका बत्रा की अगुआई में भारत ने सोमवार को यहां पेरिस ओलंपिक की महिला टेबल टेनिस टीम स्पर्धा में अपने से ऊंची रैंकिंग वाले रोमानिया को रोमांचक मुकाबले में 3-2 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। भारत 2-0 से आगे चल रहा था लेकिन रोमानिया ने वापसी करते हुए 2-2 से बराबरी हासिल कर ली लेकिन निर्णायक मैच में मनिका ने जीत दर्ज करने टीम को जीत दिला दी। श्रीजा अकुला और अर्चना कामथ ने युगल मैच में एडिना डायकोनू और एलिजाबेटा समारा पर 11-9, 12-10, 11-7 से जीत दर्ज करके मुकाबले की शुरुआत की। मनिका ने अपने से बेहतर रैंकिंग वाली बर्नाडेट जोक्स को 11-5, 11-7, 11-7 से हराया जिससे भारत ने अपने चौथे वरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ 2-0 की बढ़त हासिल की। प्रतियोगिता में भारत को 11वीं वरीयता दी गई है। दूसरे एकल में पहला गेम जीतने के बाद श्रीजा यूरोपीय चैंपियन समारा से 2-3 (11-8 4-11 11-7 6-11 8-11) से हार गईं। श्रीजा की हार के बाद अर्चना और बर्नाडेट के बीच मुकाबला हुआ। बर्नाडेट ने पहला गेम 11-5 से जीत लिया लेकिन भारतीय खिलाड़ी ने दूसरा गेम 11-8 से जीतकर बराबरी हासिल कर ली। बर्नाडेट ने अगले दो गेम 11-7, 11-9 से जीतकर मैच अपने नाम कर लिया और मुकाबला 2-2 से बराबर कर दिया। इसके बाद मनिका ने एडिना को 3-0 (11-5, 11-9, 11-9) से हराकर भारत को अंतिम आठ में जगह दिलाई। क्वार्टर फाइनल में भारत का मुकाबला अमेरिका या जर्मनी से होगा। पिछले हफ्ते मनिका और श्रीजा दोनों ने ओलंपिक में व्यक्तिगत स्पर्धा में राउंड ऑफ 16 तक पहुंचने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बनकर टेबल टेनिस में इतिहास रचा था।

अमेरिका के नोआ लाइल्स को स्वर्ण मिलने पर उठे सवाल

-जमैका के थॉम्पसन का पैर पहले फिनिश लाइन पर पहुंचा

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक में अमेरिका के नोआ लाइल्स को पुरुष 100 मीटर के इवेंट में स्वर्ण मिलने पर सवाल उठने लगे हैं। इसका कारण है कि जमैका के किशन थॉम्पसन का पैर पहले लाइन के पार हुआ था। इस दौरान सभी धावकों की टाइमिंग तकरीबन बराबर रही।

इस जीत के साथ ही अमेरिका के नोआ दुनिया के सबसे तेज धावक बन गए हैं। वहीं थॉम्पसन दूसरे नंबर पर रहे। रेस समाप्त होने के बाद तक किसी को पता नहीं था कि विजेता कौन है। 100 मीटर की रेस में लाइल्स और थॉम्पसन ने तकरीबन एक साथ ही फिनिशिंग लाइन को पार किया था। इसके बाद स्वर्ण का फैसला रिप्ले में हुआ। इसमें पता चला कि लाइल्स 0.005 सेकंड से मुकाबला जीत गये हैं। फाइनल का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर आया है। इसमें स्वर्ण विजेता अमेरिका के लाइल्स से पहले थॉम्पसन का पैर फिनिशिंग लाइन को पार करते हुए दिखा है। इसके बाद सभी इससे हैरान हैं कि अमेरिकी धावक को कैसे विजेता घोषित कर दिया गया। नियम के अनुसार किसी भी रेस में फिनिशिंग लाइन को पहले बार करने वाला धावक विजेता माना जाता है। ऐसे में सवाल उठता है कि फिनिशिंग लाइन तो थॉम्पसन ने पार की फिर नोआ लाइल्स को कैसे जीता हुआ माना लिया गया। वहीं नियम के अनुसार धावक के पैर या हाथ के फिनिशिंग लाइन पार करने से दौड़ पूरी नहीं मानी जाती। ये तब पूरी मानी जाती है जब धावक का सीना फिनिश लाइन को पार कर ले।

पहली बार एसए 20 में खेलते नजर आयेंगे बेयरस्टो

जोहांसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका में अगले साल की शुरुआत में होने वाले एसए 20 क्रिकेट लीग के लिए नीलामी अभी शुरु नही हुई है पर दो टीमों जोहांसबर्ग सुपर किंग्स और पार्ल रॉयल्स ने खिलाड़ियों को रिटेन करना शुरु कर दिया है। इंग्लैंड के क्रिकेटर जॉनी बेयरस्टो इस बार पहली बार एसए 20 में खेलते हुए दिखेंगे। वह जोबर्ग सुपर किंग्स की टीम से जुड़े हैं। जोबर्ग सुपर किंग्स पिछले सत्र में क्वालीफायर तक का पहुंची थी। वहीं क्वालीफायर में जोबर्ग सुपर किंग्स को डरबन सुपर जायंट्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। एक रिपोर्ट के अनुसार जोबर्ग सुपर किंग्स ने फाफ डु प्लेसिस, गेराल्ड कोएत्जी, और डोनोवान फरेरा को अपनी टीम में वहीं पार्ल रॉयल्स ने तबरेज शम्सी को डेयान गैलीम की जगह लिया है। इसके अलावा टीम ने नांद्रे बर्गर, लिजाद विलियम्स, इमरान ताहिर, मोइन अली, महेश तीक्ष्णा और डेविड विसे को भी बनाये रखा है। जोबर्ग सुपर किंग्स ने फाफ डु प्लेसिस, मोईन अली, महेश तीक्ष्णा, जॉनी बेयरस्टो, गेराल्ड कोएत्जी, डेविड विसे, ल्यूस डू प्लॉय, लिजाद विलियम्स, नांद्रे बर्गर, डोनोवन फरेरा, सिबोनेलो मखान्या, तबरेज शम्सी, इमरान ताहिर को अपनी टीम में रखा है जबकि पॉर्ल रॉयल्स ने खिलाड़ियों को टीम में बनाये रखा है। पार्ल रॉयल्स ने पिछले सत्र में प्लेऑफ में जगह बनाई पर जोबर्ग सुपर किंग्स के खिलाफ वह एलिमिनेटर में नौ विकेट से हार गयी थी। सत्र से पहले ही पार्ल रॉयल्स ने कप्तान डेविड मिलर, लुंगी एनगिडी और एंडिले फेहलुकवायो सहित 10 प्लेयर्स को रिटेन किया है। इनमें क्वेना मफाका और लुआन-ड्रे प्रीटोरियस भी शामिल हैं।

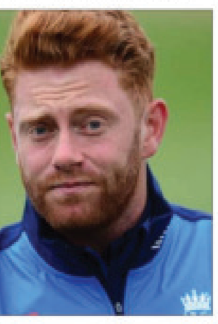

ट्रेनिंग की बजाय निजी कोचों के लिए दैनिक पास जुटाने में व्यस्त पहलवान

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक खेलगांव में पहुंची अधिकांश भारतीय महिला पहलवानों का समय ट्रेनिंग की बजाय अपने निजी कोचों और फिजियो के लिए दैनिक पास जुटाने में जा रहा है। विनेश फोगाट के साथ उनके कोच वोलेर एकोस और फिजियो अश्विनी पाटिल हैं जो भारतीय दल के आधिकारिक फिजियो भी हैं। उन्हें एक्रीडिटेशन मिला हुआ है जबकि बाहर रहने वाले बाकियों को खेलगांव में आने के लिए अनुमति चाहिए। अंतिम पंघाल (महिला 53 किलो), अंशु मलिक (महिला 57 किलो) और रीतिका हुड्डा (76 किलो) खेलगांव पहुंच चुकी हैं और उन्हें ट्रेनिंग के लिए निजी सहयोगी स्टाफ की जरूरत है। आईओए ने उनके सहयोगी स्टाफ को यात्रा की मंजूरी दे दी लेकिन सभी खेलगांव के बाहर हैं और उन्हें प्रवेश के लिए रोज पास की जरूरत होती है। एक सूत्र ने बताया, 'कुश्ती स्पर्धाएं सोमवार से शुरू हो रही हैं और ऐसे में जबकि खिलाड़ियों का फोकस ट्रेनिंग पर होना चाहिए, वे कोचों को दैनिक पास दिलाने में व्यस्त हैं। वे संबंधित लोगों को मदद के लिए फोन या ईमेल कर रहे हैं।' अंशु और रीतिका रविवार को खेलगांव पहुंचे। सूत्र ने कहा, 'अंशु कोशिश कर रही है कि उसके पिता धरमवीर यहां आ सकें। वहीं अंतिम चाहती हैं कि भगत सिंह और विकास उनके साथ हो। उनकी सारी ऊर्जा इसी पर खर्च हो रही है।' रीतिका के कोच मनदीप भी पेरिस पहुंच गए हैं लेकिन उनका पूरा फोकस तैयारी पर है। सूत्र ने कहा, 'रीतिका और अमन का पूरा फोकस तैयारी पर है। वे भी चाहते हैं कि उनके कोच साथ में हों लेकिन वे अपनी तैयारियों पर असर नहीं पड़ने दे रहे।' आईओए के एक अधिकारी ने कहा कि उन्हें समझ में नहीं आता कि पहलवान राष्ट्रीय कोचों पर भरोसा क्यो नहीं करते। उन्होंने कहा, 'जगमंदर सिंह और वीरेंदर दहिया जैसे राष्ट्रीय कोच भी वहां हैं। अगर हर किसी को निजी स्टाफ चाहिए तो राष्ट्रीय कोचों की क्या जरूरत है। पता नहीं इन्हें राष्ट्रीय कोचों पर भरोसा क्यो नहीं है।'

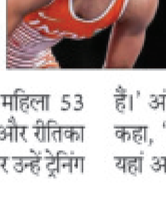

'मैंने खुद पर अधिक दबाव बना दिया था', फाइनल में जोकोविच से हार पर बोले अल्काराज

पेरिस। स्पेन के कार्लोस अल्काराज ने ओलंपिक खेलों की टेनिस प्रतियोगिता के पुरुष एकल के फाइनल में नोवाक जोकोविच से हारने के बाद कहा कि उन्होंने खुद पर अपने देश की तरफ से खेलने का दबाव बना दिया था। जोकोविच ने अल्काराज को 7-6 (3), 7-6 (2) से हराकर अपना पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता। इससे अल्काराज का सबसे कम उम्र में ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने का सपना भी टूट गया। वह राफेल नडाल की बराबरी करने से भी चूक गए जिन्होंने 2008 में अपने पहले प्रयास में ही स्वर्ण पदक जीता था। 21 वर्षीय अल्काराज ने कहा, 'मुझे लगता है कि मैंने खुद पर अधिक दबाव बना दिया था क्योंकि मैं स्पेन और स्पेनिश लोगों के लिए खेल रहा था। मैं सोच रहा था कि अगर मैं स्वर्ण पदक नही जीत पाऊंगा तो इससे स्पेन के लोगों को निराशा होगी।' उन्होंने कहा, 'यह अलग तरह का दबाव था। स्पेन में हर कोई चाहता था कि मैं स्वर्ण पदक जीतूं और मैं भी यही चाहता था।'

ओलंपिक पदक जीतने के बाद मनु से करार करना चाहती हैं कई कंपनियां

शेटराउ (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक में दो कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचने वाली महिला निशानेबाज मुन भाकर की लोकप्रियता आज शीर्ष पर है। ऐसे में स्वदेश लौटते ही मनु पर पैसे की बारिश होना तय है। कई कंपनियां मुन को अपने साथ जोड़ना चाहती हैं। अब देखना होगा कि मनु किसी प्रकार इस सबके बीच अपने खेल को शीर्ष पर बनाये रखती हैं। मनु ने 10 मीटर पिस्टल में कांस्य पदक जीतने के बाद सरबजोत सिंह के साथ मिश्रित टीम पिस्टल स्पर्धा में एक और कांस्य पदक जीता जबकि वह 25 मीटर पिस्टल फाइनल में चौथे स्थान पर रहीं।

वह अभी तक भारत वापस नहीं आई हैं लेकिन उनकी प्रबंधन कंपनी को ई-कॉमर्स से लेकर स्किनकेयर उत्पादों तक के वाणिज्यिक गठजोड़ के लिए 40 से अधिक प्रस्ताव मिल चुके हैं।

खेलों में शानदार प्रदर्शन के बाद मनु ने कहा कि उनके लिए बदलाव का कोई कारण नहीं है और फिलहाल उनका एकमात्र एजेंडा अगले तीन महीनों में विभिन्न प्रकार के भारतीय भोजन खाना है। मनु ने कहा कि मैं प्रसिद्धि और धन संभालने के तरीके के बारे में नहीं जानती। मुझे लगता है कि मैं सिर्फ अपनी निशानेबाजी और इसके आसपास की अन्य दिनचर्या जिम और योग पर ही टिकी रहूंगी। भगवान आपको जो देता है उसे स्वीकार करें और जो आपके पास है उससे लोगों की मदद करने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि अभी मैं अगले 3 महीनों तक सिर्फ तरह-तरह के भारतीय पकवान खाना चाहती हूं पर मुझे नहीं लगता कि कोच मुझे सुबह देर तक सोने देंगे। मैं खूब खाऊंगी लेकिन यह भी सुनिश्चित करूंगी कि मैं वर्कआउट भी करूं।

वहीं मनु के कोच और भारत से निकले सबसे बेहतरीन पिस्टल निशानेबाजों में से एक जसपाल राणा का मानना ??है कि अगले तीन महीनों में वह जो कुछ भी करती है उससे यह पता चल जाएगा कि वह किस दिशा में जा रही है। जब उनसे पूछा गया कि क्या मनु यहां के प्रदर्शन के बाद भी वैसी ही रहेंगी तो उन्होंने कहा कि समय ही बताएगा, तीन महीने बाद। कोच ने कहा कि अभी वह बहुत से लोगों के प्रति जवाबदेह है, उसे प्रशंसकों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पूरी करने की जरूरत है। जब आप मशहूर हो जाते हैं तो आपको इसकी कीमत चुकानी पड़ती है, इसलिए हमने उसे तीन महीने पूरी तरह से छुट्टी रखी है। प्रतियोगिता खत्म होने के बावजूद मनु को कुछ समय के लिए पेरिस में ही रहना पड़ सकता है, अगर उन्हें समापन समारोह के लिए भारत का ध्वजवाहक घोषित किया जाता है तो। मनु ने कहा कि यह जीवन भर का सम्मान होगा। यह बहुत बड़ा सौभाग्य होगा।

राहुल-प्रियंका के सामने कुलियों ने किया दर्द बयां, ग्रुप-डी का दर्जा दिलाने की रखी मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने दिल्ली में लोगों का बोझ उठाने वाले कुलियों से मुलाकात की जहां राहुल-प्रियंका के सामने कुलियों ने अपना दर्द बयां किया। कुली मोहम्मद करीम अक्रान ने कहा कि वह राहुल गांधी से कहा कि देश के अलग-अलग हिस्सों से कुली यहां इकट्ठा हुए हैं। 2008 में जब लालू प्रसाद यादव रेल मंत्री थे तब उन्होंने हमें ग्रुप डी का दर्जा दिया था, जिसके कारण हम अपना घर चला रहे थे। उन्होंने आरोप लगाया कि पीएम मोदी सरकार द्वारा चलाई जा रही बैटरी कारों से हमारे पास कोई काम नहीं बचा है और हम घर चलाने को मजबूर हैं।

करीम ने बताया कि उसने राहुल गांधी से कहा कि 2008 की तरह कुलियों को ग्रुप-डी का दर्जा दिया जाना चाहिए। उसने कहा कि हम कुलियों को उम्मीद है कि राहुल गांधी हमारा मुद्दा उठाएंगे। इससे पहले राहुल गांधी ने भारतीय रेलवे लोको पायलटों से मुलाकात की थी उन्होंने कर्मचारियों की कमी के कारण आराम नहीं मिलने की शिकायत की थी। राहुल गांधी ने उन्हें आश्वासन दिया था कि वह उनके मुद्दों को संसद में उठाएंगे। उन्होंने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पूरे भारत के 50 से ज्यादा लोको पायलटों से मुलाकात की पायलटों ने उन्हें अपनी समस्याएं से अवगत कराया।

पायलटों ने कहा कि वह घर से दूर रहते हैं, लंबी दूरी तक ट्रेन चलाते हैं और अक्सर उन्हें बिना ब्रेक दिए ड्यूटी पर भेज दिया जाता है। इससे वह काफी तनाव में रहते हैं और एकाग्रता की भी कमी रहती है, जो दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण भी बन सकता है। लोको पायलट 46 घंटे के साप्ताहिक आराम की मांग कर रहे हैं।

हालांकि, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा था कि 'लोको पायलट' रेलवे परिवार के अहम सदस्य हैं लेकिन विपक्ष उनका मनोबल गिराने के लिए दुष्प्रचार कर रहा है। उन्होंने एक्स पर लोको पायलटों की कार्यदशा सुधारने के लिए रेलवे द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लोको पायलट की ड्यूटी के घंटे पर सावधानीपूर्वक नजर रखी जाती है। गाड़ी के फेरों के बाद ध्यानपूर्वक उन्हें आराम दिया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में आपदा से निपटने सरकार की मदद करेगा विपक्ष

शिमला। हिमाचल प्रदेश में इन दिनों भीषण तबाही मची है। राज्य सरकार को अब नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने समर्थन देने का ऐलान किया है। उन्होंने आपदा से घिरे लोगों को तत्काल राहत देने की मांग की है। साथ ही कहा कि विपक्ष हर संभव मदद करने के लिए राज्य सरकार के साथ खड़ा है। इससे पहले जयराम ठाकुर ने शिमला में आपदा प्रभावित इलाकों का दौरा किया था। उन्होंने आपदा में लापता लोगों के परिजनों से मुलाकात की। ठाकुर ने राहत कार्यों की समीक्षा की थी। उन्होंने राज्य सरकार से आपदा प्रभावित लोगों को तत्काल राहत देने के लिए जरुरी प्रबंध करने की मांग की है। उन्होंने राज्य सरकार से भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं से बचने और जानमाल के नुकसान को रोकने के लिए जरुरी कदम उठाने की भी मांग की। जयराम ठाकुर ने कहा कि विपक्ष सरकार को हर संभव मदद देने के लिए तैयार है। सरकार से अनुरोध है कि तलाशी अभियान में तेजी लाए ताकि लापता लोगों को जल्द से जल्द ढूंढा जा सके। उन्होंने आगे कहा कि सर्च ऑपरेशन के साथ-साथ आपदा में बचे लोगों की तत्काल मदद के लिए राहत शिविरों और आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की जानी चाहिए। मंडी और शिमला जिलों से चार शव मिलने के साथ ही राज्य के तीन जिलों में बादल फटने से अचानक आई बाढ़ अब तक 13 लोगों की मौत हो गई है। कुल्लू के निरमंड, सैंज व मलाणा, मंडी जिले के पधर और शिमला के रामपुर उपखंड में बादल फटने की कई घटनाओं ने भारी तबाही मचाई। इन घटनाओं के बाद अब भी 40 से ज्यादा लोग लापता हैं।

जम्मू-कश्मीर में एलओसी पर दिखे घुसपैठिये, सेना ने बरसाईं गोलियां, तलाश शुरु

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर एलओसी के पास रविवार देर रात संदिग्ध घुसपैठियों की गतिविधि की सूचना मिलते ही सेना के जवानों ने उन पर गोलीबारी की। दूसरी तरफ से गोलीबारी की कोई सूचना नहीं है, लेकिन सीमा पार से घुसपैठ की किसी भी कोशिश को नाकाम करने के लिए अखनूर और सुंदरबनी सेक्टर में बड़े पैमाने पर तलाश अभियान शुरू किया गया है। अधिकारियों के मुताबिक जम्मू के बाहरी इलाके अखनूर के बट्टल सेक्टर में रात करीब डेढ़ बजे तीन से चार घुसपैठियों की संदिग्ध गतिविधि देखी गई, जिसके बाद सेना के जवानों ने उन पर गोलियां दागीं। रात में इलाके में ड्रोन के जरिये निगरानी की गई और कड़ी घेराबंदी के लिए अतिरिक्त बल तैनात किए गए हैं। सुबह होते ही तलाश अभियान शुरू कर दिया गया है। अधिकारियों के मुताबिक सेना के जवानों ने राजौरी जिले के सुंदरबनी-नौशेरा सेक्टर में संदिग्ध गतिविधि देखी, जिसके बाद उन्होंने कई राउंड गोलियां चलाईं। अधिकारियों ने बताया कि एलओसी से सटे इलाके में तलाश अभियान जारी है। जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद-370 को रद्द किए जाने के पांच साल सोमवार को पूरे हो गए, जिसके मद्देनजर केंद्र-शासित प्रदेश में सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

अब यूपी के सहारनपुर में पटरी से उतरे लोकल ट्रेन के तीन डिब्बे

सहारनपुर। ट्रेन के डिब्बे पटरी से उतरने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है आए दिन कभी यात्री तो कभी मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर रहे हैं। वहीं अब यूपी से खबर आई है कि सहारनपुर रेलवे स्टेशन से कुछ दूरी पर एक लोकल ट्रेन के तीन डिब?बे पटरी से उतर गए। मीडिया रिपोर्ट में अंबाला मंडल के मंडल प्रबंधक ने बताया कि एक लोकल ट्रेन जो सफाई के लिए जा रही थी यह मेमू ट्रेन खाली थी और घटना में कोई घायल नहीं हुआ है। डीआरएम ने बताया कि यह घटना वाशिंग लाइन पर दोपहर करीब तीन बजे हुई। इस वजह से मुख्य मार्ग पर ट्रेन यातायात प्रभावित नहीं हुआ। डिब्बों के पटरी से उतरने के कारणों की जांच कर रहे हैं और ट्रैक को ठीक किया जा रहा है।

कावड़ियों को तेज रफ्तार कार ने रौंदा... पांच कांवड़िया हुए घायल

आगरा। आगरा के ताजगंज के बरौली अहीर क्षेत्र में इनर रिंग रोड पर कासगंज सोरों घाट से कांवड़ लेकर आ रहे कावड़ियों को तेज रफ्तार कार ने रौंद दिया। हादसे ने पांच कांवड़िया घायल हो गए। अन्य साथियों ने घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां दो की हालत गंभीर बनी हुई है। कांवड़ खंडित होने पर गुस्साए कांवड़ियों ने कार में जमकर तोड़फोड़ की। हमले में कार सवार दो युवक भी घायल हुए हैं। रविवार की रात्रि कांवड़िया आगरा पहुंचे थे। कांवड़ लेकर लौटते समय इनर रिंग रोड पर कांवड़ियों को तेज रफ्तार कार ने रौंद दिया। इस हादसे में पांच कांवड़िया घायल हो गए। विवाद की जानकारी पर पुलिस मौके पर पहुंची। घायल कार सवारों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें जिला अस्पताल में रेफर किया गया है।

बेंगलुरु में महिला के साथ छेड़छाड़, सीसीटीवी फुटेज में दिखी वारदात

बेंगलुरु। बेंगलुरु में एक महिला के साथ यौन उत्पीड़न का मामला प्रकाश में आया है। राजस्थान निवासी महिला रोज की तरह सुबह 5 बजे सैर को निकली थी। वहां अपने दोस्तों का इंतजार कर रही थी तभी पीछे से आए एक शख्स ने महिला के साथ बदसलूकी की। महिला की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। सीसीटीवी कैमरे में पूरी घटना कैद हुई है। फुटेज में साफतौर पर दिख रहा है कि महिला एक जगह पर खड़ी है और बदमाश महिला के साथ छेड़छाड़ कर रहा है। महिला खुद को बचाने की पूरी कोशिश करती दिख रही है। लेकिन बदमाश उसका पीछा करना नहीं छोड़ता। वहां महिला का मुंह दबाता है। इसके बाद लोगों के आने की आहट पर फरार हो जाता है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बदमाश के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर अपराधी की तलाश शुरू कर दी गई है। आरोपी का अभी पता नहीं चल पाया है। डीसीपी ने कहा, हम आरोपी की तलाश कर रहे हैं। महिलाओं की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया है और जल्द ही आरोपियों को पकड़ कर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

रेस्क्यू ऑपरेशन में जुटे लोग, सीएम ने तारीफ कर लिखा, देवभूमि की 'अतिथि देवो भव:' की संस्कृति

रुद्रप्रयाग। उत्तराखंड में भारी बारिश और बादल फटने से केदारनाथ धाम के रामबाड़ा से भीमबली क्षेत्र में फंसे लोगों को सुरक्षित रेस्क्यू करने के लिए प्रदेश सरकार की ओर से युद्ध स्तर पर कार्रवाई की जा रही है। लोगों को खोजने स्निफर डॉग की मदद ली जा रही है। लिनचोली से रामबाड़ा क्षेत्र तक सर्च अभियान पूरा हो चुका है। जिसमें अब तक किसी व्यक्ति के मिलने की पुष्टि नही हुई है। सोमवार को डीडीएमओ नंदन सिंह रजवार के नेतृत्व में रामबाड़ा से भीमबली क्षेत्र में सर्च अभियान शुरू किया गया। श्री केदारनाथ धाम से 100 लोगों को सुरक्षाबलों की निगरानी में लिनचोली हेलीपैड रवाना किया है। वहीं, एनडीआरएफ की टीमें जंगल एवं मंदाकिनी नदी के करीब सर्च अभियान चला रही हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने लिखा कि यही है देवभूमि की 'अतिथि देवो भव-' की संस्कृति। केदारनाथ क्षेत्र में चल रहे रेस्क्यू ऑपरेशन में प्रशासन को लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। पोस्ट में कुछ लोगों का नाम लिखते हुए सीएम ने कहा कि ग्रामीण बढ़ चढ़कर प्रशासन के साथ बचाव कार्यों में जुटे हैं। सभी लोगों के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि अतिवृष्टि की वजह से होने वाले बड़े नुकसान को रोका जा सका है। आप सभी का हृदय की गहराइयों से आभार। सीएम धामी ने दूसरे पोस्ट में लिखा कि केदारघाटी में राहत एवं बचाव कार्य युद्धस्तर पर जारी है। ध्वस्त पड़े रास्तों और पैदल पुलों को ठीक करने का कार्य भी शुरू कर दिया गया है।

कैप्सी द्वारा किया गया राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा संस्कृति पर दूसरी राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस का आयोजन

नई दिल्ली : सेंट्रल एसोसिएशन ऑफ प्राईवेट सिक्योरिटी इंडस्ट्री (कैप्सी) द्वारा कंस्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली में दूसरी राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। 15 मार्च, 2024 को आयोजित की गई पहली राउंड टेबल में रक्षा, पुलिस, कॉर्पोरेट सिक्योरिटी क्षेत्र, शिक्षा जगत, और सिविल सोसायटी द्वारा सक्रिय हिस्सा लिए जाने के बाद हम इन वाताओं को आगे बढ़ाने के लिए उत्साहित हैं। पहली कॉन्फ्रेंस के दौरान विकसित की गई विस्तृत योजना को गृह मंत्रालय (एमएचए) से महत्वपूर्ण स्वीकृति मिल चुकी है। कैप्सी एवं एपीडीआई के चेयरमैन, कुँवर विक्रम सिंह ने कहा, राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा संस्कृति का विकास करने के लिए ये राउंड टेबल हर हितधारक के लिए एक प्लेटफॉर्म की भूमिका निभाती हैं, जहाँ वो सहयोगपूर्ण और समावेशी तरीके से हिस्सा लेते हैं। विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों जैसे सरकारी अधिकारियों, कानून प्रवर्तन एजेंसियों, सामुदायिक नेतृत्वकताओं, सुरक्षा व्यवसायियों, और कॉर्पोरेट नेतृत्वकताओं एवं नागरिकों को एक साथ लाकर हमारा उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए एक सामूहिक समझ एवं सहयोग का विकास करना है। राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस का मुख्य उद्देश्य एक विस्तृत राष्ट्रीय रणनीति और कार्रवाईयोग्य कार्ययोजना तैयार करना है। सभी हितधारकों को इस प्रक्रिया में शामिल करके हम अपनी सुरक्षा की संस्कृति के भविष्य को आकार देने में सभी का योगदान सुनिश्चित कर सकते हैं। राजेश गुप्ता, आईपीएस (2005 बैच), ज्वाईंट कमिश्नर ऑफ पुलिस, स्पेशल ब्रांच, दिल्ली ने कहा, सुरक्षा एक महत्वपूर्ण चुनौती है। हमारे समाज में कई लूटपाट हो रही हैं, लेकिन उनको रोकने की आवश्यक अनुमतियाँ प्राप्त करना पुलिस के लिए भी मुश्किल है। इसलिए जागरुकता का बढ़ाया जाना बहुत आवश्यक है।

बांग्लादेश को लेकर ममता बनर्जी ने दिया सख्त निर्देश, नेता भड़काऊ टिप्पणियों से बचें

कोलकाता (एजेंसी)। बांग्लादेश के हालात पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की चेतावनी दी है। उन्होंने राज्य के मंत्रियों को चेतावनी देते हुए कहा कि किसी को भी बांग्लादेश पर टिप्पणी नहीं करनी है। फेसबुक या अन्य नेट पर पोस्ट न करें। सूत्रों के मुताबिक, मुख्यमंत्री ने राज्य कैबिनेट की बैठक में बांग्लादेश को लेकर किसी भी तरह की टिप्पणी नहीं करने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भड़काऊ टिप्पणी न करने का संदेश दिया है।

उन्होंने पत्रकारों से कहा कि 'ऐसा कोई पोस्ट न करें जिससे इस राज्य में सांप्रदायिक सौहार्द खराब न हो> ऐसी कोई टिप्पणी न करें जिससे हिंसा भड़के या भड़के। बांग्लादेश की इस घटना से हम सभी चिंतित हैंष ऐसा कुछ भी न लिखें जिससे शांति भंग हो। बीजेपी नेता ऐसी चीजें पोस्ट कर सकते हैं जो हिंसा भड़का सकती हैं। ममता ने साफ कर दिया कि बांग्लादेश पर फैसला भारत सरकार करेगी।

इस बीच बांग्लादेश में हसीना की सरकार गिर गई है। उस देश में अंतरिम सरकार बनने जा रही है. शेख़ हसीना ने इस्तीफ़ा देकर देश छोड़ दिया। शेख हसीना के देश छोड़ने के बाद सेना प्रमुख जनरल वकार-उज़-ज़मां ने देश के नाम भाषण में कहा कि शेख हसीना ने इस्तीफा दे दिया है। सेना प्रमुख ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए कहा कि अंतरिम सरकार बनेगी। सभी हत्याओं का न्याय किया जाएगा। सेना पर भरोसा रखें. देश में शांति व्यवस्था बनाये रखें. मुझ पर भरोसा करें। कृपया मदद करें लड़ने से मुझे कुछ नहीं मिलेगा।

तैयार हो जाइए, भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी का दावा, 1 करोड़ बांग्लादेशी हिंदू पश्चिम बंगाल आ रहे हैं

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी ने दावा किया है कि हसीना के बयान के परिणामस्वरूप 1 करोड़ शरणार्थी बांग्लादेश से पश्चिम बंगाल आएंगे। न सिर्फ भारत बल्कि बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों के लिए भी खतरनाक है। शुभेंदु अधिकारी ने बांग्लादेश में अशांति को लेकर खुलकर बात की. बांग्लादेश में हिंदुओं की अंधाधुंध हत्याएं हो रही हैं। उन्हें भारत में शरण दी जाएगी। इसको लेकर उन्होंने राज्यपाल और मुख्यमंत्री से गुहार लगायी। शुभेंदु का अनुरोध है कि राज्य के मुख्यमंत्री इस मामले पर केंद्र सरकार से बात करें। शुभेंदु ने यह भी आशंका जताई कि अगर बांग्लादेश में ऐसी ही अशांति जारी रही तो शेख हसीना का देश जमात के हाथों में चला जाएगा। शुभेंदु अधिकारी विधानसभा से बाहर निकले और पत्रकारों से मुखातिब हुए। बांग्लादेश को लेकर उन्होंने कहा कि बांग्लादेश से एक करोड़ शरणार्थी पश्चिम बंगाल आएंगे। रंगपुर के पार्षद हराधन नायक की हत्या कर दी गई। सिराजगंज में 13 पुलिसकर्मी मारे गये. इनमें से 9 हिंदू हैं। नोआखाली में हिंदुओं के घर जला दिये गये। मैं पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री और राज्यपाल से बात करने का अनुरोध करता हूं।

पीडीपी नेता महबूबा का दावा: धारा 370 के रद्द करने के पांच साल पूरे होने पर किया नजरबंद

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने सोमवार को जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा प्रदान करने वाले संविधान के अनुच्छेद 370 को रद्द के पांच साल पूरे होने पर उन्हें घर में नजरबंद करने का दावा किया है। उन्होंने दावा किया कि इस अवसर पर कड़ी सुरक्षा के बीच उनके पार्टी कार्यालय को बंद कर दिया गया है। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक अल्ताफ बुखारी की अध्यक्षता वाली अपनी पार्टी का कार्यालय भी एहतियात के तौर पर बंद कर दिया गया। नेशनल कॉन्फ्रेंस के मुख्य प्रवक्ता तनवीर सादिक ने दावा किया कि उन्हें घर में ही नजरबंद कर दिया गया है।

सादिक ने एक्स पर पोस्ट में लिखा-मुझे घर पर ही हिरासत में रखा गया है, जो पूरी तरह से गैरजरुरी है। मुझे किसी काम से बाहर जाना था, लेकिन मेरे गेट के बाहर पुलिसकर्मियों ने मुझे बाहर जाने से रोक दिया। यह अनुचित और अवैध है। उन्होंने शहर के हसनाबाद इलाके में अपने आवास के गेट के बाहर पुलिसकर्मियों के तैनाती की एक तस्वीर भी पोस्ट की है। उन्होंने कहा कि 5 अगस्त, 2019 को बीजेपी सरकार ने जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ विश्वासघात किया। संविधान की अनदेखी करके बीजेपी ने जम्मू-कश्मीर के साथ संवैधानिक, नैतिक, नैतिक और कानूनी संबंधों को कमजोर किया। केंद्र ने जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम भी लाया, जिसने तत्कालीन राज्य को लद्दाख और जम्मू और कश्मीर के दो केंद्र शासित प्रदेशों में बांट दिया। पीपुल्स कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष सज्जाद गनी लोन ने कहा कि 5 अगस्त कश्मीरी लोगों के पूर्ण रूप से अशक्तीकरण की याद दिलाता रहेगा। लोन ने एक्स पर पोस्ट में लिखा-पांच साल बाद भी कोई निर्वाचित विधानसभा नहीं है और स्थानीय लोगों को अपने मामलों को चलाने का कोई अधिकार नहीं है और दुख की बात है कि देश में इतनी शक्तिशाली आवाज़ें नहीं हैं जो यह सवाल उठा सकें कि जम्मू और कश्मीर को इस तरह के अपमानजनक अस्तित्व के लिए क्यों चुना गया है।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव : 'आप' का ऐलान, मुंबई की सभी 36 सीटों पर चुनाव लड़ेगी पार्टी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव लड़ेगी और मुंबई की सभी 36 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। इसकी घोषमा पार्टी नेता प्रीति शर्मा मेनन ने सोमवार की। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, उन्होंने यह भी कहा कि अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली AAP विपक्षी INDI गठबंधन का हिस्सा थी, 'गठबंधन लोकसभा चुनावों के लिए था और राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ रहना जारी रहेगा'। आप नेता ने आगे कहा कि आम आदमी पार्टी मुंबई की सभी 36 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। महाराष्ट्र के बाकी हिस्सों में हमारे सहयोगी और स्वयंसेवक सक्रिय हैं और तैयारियां जोरों पर हैं। उन्होंने कहा कि आप एक राष्ट्रीय पार्टी है जो केजरीवाल के दूरदर्शी नेतृत्व में एक जन आंदोलन से उभरी है और अब दिल्ली और पंजाब में सत्ता में है, जबकि गोवा और गुजरात में इसके विधायक और सांसद हैं। उन्होंने कहा, केवल 10 वर्षों में, AAP ने विकास के 'दिल्ली मॉडल' का प्रदर्शन किया है, जिसके तहत सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, पानी और बिजली मुफ्त प्रदान की जाती है और वह भी बिना भ्रष्टाचार और बिना कर्ज के। उन्होंने कहा कि अगर दिल्ली और पंजाब कुछ कर सकते हैं, तो यह आम आदमी पार्टी की स्वच्छ राजनीति और नई राजनीतिक संस्कृति के कारण है। उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान भाजपा-शिंदे सेना के नेतृत्व वाली सरकार में जन कल्याण के लिए कोई राजनीतिक इच्छाशक्ति नहीं है और इसके बजाय वह थोक भ्रष्टाचार में व्यस्त है क्योंकि उन्हें यकीन है कि वे सत्ता में वापस नहीं लौटेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा महाराष्ट्र और मुंबई विरोधी पार्टी है, जबकि एकनाथ शिंदे सरकार के पास जन कल्याण के लिए समय नहीं है और वह सरकारी खजाना लूटने में व्यस्त है।

योगी सरकार का नजूल संपत्ति बिल लाएगा भूचाल: बीजेपी सांसद

–गोंडा 70 फीसदी नजूल की जमीन पर बसा, आगरा, अयोध्या का भी यही हाल

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी की योगी सरकार के नजूल संपत्ति बिल को कैसरगंज से बीजेपी सांसद रहे बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि किस मंशा से ये विधेयक लाया गया है। एक लाइन में पूछा जाए तो इस कदम से यूपी में भूचाल आ जाएगा। गोंडा शहर 70 फीसदी नजूल की जमीन पर बसा है। ऐसा ही आगरा, अयोध्या आदि का हाल है।

बृजभूषण ने कहा कि शायद योगी सरकार को यह नहीं पता है कि कितने लोग नजूल की जमीन पर रह रहे हैं। सरकार बस यह बताया गया है कि नजूल की जमीन पर कुछ भू-माफिया और बड़े लोगों का कब्जा है और उससे मुक्ति दिलाई जाए। उन्होंने कहा कि वह मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने जनभावना को समझा और इस नजूल संपत्ति बिल को सेलेक्ट कमेटी को भेज दिया। पूर्व बीजेपी सांसद ने यह भी कहा कि बड़े-बड़े मंदिर भी नजूल की जमीन पर बने हैं। इस तरीके से तो एक नहीं हजारों मंदिर टूटेंगे। गोंडा शहर तो 70फीसदी नजूल की जमीन पर बसा है। आगरा, अयोध्या जैसे शहरों का भी यही हाल है।

बता दें कि पूर्व बीजेपी सांसद बृजभूषण सिंह ने यह बात सौभागपुर में पत्रकारों से कहीं। उन्होंने कहा कि इस बार कांग्रेस को थोड़ी सी सीट ज्यादा मिल गई हैं, लेकिन यह राहुल जी की काबिलियत पर नहीं मिली है, कुछ समीकरण ऐसे बने तो मिली। अखिलेश जी को कांग्रेस से हटा दीजिए तो राहुल गांधी कितने बड़े योद्धा हैं सबको पता है। जो खुद बैसाखी पर टिके हुए हैं, वह आज चक्रव्यूह तोड़ने की बात कर रहे हैं। यह लोग मुगालते में हैं। इन्होंने ही कहा था कि हिंदू हिंसक होता है। आने वाले समय में यह बड़ा मुद्दा बनेगा। हिंदू हिंसक नहीं हो सकता, ये बात राहुल जी के वामपंथी साथी लिखकर उन्हें देते हैं।

गौरतलब है कि योगी सरकार नजूल संपत्ति पर नए बिल को लेकर घिर गई है। इसका बिल यूपी विधानसभा में तो पास हो गया था, लेकिन अगले ही दिन विधान परिषद में अटक गया। अटका भी सिर्फ विपक्ष के कारण ही नहीं, बल्कि खुद बीजेपी विधायकों ने भी इसका विरोध किया था। अब इस बिल को प्रवर समिति के पास भेजा गया है। अब प्रवर समिति की रिपोर्ट आने के बाद ही इस पर कोई फैसला हो सकेगा।

'किसानों के खून से सने हैं कांग्रेस के हाथ', राज्यसभा में बोले शिवराज, मुझे छेड़ो मत, मुझे छेड़ोगे तो छोड़ूंगा नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्यसभा में आज केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसानों पर किए गए अत्याचारों को लेकर कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। आंकड़े बताते हुए शिवराज ने कहा कि जब यही कांग्रेस अलग-अलग राज्यों में सत्ता में थी तो किसान मारे गए। 1986 में जब बिहार में कांग्रेस की सरकार थी, तब गोलीबारी में 23 लोग मारे गये थे। 1988 में इंदिरा गांधी की पुण्य तिथि पर दिल्ली में 2 किसानों की हत्या कर दी गई थी। उन्होंने कहा कि 1988 में उन्होंने मेरठ में किसानों पर फायरिंग की और 5 किसान मारे गये।

शिवराज सिंह चौहान यहीं नहीं रुके। उन्होंने आगे कहा कि 23 अगस्त 1995 हरियाणा में इनकी सरकार ने गोली चलाई और छह किसान मारे गए। इसी तरह 19 जनवरी 1998 को मुलताई, एमपी में किसानों पर गोली चली कांग्रेस की सरकार थी, 24 किसान मारे गए। उन्होंने साफ तौर पर तंज भरे लहजे में कहा कि मैंने किसी को छेड़ा नहीं, लेकिन जो छेड़ेगा उसे छोड़ेंगे भी नहीं। उन्होंने आगे कहा कि हम किसान सम्मान निधि पर चर्चा कर रहे थे। कांग्रेस ने किसानों को सीधी मदद की बात तो की लेकिन प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि जैसी योजना कांग्रेस ने कभी नहीं बनाई। ये योजना हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बनाई।

अपना हमला जारी रखते हुए कहा कि वे (विपक्ष) नहीं समझेंगे लेकिन छोटे किसानों के लिए 6000 रुपये की राशि मायने रखती है। उन्होंने कहा कि इस किसान सम्मान निधि के कारण किसान आत्मनिर्भर हुए हैं, किसान सशक्त भी हुए हैं और किसानों का सम्मान भी बढ़ा है। वे (विपक्ष) किसानों का सम्मान नहीं देख सकते। उन्होंने कहा कि मैंने देश के सभी प्रधानमंत्रियों के भाषण पढ़े, पर कांग्रेस के प्रधानमंत्रियों की प्राथमिकता में कभी किसान नहीं रहा। जो दिल में होता है, वही जुबान पर आता है। कांग्रेस के दिल में किसान नहीं है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि मैंने कहा था कि मुझे छेड़ो मत, मुझे छेड़ोगे तो छोड़ूंगा नहीं।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**